

॥ ॐ ॥

॥ श्री हरिहरशरणम् ॥

श्री हरिहर भक्ति रसामृत गीत

भक्ति रस की उत्तम रचना

पूर्वाद्ध

श्री राम कृष्ण रति दाता आरती माला

उत्तराद्ध



मानस-याचि निवारण हारी, हरिहर-रस अमृत पित्र-प्यारी ।
बलिमल नाशक अथ दु ख-तारी, राम नाम पर-नित-बन्धिहारी ॥

श्री हरिहरानन्द सरस्वती करपात्री महाभागाना प्रदत्त भागवताचार्य
पदवी विभूषितेन प० श्री रामलाल शमणा सुतेन श्री बीकानर नरेश राजा गार्गसिंह
जी राज्यातगत रतननगर (बहू) निवासिना वैद्य हरिप्रसादेन निर्मिता ।

सेय

आचार्य कृष्णादत्त शर्मा रमेशचन्द्रेण

सम्पादितः

विभ्रम सम्बत
2011

मूल्य
लागत मात्र योद्धावर

प्रकाशक

आचार्य वैद्य कृष्णदत्त शर्मा, रमेशचन्द्र शर्मा

(एम ए)

प्रथम संस्करण 2000 वि स 2039

पुस्तक प्राप्ति स्थान—

वैद्य हरिप्रसाद शर्मा

नोहरा न 8, निकट पचायती घमंशाला,

धीमगानगर (राजस्थान)

श्री बालकृष्ण इन्दौरिया

गढ के पीछे चूरु (राजस्थान)

श्री प मोहनलाल वासुदेव शर्मा चौमाल"

निकट काली मन्दिर, चूरु (राजस्थान)

श्री प घनश्याम जी मिश्र शास्त्री

रतननगर, (चूरु) राजस्थान

मुद्रक--

गजेन्द्र प्रिन्टर्स

५। रास्ता किशनपाल बाजार,



अखिल लोकपति के पावन चरणों में नत मस्तक सविनय “समर्पण”

विश्वपति कमलापति जगपति, सप्त लोक पति परमेश्वर ।
दीन बंधु अन्तर्दामी, जगदीश्वर ईश्वर लोकेश्वर ॥
बैकुण्ठाधिपति नारायण, विष्णु श्री पति विजुषेश्वर ।
गण्डध्वज मोक्षो के पालक, अनादक दाता विश्वेश्वर ॥
तब पद कमन निद्धावर हो, मैं नित नित जाता बलिहारी ।
फूल समर्पित स्वामी ये, शब्दालङ्कृत हे भय हारी ॥
प्रेम सुगन्ध हृदय मन रजित विकसित कलिया गिरधारी ।
बुद्धि सूत्र म पोकर के नत मस्तक पद हों गलडारी ॥
मुदचित लोकोपिता ! स्वीकृतकर चरण कमल शिर रख देना ।
भवनागर की नौका के बन नाविक प्रभु पर तुम सेना ॥
जो नारी नर गावें उनकी, सब विघ्न बाधा हर लेना ।
काम नाभ दु ख आवि व्याधि, दारिद्र की पराजय हो सेना ॥
तरी वस्तु तुम्हे अपरा कर, होता हय अपार प्रभु ।
मैं भी तरे रोम सख का, शख खण्ड हूँ भार प्रभु ॥
गागुन सम्पदा से ऊँचा सुख, शान्ति मिनी अर सार प्रभु ।
“वच हरि” तब पद मगोजपर, नित जाता बलिहार प्रभु ॥

ईश्वर प्रभु परमात्मा परमपिता लोकेश्वर

जगदीश्वर अखिल कल्याणकारी क

पावन चरणों में नत मस्तक

समर्पित मुमन

* श्री हरिहरशरणम् *

सविनय नम्र निवेदन,

यह हरिहर भक्ति रसामृत गीत निखकर विश्वेश्वरी विश्वेश्वर क पाद पद्यों में समर्पित करके परम सतोप और आनन्द का अनुभव करता हू । जनता जनादन भी परमेश्वर का विराट रूप हैं, जनता भी कभी खाली समय में इसे पढ़ेगी सुनेगी तो भगवान विराट जन पर प्रसन्न होंगे । इस पुस्तक के लिखने से लेकर छपाने तक मुझे आरोग्यता घन सतोप तथा ईच्छित फलों की प्राप्ति हुई तथा पढ़ने से आपको भी होगी एसा ईश्वर चरणों में विनती करते हुए मुझे पूरा विश्वास है । आप अशांत समय में पढ़कर शांति की प्राप्ति करेंगे । कवि न होते हुए भी भगवान का गुणानुवाद कविता में लिखा गया ग्राह्य एवं क्षतय होगा । गुणगाथा श्रीमद्भागवत गीता-महाभारत तुलसीकृत रामायण तथा कुछ अनुभव के आधार पर भी लिखी गई शास्त्र सम्मत है ।

सूर साहित्य, तुलसी साहित्य में यह कविता सूर्य के सामने दीपक दिखाने के समान है पर तु कभी कभी दीपक की भी जरूरत रहती है । ऐसा समझ के सतोपा नन्द का अनुभव करता हू । जैसे सूर्य चंद्रमा शुभ अशुभ अवस्थायों में एक रस रहते हैं वैसे ही यह गुणावली रहेगा । जैसे गाय वन में हरी हरी घास चरने हुए आगे बढ़ती है वैसे ही मानव भी नये नये रसों में रुचि रखता हुआ इस पढ़ेगा तो भी आने की घबराहट समझूंगा । जब बंध, डाक्टर भिन्न, सुत, पत्नी सभी प्रिय बांधव ईच्छा रहत हुए भी सभी कष्ट को बटाने में अममय हैं ऐसी स्थिति में परमेश्वरी परमेश्वर ही शरणागत की रक्षा करने में समर्थ हैं ऐसी सोच के मोह छोड़कर ईश्वर शरण ही ग्रहण करनी चाहिए । वे ही सबसे बड़ा सहारा देते हैं । क्योंकि भगवद्गीता में कहा है हे मनुष्य तैरा काम करने में अधिकार है फल में नहीं है । ऐसा साचें आप आरोग्यवस्था में इसे पढ़ेंगे, सुनेंगे आपको धोखा व पछावा नहीं होगा, ऐसी भरी अलोक्यपति से प्रायना है ।

विनीत

बंध हरिप्रसाद शर्मा

आपाठ वदी 11 वि म 2039

॥ श्री हरिहर रसामृत भक्ति गीत ॥



—: पुस्तक भेंट 'दान' महिमा :-

परमेश्वर सबव्यापक सब में समाया हुआ है। अतः जो सत्ता दान देना चाहता है वह इस पुस्तक का भेंट दान करे। क्योंकि इससे प्रभ प्रमत्त होते हैं और उनके प्रेम प्रसन्नता से इस लोक और परलोक के सब कार्य पूरे हो जाते हैं।

विष्णु रमा शिव रामकृष्ण की,
महिमा वेदों गायी है ।

नाम प्रभाव भागवत गाया,
कलियुग सदा सहाई है ।

राम नाम गा तारी त्रिलोकी,
धर्म शास्त्र में आई है ।

हरि रसामृत गाथा पुस्तक,
दान महान् सचाई है ।

बड़े बड़े मनु ऋषि मुनि आदिक,
नेति-नति वह हार हैं ।

कलियुग केशव कीर्तन से,
मुद होते राम विद्यारे ह ।

मन्त्र उपाय कर हारे को हरि,
देते पूरण सहारे हैं ।

रामकृष्ण भजु विश्वेश्वर को,
“हरि” जगत उजियारे है ।

(श्री रामकृष्णारणमस्तु)

श्री हरिहर भक्ति रसामृत गीत पुस्तक दानदाता की

ईश चरण में प्रार्थना पुष्पाञ्जली

हे विश्वपिता ! हे विश्वमाता ! मैं भी विश्व में आपका बगोटा पुत्रो म न
एक पुत्र हू । पुत्र का कत्रव्य कि माता पिता की समस्त सेवा करे । आपका नाम
प्रेमभक्ति से देने वाले पुत्र पर आप बहुत अनुराग रमते हुए बहुत ही प्रसन होते हैं
आपका स्निग्ध अनुराग जन्म जन्मात्तर प्रक्षय रहे और इस नाम का आपका पुत्र
पुत्रिया म प्रसार हो तथा वे अपना कल्याण करें । मेरी यही कामना है कि आपका
नाम लेने वाले तीनों तारों से मुक्त होकर समस्त सुख एवं ऐश्वर्य को प्राप्त हा ।
तथा आपके नाम म महान् हृद प्रेम हा ।

हे अखिलेश्वर ! हे अखिलेश्वरी मैं तो केवल निमित्त मात्र हू जो कुछ है
आप ही का है आप ही का या आप ही का रहेगा ।

परमपिता परमेश्वर परमेश्वरी ! आप मेरे शीश पर सर्वादा वरदहस्त रख
हुए, प्रसन हा ऐसी आपके चरणों म दण्डवत बिनती है ।

परमेश्वर आप ही का गीता मे लिखा हुआ आशीर्वाद है

सर्वं धर्मान्परित्यज्य मामेक शरणं भ्रज ।

अहस्वा सर्वं पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच ॥

हे पुत्र सब धर्मों को छोड़ मेरी शरण म आ मैं तुम्हे सपर पापा स मुक्त क
रू गा तुम कोई सोच मत करो ।

विश्वेश्वरि—विश्वेश्वर

चरण कमल नतमस्तक

शांति शान्ति !

शुभ शांतिभवतु

शुभ भूया

समस्त देवताओं की नाम मंत्र से पूजा विधि व सामग्री

ॐ गणपतये नम	श्री राधाकृष्णाय नम
ॐ गौर्यादिषोडशे मातृकाभ्यो नमो	श्री लक्ष्मीनारायणाय नम
ॐ सूर्यादिनवग्रहेभ्यो नम	श्री हनुमते नम
ॐ अपापति वरुणाय नम	श्री उमामहेश्वराभ्या नम
	श्री सीनारामाभ्या नम

सबसे पहले आचमन और प्राणायाम करे। सकल्प करे यथा सम्भव स्वस्ति पुऱ्याह वाचन तथा शान्ति पाठ पढे यह विवाह पद्धति चतुर्थीलाल कृत मे पढे वेदीक्त है। उपरोक्त देवताओं की नाम मंत्र से पृथक् पृथक् षोडशोपचार सामग्री से पूजा करे। षोडशोपचार पूजा सामग्री पहले पृष्ठ मे लिख दी गई है। पश्चात् इसके रक्षा विधान करे। यह चतुर्थीलाल कृत विवाह पद्धति मे देखिए। रक्षा विधान मे पूर्ण मे गोविन्द अग्निकोण में गर्दभध्वज दक्षिण म धाराह नऋत मे नारसिंह ऊपर नीचे आगे पीछे पूर्ण पश्चिम उत्तर दक्षिण विंशु भगवान हमारी व सर्वकी रक्षा करे। सपप पर चावल छोडता जावे। फिर अपन तथा यजमान के रक्षा बाघ तिलक करे। पहले देवताओं के रक्षा चढ़ावे। फिर पुरोहित यजमान वधा वे और दक्षिणा भी देवे। यह विधान समस्त देवताओं की पूजा म पहले आता है करना चाहिए इससे कल्याण होता है। फिर आरती उतार कर देवताओं की प्राथना करे।

गणेश प्राथना

ॐ गजान भूत गणादि सेवित कपित्य जवु फल चारु भक्षणम् ।
उमासुत शोक विनाशकारक नमामि विघ्नेश्वर पाद पकजम् ॥

षोडशमातृका प्राथना

ॐ जयती मगला काली भद्रकाली क्पातिनी ।
दुर्गाक्षमा शिवापात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते ॥

सूर्यादिनवग्रह प्राथना

ब्रह्मा मुरारिन्मिपुरान्तकारी भानु शशी भूमि सुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्र शनि राहु केतव सर्गग्रहा शान्ति वरा भवन्तु ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



गणेश मंगलाचरणम्

श्रद्धि सिद्धि प्रदातार षष्ट विघ्न हर परम्
गणेश सर्गत पूर्ण दत्तचित्तो नमाम्यहम् ॥
नमामि विघ्न हर्तार भूपका रुढ शोभनम् ।
श्री गणेश सुखाराध्य नूपुर ध्वनि शोभितम् ॥
धूम्रवेतुगणाध्यक्ष गिरजा शरर प्रिय ।
सर्व मंगल कार्थेषु करोतु मंगल सदा ॥

शिव स्तुति

भवानी शकरो वन्दे सर्व मंगल दामकी ।
राम कृष्णैक भावेन ध्यानात्त्वं सर्वथा शिव ॥

सरस्वती स्तुति

शुक्लाम्बर धरा वीणा बुद्धि सुन्दर दायिनीम् ।
राम कृष्ण रतिर्मे स्यात् एष भक्ति ददातु मे ॥

राम स्तुति

श्यामल मन्द हास्य च सीतया सह शोभितम् ।
राम गगन धरं च पाद पद्म नमाम्यहम् ॥

हनुमान स्तुति

माहति बल बुद्धि च ददातु राम पादयो ।
त्वत् कृपाहि भवेन्नो का तारिणी भवसागरे ॥

सूर तुलसी महिमा

तुलसी सूर शब्देभ्य गहीत्वा मुमनाज्जलीम् ।
अपिता राम पादाभ्या मन सतोप कारिणीम् ॥

गुणग्राहा नर नारी प्रार्थना

गुण ग्राही भवन्नारी नरश्च प्राथना मम ।
हरि कृष्ण गुण नात्वा सर्वासा द्रुटिक्षम्यताम् ॥

विष्णु महिमा

रामस्य गुण गानेन कृष्ण भक्ति प्रजायते ।
कृष्ण राम शिवा चित्त विष्णु भक्ति सदा दद्यात् ॥



धर्मसम्राट श्री स्वामी

करपात्री जी महाराज

सस्थापक

वेद शास्त्रानुसन्धान केन्द्र केदार-

घाट वाराणसी का

शुभाशीर्वाद

श्रीण पातु

श्री हरि प्रसाद वच सादर शुभ कामना

आपका पत्र प्राप्त हुआ, मने आपकी पुस्तक के बतियय पद्यो का अवलोकन करके श्री महाराज जी को बताया एव दो चार पद्य भी सुनाये । जैसे—

जिसने हरि पद प्रेम पिया ।

बलिमल नाशक पुष्प रूप फल अधिव तिहंनि बिया ।

हरि गुण गा जाती समरध्वज परकी जे जगत बिया ॥ 1 ॥

घोर हु तारे आप उषारे धम सुयश घोर धिमा ।

जग की साज हरि हित छाडि सुत मित धन-मौ लिया ॥ 2 ॥

मग रामारे ऋषि मुन्ह के तिन पद मिर रधिया ।

प्रभु पद पवज धान पडे जग झूठे से अधिया ॥ 3 ॥

लोक कीर्ति परतोक धर्म की सम्वुज राशि धिमा ।

“बैद्य हरि,, की हृदय मढी में बसते रामगिया ॥ 4 ॥

इत्यादि श्रवण कर श्री महाराज जी गद्गद हो गये और कहा कि,

अत्यन्त सम्भुन है । अत इममे हमारा पूर्ण शुभाशीर्वाद है ।

दिनांक २८ ११ ८१

श्री महाराज जी व.

शरण गिरजग

श्री हरि हर भक्ति रसामृत गीत की अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
पुस्तक नाम गुण	1	वृष्ण विनय प्रेम	73-103
पुस्तक मिलने के पने	2	राधा वृष्ण प्राथना	104-106
विश्वेश्वर सम्पण	3	ब्रह्मविष्णु महेश्वर गीत	107
विनम्र निवेदन	4	पञ्चतरि स्तुति	111-112
पुस्तक भेंट (दान) महिमा	5	काली लक्ष्मी सरस्वती गीत	113-119
भक्त प्राथना	6	शिव पार्वती विनय	120
देवताओं की पूजन विधि	7	दुर्गा ज्योतिषार	120
		सीता प्राथना	121
		राधा प्राथना	122
		गंगा माता गीत	123
मंगला चरण	1-2	लक्ष्मी माना गीत	124
गणपति प्राथना	2-4	विश्व की श्रद्धभुतता	1-5
सरस्वती प्राथना	5-6	ज्ञान दोहावली	126-127
त्रिरूप शिवस्तुति	7	बुद्धिमती नारी महत्त्व	128
सरस्वती विनय	8	ज्ञान दोहावली	129
पार्वती विनय	9	धन की ममता	130
हरि भजन गीत	10-13	ज्ञान दोहावली	131-134
हरि लक्ष्मी प्राथना	14-31	मन विषयन अग्निजगद्	135
हरि भजन गीत दोहा	32-40	जगमुख फाटें बान	135-137
राम दोहावली	40	काल प्रतिभा	138
प्रभु विनय	41-47	ज्ञान दातावली	139-140
राम सौम्या	48	जयपुर दान	141
प्रभु ज्ञान ही द्रव्यबोध	48	ज्ञान मन्त्र गीत	142-143
रामकृष्ण विनय	49-57	विष्णुनामी विष्णु प्राथना	
राम राज्य शोभा	58-72	ब्रह्मदेव, श्री शक्ति	

रामकृष्ण रति दाता आरती माला

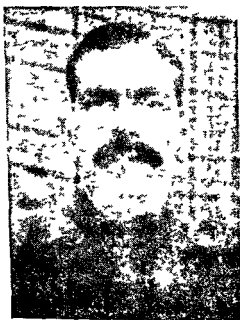
अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
आचमन-प्राणायाम		दशावतार आरती	29
शांतिपाठ-सकल्प		ब्रह्म विष्णु महेश्वर आरती	30-31
विस्तृत षोडशोपचार पूजा		लक्ष्मीजी आरती	32
पंचोपचार पूजा ध्यात		महामाली आरती	33
कपूर-दीप आरती		मीन रूप वाली आरती	34
प्रदक्षिणा पुष्पाञ्जली		गीताराम आरती	35-38
धर्मा प्रायना-याग क्षेम		राधाकृष्ण आरती	39-41
आशीर्वाद यजमान		श्रीमदभागवत आरती	42
पुरोहित आरतीपचाड		हनुमान आरती	43-44
चतुदश सरया आरती		श्रीगामाता की आरती	45
बर्ती ज्ञान आरती पत्र		पञ्चतरि आरती	45
सामग्री	पृष्ठ 1 मे 11	श्रीवद्वीनारायणजी	46
विश्वपति समर्पण	12	श्रीगगामाता आरती	47
मंगलाचरण	13-14	श्रीयमुनाजी आरती	48
गणेशारति	15	श्रीनुलसीमहारानी आरती	49
नवग्रह षोडशमातका	16	सब अवतार आरती	50
वर्ण सरस्वती	17	श्रीबालकृष्ण आरती	51
विश्वनाथ आरती	18-21	श्रीगणेशादि सब-	
पार्वती शंकर आरती	22	देवताओं की पुराणोक्त स्तुति	52
गौरी स्तूति	23-24	भूपतिश्रीगगामिहजी प्रसशा	53
बिराट विष्णु आरती	25	गन्धकर्ता परिचाय	54
सब देवताओं की आरती	26		
लक्ष्मी कांत आरती	27		
सत्यनारायण आरती	28		

श्री गोलोकवासी परम भागवत



पूज्य चरण श्री स्वामी करपानी जी महाराज द्वारा चूह (बीकानेर) की विशाल सभा में "भागवताचार्य", पदवी से विभूषित प रामलाल जी शर्मा। जिनकी स्मृति में रचकर यह परमेश्वर यश प्रभुचरणों में समर्पित है जन्म वि स 1951 माघ शुक्ला ८ तथा गोलोकवास द्वि आश्विन शुक्ला ८, विक्रम सम्बत् 2020



पूज्य पिताजी राम-कृष्ण शिव-हनुमान के भक्त थे, बाल्यावस्था में आपकी सत्संगति का प्रभाव मेरे मन में बढ़ता से स्थिर हो गया। अतः परमेश्वर की कृपा से मैं यह पुस्तक लिखने को समर्थ हुआ।

रचयिता
वैद्य हरिप्रसाद शर्मा

॥ श्री गणेशायनम ॥

॥ श्री लक्ष्मीनारायणाभ्या नम ॥

श्री विश्वेश्वरी विश्वेश्वर चरण कमलेभ्यो नम

हरिहर भक्ति रसामृत गीत

मगला चरण

श्री गणनायक गणपति विघ्नेश्वर हे ईश ।
मन वाञ्छित करना प्रभो आज नमत हू शीश ॥
श्री विघ्नेश्वर सुत उमा भजु मन बारम्बार ।
आदि पूज्य यह देव है सबके प्रिय करतार ॥
चन्द्रभाल गिरिजातनय को सुमिरू में आज ।
विघ्न दूर करना प्रभो रखना मेरी लाज ॥

द्रुतविलम्बित छन्द

गणपति गिरिजा सुत आजहि,
करत हू तब कोमल पादहि ।
विनय स्नेह सप्रेम प्रणामहि,
तव कृपा नित मगल कामहि ।
मधुर प्रेमभरी विश्वेश की,
गुण कथा जगदम्बा साथ मे ।
नित नई भवतु हिय चित्त म,
“हरि” की प्राथना यही एक है ।

श्री शारद माता विनय दास “हरि” की आज ।
मदमति को दूर कर ईश प्रेम के वाज ॥
श्री शारद जगदम्बिके वाणी की शिर मौलि ।
सुमति तीव्र मोहि दीजिए सुदर पद की बोलि ॥
श्री शारद मातेश्वरी करहु कृपा अब आन ।
शक्ति प्रभु गुण गान की दो सेवक माहि जान ॥
हे अम्बा विश्वेश्वरी तुम जग की प्रतिपाल ।
धी वाणी निमल मुझे देकर करो निहाल ॥

गुण गाऊ श्रीकृष्ण के सहित राम मैं आज ।
 रम्य सुलालित पद बने पूरा होय सब काज ।
 हाथ जोड़ विनती मेरी प्रेम से हो स्वीकार ।
 कृपा तुम्हारी चित्त प बनी रहे हर बार ॥
 अकडर दानी महेश की करू व दना आज ।
 उमा सहित रक्षा करें राम कृष्ण के काज ॥

छन्द द्रुतविलम्बित

विमल बुद्धि प्रदायक मारति ।
 बहु मुखी विद्या बल दीजिए ॥
 अचल राग श्री राम के पाद में ।
 भवतु-बारम्बार प्रणाम है ॥

तुलसीदास गुरु सूर तुम माय मेरे कवि राज ।
 तुझ निर्मित शब्दावली रचि पद मुद मैं आज ॥
 'गुरुवर तुलसीदास को बारम्बार प्रणाम ।
 जिनकी अनुकम्पा रचे सियाराम गुण ग्राम ॥
 चाहत धन मैं मान हूँ ही जिसमे आनन्द ।
 गुण गाऊ सुप्रसन्न हो सदा सच्चिदानन्द ॥
 प्रिय विनम्र निवेदन एक है,
 कवि शिरोमणि दशक वृद्ध से ।
 पद रचे विन कविता ज्ञान के,
 गुण प्रभु के जान निभाईये ॥

श्री गणपति प्रार्थना

गणपति सु पीयूषपाणि भजतुरे नित माददम् ।
 शिव मुत गिरिजा प्रिय नन्दन भवानि हि सुकृतदत्त ॥
 मुर नायक जग वदिन परमु कर मधु मादकम् ।
 हरत बाधा क्लेशतम अध विघ्न अप्रिय तोदकम् ॥
 लिख महाभारत पुराणहि यास मुद आनन्ददम् ।
 विश्व ज्ञान प्रकाशक मन मधुकर मकरन्ददम् ॥
 मुदमोद मगनकारक विद्या निधि सद्बुद्धिदम् ।
 हिय अम्बुज मुविकाशक प्रिय ज्ञान निमल नीन्दम् ॥
 "वैद्यहरि' धी हसिनी तव पादपद्म सरोवरम् ।
 भदन मुक्ता करनितोल शात दशन सुन्दरम् ॥

श्री गणेश स्तुति

सूय सम पूजित जगत के विघ्नहारी विनायकम् ।
 प्रथम मंगल काय मे नित नेह भज वर दायकम् ॥
 गजवदन-त्र्योमल हाथ शोभित परशु मोदक लायकम् ।
 सूड सर्पाकार दिव्य है नयन नित फल दायकम् ॥
 उदर लम्बा भाल हिमकर माल गल महाकायकम् ।
 मुख एक दत्त मु गणपति मकीतने सुर गायकम् ॥
 चढत भूपक राज ऊपर प्रभु वृषा गणनायकम् ।
 रिद्ध सिद्ध शुभ चक्र डोलत सेवित बहु पायकम् ॥
 "वैद्यहरि" हिय दु ख पिशाचिनी भरती नाम मुसायकम् ।
 विघ्न घघतम नाशकारी कलिपु नित मन भायकम् ॥

गणपति स्तवन

प्रेम भरे मन गणपति गावो-चारा पदारथ कर तल पावो ।
 रिद्धि सिद्धि दाता गजमुख हैं-पूजन से हार्वं सब सुख हैं ॥
 शंकर प्रिय सब जगवदन है-दाता सुख गिरिजा नदन हैं ।
 एक दत्त लवोदर रूपा-चन्द्र भाल विघ्नेश्वर भूषा ॥
 हाथ परशु मोदक की शोभा-नयन देख दशन का लोभा ।
 भूपक वाहन सूड विराजे-मन मंदिर भारती नीराजे ॥
 कलि मे शीघ्र विनायक राजा-प्रेम प्रसन हो सारे काजा ।
 गावे "वैद्यहरि" शिर भोवे-रहहु हृदय कुटिया प्रिय मोने ॥

गणपति महत्व

आदि पूज्य गणपति गणराज । टेर

एक समय जब देव सभा मे पूज्य कौन हो प्रथम समाज ।
 प्रश्न उठा, श्री विष्णु बोले देवे अण्ड परिश्रमा भाज ॥
 जो कोई समुख हो मम पहले वही प्रथम पूजित हा आज ।
 शीघ्रगामी वाहन सब सुर चढ चले प्रदक्षिण विधि के वाज ॥
 पाकर मदमति वाहन का गणपति मोचत रहे त्रिराज ।
 अतिदयालु श्रद्धाण्डाधिपकी करहु परिश्रमा कहि ऋषिगण्ड ॥
 प्रथम परिश्रमा स्वामी चराचर की कर गणपति नृण मुमात्र ।
 हुए देव सब आय पराजित विघ्नराज को या मिरगात्र ॥
 'वैद्यहरि' श्री गौरी तनय की कर जात्र विश्वी-शत्रु भाज ॥

गणेश की महिमा

श्री गणपति लबोदर को मनु ! निशिदिन रटना हितकारी ।
 आदि पूज्य हो मम प्रिय नन्दन कर्तृति रहति यह शिव प्यारी ॥
 परम नेहमे रन निज सुत को दान करन भी सुविहारी ।
 बोली द्वारपान तुम रहना सावधान सब पटिना री ॥
 शबर आ निरान क्षण म-र-गृह प्रवेश का तयारी ।
 रोका गणपति ने शम्भु शो-वाटा शीश श्री त्रिपुरारी ॥
 पैठे जह श्री गिरिजा नहाव दन आभित हुई भारी ।
 गिरिजा रुठ कात स बोली क्या मारा सुन भयहारी ॥
 शीघ बुभावो निमी विधि से मम आधि की चिनगारी ।
 शिव ने जावर जगज रोजा पुत्र पीठ दे गज नारी ॥
 बँठी थी तब उसके सुत का शीश लय श्री मन्गारी ।
 आकर जोडा गज आनन से गौरी तनय का शिर भारी ॥
 कर प्रसन श्री गौरी को शिव पुन स्नह पे बलिहारी ।
 आदि पूज्य हो तब सुत सुभगे यह सब जग म यशकारी ॥
 सवट कटे भजे हा वे सिद्धि सफन मनोरथ सबकारी ।
 "हरि" कह ह्ये गय हर प्रसन श्रीगिरिजा गणपति दु यहारी ॥

गणपति प्रार्थना

जय जय गणपति पूजित मुरमति मदा अमनमति नानधरम् ।
 आनन्द सिन्धु मस्तक इन्दु मलयज विन्दु परशु वरम् ॥
 गजमुख आनन पार्वती नदन पूजित मुनिजन मदा वरम् ।

जय जय गणपति ॥

वदित नित जग काय प्रथमपग-आनन्द सब मग नित्य वरम् ।
 मगल दाता बुद्धि विधाता सब नर आता पुन शिवम् ॥
 मुद मोदक फल प्रेम भक्ति जल हरति करीमल लबोदरम् ।

जय जय गणपति ॥

ऋद्धि सिद्धि कर पूजित गणधर विघ्न क्लेश हर हजा नरम् ।
 मूपक वाहन नित्य मोदमन देन भाक्ष धन भजहु वरम् ॥
 जयति विनायक सब मुख दायक-सुरगण गायक प्रियसुरम् ।

जय जय गणपति ॥

प्रथम विजय पद तरति काम नद हरति मोहम्द द्वेष जरम् ।
 आगु प्रदाता विद्यामाता सबके पाता विघ्नटरम् ॥

जय गण स्वामी पदहु नमामि नित अनुगामी हरहु भयम् ।

जय जय गणपति ॥

गणपति पद रज अय काम तज सदा प्रेम भज नेत्र ढरम ।

“वैद्य हरि” धरहिय मति उर कर सदा सुखकर मोद भरम ॥

गणपति पावन सदा सुहावन सब मन भावन सुख परम ।

जय जय गणपति ॥

सरस्वति प्रार्थना

शारद माता भारती भूषण-नाशत सदा अबुद्धि दूषण ।

सवक वाणी गुण गण गावे-सुयश पताका तव पहराव ॥

अमर बली तव दशन बोई-जापर कृपा मुर्दाहि तव होई ।

मम मानस की अघतम हारी- भवभय हरि, चद्रिका उजारी ॥

मुक्ति ब्रह्म सुख की ब्रह्मानी-शभु हरि अज महिमा बखानी ।

हाय बीण पुस्तक की शोभा- मन अलि चरण कमल म लाभा ॥

स्फटिकमाल शुक्लाम्बर धारिणी-पद्मासन स्थित दुख विदारणी ।

हृदयागण मम आन विराजहु- तव मुद वुमति दरिद्रता भाजहु ॥

देह उदधि मे विकसे मोती-चुगहु हस । शारद, मम ज्योति ।

हृदय यली है सुशोभित मेवा-चढे सरस्वती हो नित सेवा ॥

धूप दीप कपूर थाल भरि-करत आरती मुदहि “वैद्य हरि” ।

अष्ट अ ग सह नमत चरण मे-बिमलमति दो पडा शरण म ॥

आरती सरस्वती की

जयति सरस्वती बुद्धि ईश्वरी ।

सुर नर मुनि जन की हृदयश्वरी ॥

समति दाता बुद्धि विधाता ।

तू जगमाता मंगल दाता ॥

प्रथमारभे तव गुण गाता ।

मममति वधय अयि अखिलेश्वरी ॥ टेर जयति ॥

ऋषि मुनि सुर नर तुम्हें मनावें

अपना सफल मनारथ पावें ॥

प्रिय गुण गावे हिय हरपावें ।

तव पद पूजित सदा सुरेश्वरी ॥ जयति

बीणा पुस्तक हाथ सोहती ।

धवलाम्बर पदमासन रोहती ॥

हस वाहिनी मम मन मोहती ।

पदरति हो तव ह मातेश्वरी ॥ जयति

बुद इदु सम घबलित देहा ।

कर वर दण्ड देख मनु नेहा ॥

रदाय मामहि-निबसतु गेहा ।

ब्रह्माच्युत शिव हृत्परमेश्वरी ॥ जयति

अद्य जगत म व्यापक रूपा ।

तव चरणे मम भक्ति अनूपा ॥

कर उद्धार पडे भव कूपा ।

दे दशन अब मात सुरेश्वरी ॥ जयति

धूप दीप कपूर की वाती ।

मेरे मन मंदिर मे भाती ॥

तव पूजा हिन बुद्धि सजाती ।

स्वर माधुरी मे हे विश्वेश्वरी ॥ जयति

तव मुद "बंध हरि" ने गाई ।

कीही दूर हृदय की काई ॥

नैन कलेवर भक्ति छाई ॥

वसतु हृदय मम सदा महेश्वरी । जयति

सरस्वती गीतिका

जयति सरस्वती हरु मम कुमति देहि तान गति भयहारी ।

जय मा शारद बुद्धि विशारद गावत नारद वय सारी ॥

अमर गुणावली पद रज मन अली विकसित हियकली मुदभारी

जयति सरस्वती ॥

वीणा पुस्तक शोभित हस्तक दीपित मस्तक तम-जारी ।

हृ मम जडता मिथ्या ममता दानव समता सुर वारी ॥

वाहन हमा विश्व प्रशसा टरु अप तमसा दुख भारी ।

जयति सरस्वति ।

अमलज्ञान निर्मल मानं हरु अज्ञान महामारी ।

दिव्य चरित आत्म भरित शुभदात्वरित हियचारी ॥

जय जय मोता बुद्धि विघाता सुर नर नाता भव भारी ।

जयति सरस्वति ॥

म्वित पन्मासन धवन इदु तन व्यापक जनमन जय मा री ।

देव त्रिपूजित सुर नर वन्ति नित अभिनदित अघटारी ॥

हरि हर भक्ति रसामृत गीत पहला विश्राम)

जननी रक्षय अरिदल भक्षय टरहु रजक्षय कलि-सारी ।
जय जय सरस्वती ।

धिपणा स्वामिनी प्रभु अनुगामिनी चेतना दामिनी नम भारी ।
“वैद्य हरि” नत सदा पाद रत हरहु वृमतिमत मम सारी ॥
जन मन मंदिर प्रभु गुण सुन्दर यही सुभगवर धी गारी ।
जयति सरस्वती ॥

निरूप शिव की आरती

ॐ जय शंकर स्वामी ।

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर हो अंतर्यामी । डेर
आदि सृष्टि के तुम चतुरानन हो रचने हारे ॥
दानवगण वरदान दे सुर उलभन डारे । जय
मृष्टि पालन पोषण से तुम विश्व रूप स्वामी ॥
सुरगण जीव चराचर सब हैं अनुगामी । जय
प्रलय काल के जग सहर्ता कालरूप घारी ॥
पाप पुज का क्षय कर सत्पथ सचारी । जय
अभ्युत्थान घम का करके लेते तुम अबतार ।
सत सुरक्षा-दुष्कृत हरते वसुधा भार । जय
तुमही चराचर और सुधाकर हो तमहारी दिनेश ।
अनोत्पत्ति जग वर्षा करने हारे सुरेश । जय
थोड़े तप से शीघ्र कृपालु देते तुम वरदान ॥
सुख सम्पत्ति इच्छिन फल करते हो धनवान । जय
बेप आपका सदा उदासी रूप है हृष्य भरा ॥
अ तकरण से नमता वह भव कूप तरा । जय
धूप दीप कपूर हृदय मन घुड सदा गावे ॥
घम भय सत्काम की मोक्ष सिद्धि पावे । जय
वैद्य हरि भवदीय चरण मे प्रेम से पावा धोक ॥
कर पाया आनंद है चंद्र चकोर बिलोक । जय

शंकर स्तुति गीतिका

भजु शिव शंकर गिरजापति हर काम जनित ज्वर मदा टरम्
शिव गगाधर छवि डमरू कर तीन नयन कदप जरम् ॥
जटा विशाल हिमकर भाव शृत हनाहन पान गरम् ।
भजु

नयन मनोहर गले फलीधर मुडमाल नर शूल धरम् ।
विष गल भूषण कलिमल दूषण अधतम चूपण शम्भु भवम् ॥
सौम्य शक्ति हितकारक सष्टि भक्ति वष्टि प्रभु पट्ट वरम् ।

भजु शिव शंकर ॥

मस्तक देखा मलयज रेखा भस्मित बेया भक्ति भरम ।
राम ध्यान मुख दाता कलिसुख टारत भव दु ख महानरम ॥
अशन धतूरा पापहृ दूरा योगे शूरा शिवहृ परम ।

भजु शिव शंकर ॥

कटि बाधवर सदा शिव शंकर उमा रमणवर मोद करम ।
नदी बाहन मुनि मन भावन कलियुग पावन पोत तरम ॥
सुरगण साधक बाधा बाधक नानहृ भ्राजक विश्वनरम ।

भजु शिव शंकर ॥

जयति महेश्वर जय शिव शंकर कथहु सुखकर सत्य चरम् ।
वैद्य हरि हिय बसहु शिवा पिय दातु प्राण जिय पूज्य हरम ॥
"पशुपति" शंकर भाग्य उमावर जय जय हर कह मधुर स्वरम ।

भजु शिव शंकर ॥

सरस्वती विनय

जयति मातु सरस्वती मम बुद्धि मोद सदा करो ।
शुभ ज्ञान देकर के हमे अज्ञान तम दु ख अधहरो ॥ जयति
मन बुद्धि हिय तम आवता रजनी की तुम हा चांदनी ।
पश्य तव पद मन प्रफुल्लित रूप शशि छवि सचरो ॥ जयति
दुगुण अशुभगति अवगुणो की नाश हारी खान हो ।
विजय इन्द्रिय सामन कुरुमम जीव विषयन म जरो ॥ जयति
देश आय की मातु हो तुम हस बाहिनी भुक्ठु घर ।
राष्ट्र भारत की अवनति उन्नति पथ माह धरो ॥ जयति
जग जनित मिथ्या कपट अरु माह माया काम की ।
हरतु नित्य बरानने गुण जान प्रभु को हो चरो ॥ जयति
धवल हार वस्त्र शोभित करती वीणा मधुरवन् ।
वरदायिनी स्थित शतपद्मा जान भूषण स्मृति धरो ॥ जयति
वदिता शिव ब्रह्म अच्युत- जाडय ताप सुदीनता ।
हरतु नित अमनानने, पद भक्ति निभर नित भरौ ॥ जयति
विभुव तव अनुकम्पया फिरते हैं जो उमत्त वत् ।
नाश कर उनकी कुमति वरदान शुभमति का करो ॥ जयति

घी घति स्मति चचरीक के आज मन अनि ह्य है ।
 पान कर मकरद चरन, मत्स्य से भी नहीं डरा ॥
 विपुत्र गुण गाथा सुरसरि बहतु नित्य सुमगना ।
 हरि बँध आत्मा मदिरे तव प्रेम सुदर है परो ॥ जयति

पावती विनय

जगत अम्बा श्री अपरना नारी की सौभाग्य दा ।
 पूजिता इस जन्म देनी लोक सुख अरु सम्पदा ॥
 जनक तनया की सुपूजा रामबरटरी आपदा ।
 मन हृदय अति प्रेम पद कुरु राशि दायिनी सुखदा ॥
 रूप बहुविध घर ख्वारे मङ्गली सुर तर मदा ।
 कलिपु शुद्ध कलेवर भजु मोक्षदा सब कामदा ॥
 सिर मुकुट सौभाग्य विन्दु मजुपद आन ददा ।
 छवि सुकोमल विश्वमाहनी नारीपु पति प्रेमदा ॥
 मिह वाहन रक्त पटलन कणयो मणि सबदा ।
 दिव्य मंगल आवृति गल भूपण शुभ अ गदा ॥
 पावती रद्राणी गौरी चडिका शिवा मोक्षदा ।
 वैद्य हरि हिय मदिरे वम नानभक्ति रु शमदा ॥
 पद कमल वन भ्रमरी मालु-आई लय कालहु गदा ।
 भव मन धो रक्षा करा प्रिय दशना मा नमदा ॥
 तव गुण उजागर हृत्पटन मम वाणी भवतु प्रियवदा ।
 शील गुण युत पति सुसवा मन वचन गूह सुमतिदा ॥
 मन कौमुदी की चादनी प्रियवावनी हिय पत्तिदा ।
 तम अघ पखेरु उडावनी विद्युन समा दीप्तिरदा ॥
 सुव्रमयी जग की हो यात्रा तव पद स्वच्छन्ददा ।
 नारी अनिनी की मुधा हा नित्य मुद मकरददा ॥

भजन हरि चरण ध्यान

मन धर हरि चरणन का ध्यान । टर
 भ्रमर ध्यान मे मृतक कीट म कर जीव प्राज्ञान ॥
 अजामीन तर गया जया से मुनारायण मान ।
 शबरी मुक्त भइ बारन ते प्रेम-नी की पहिचान ॥

सकट मोचन जन्म जन्म के हरि पितु मातु समान ।
 गोपी निमल प्रेम सुधापी बिया जन्म कल्याण ॥
 जसुमति गोद पिला हुई धन धन पाया अनुपम ज्ञान ।
 "बैद्य हरि" बलि हारी चरण पे पाई ज्यो बचन गान ॥

अग्रिया देस—भजन

अग्रिया देस हरि के रूप । टेर
 सजल हुई प्रेमामत पीकर सुंदर गिरिधर भूप ।
 भपकी पलकों रूप माधुरी रस के मध्य अनूप ॥
 तपित न हाती सति नयना की ज्या तृष्णा का रूप ।
 "हरि" भएत यी ही पीती रह ईश सुधा की सूप ॥

भजन

सुना काना स हरि गुण गान ।
 जाके सुन ते भव सागर से तरता जीव महान ॥ टेर
 मृग शाबक सुन वशीभूत हुए सुंदर हरि बखान ।
 दिव्य सपथी भुग्ध सदा हा हरि गुण सुन कर कान ॥
 ऐसे दीन दयालु सुन हो जड चेतन पाखान ॥
 "हरि" करुणा सागर को पाक तज तटस्तान वान ॥

हरि प्रार्थना

मन ! गृह का पालन कर के तुम कुछ घट ईश विचार करो ।
 नहीं दोनो बिन सुख मिलता है यह चित्त म ध्यान सदा ही धरो ॥
 गृह पालन बिन सतन सेवा नहा कुछ घडिया बन पाती है ।
 नहीं ईश के ध्यान बिना शांति इस समझ के भाग मदा विचरो ॥
 इन दोनो का उपदेशक भी वही एक प्रभु अन्तर्दामी ।
 चाह मान न मान अरी सजनी ! दु ख आय सदा सुख जाय जरो ॥
 इस विश्व की गाडी दोनो बिन नहीं कदम भी चलने पाती है ।
 यह माया भ्रम की यथनिका है तुम अंध हटा के सदा बिहरो ॥
 बड़े योगी गृही जे असाय हुए पर पार न पाया दोनो का ।
 सत्कर्म 'हरि' करत रहना इन दोनो से जीव बने सगरो ॥

भजन

मति हार गई उस पावन प्रभु के गुण गाते गाते सजनी ।
 नटी पाया जो पार हुई हैरान गये दिन बीत बहु रजनी ॥

अचरज है आज हृदय मेरे जेहि निगम नेति कह गाते है ।
 बड़े ध्यान प्रेम तप बल से री जो जिन को सदा रिभाते ह ॥
 जल मे नही भीगती भान होत ज्यो कमल पन की सदा अनी ।
 घर ध्यान हृदय मनसा वाचा बैकुण्ठाधिपका काम से री ॥
 गुण गा आनद सदा उपजे कर कठिन हृदय को नम से री ।
 तब हारी मति तब जीत गई है प्रकाशभया हिये दिव्यमनी ॥
 सतीप परम आनद की धारा बहती नित जब रहती है ।
 सुख दु ख गर्मी तपणा बाधा तू आत्मसात् कर सहती है ॥
 "हरि" भव से नौका पार तेरी कर देगें वे ही विश्वघनी ।

हरो हरि भजन

हरो हरि इन अ स्त्रियन की पीर । टेर
 भीरा के आराध्य देव हो सुंदर श्याम शरीर ॥
 सूरदास के सदा इष्ट थे आप बड़े गभीर ।
 अजामील गरिबा न खाई प्रेम नाम की खीर ॥
 द्रोपदी की आपति टाली सभामध्य दे चीर ।
 जब जब सकट पड़े भक्ता पे हरी है सबकी भीर ॥
 महाभारत के युद्ध काल हुए बिन शस्त्रन के वीर ।
 "हरि" के चम नयनो म बहता रह प्रेम का नीर ॥

हमतो प्रभु के भजन

हमतो नित्य प्रभु गुण गावें ।
 नाच नाच बल गान करत सब प्रेम स उहे रिभावें । टेर
 उरकण्ठिन गुण गरिमा उनकी बोल सदा हिय ध्यावें ॥
 मातु पितुहि प्रिय परिजन मन म माद भरे हरपावे ।
 शुक सारिका पीजरनि आगए राम बोल हुतसावें ॥
 ध्रुव प्रह्लाद विभीषण शबरी प्रेम से वीर खिलावे ।
 प्रेम सहित फल के छिनकेरी बिदुराणी के खावे ॥
 "हरि" कह नित तू याद प्रिया । कर सीधे भागे आवे ।

घडीवक्त भजन

घडी पल पल कर युग बीत गया अब ईश का प्रेम हृदय
 नही मिलती जग म सुख शांति जरा गूढ मति से विचार

धनवान जगत म बहुत हाण नहीं तिधन की कोई गिती ।
 मय अनकान पछताय गय रही का-का भी जीवन गुधरो ॥
 मुछ जीवन की अनुम पलातो तरणा म उमर नैव लगा ।
 व अपन आप उवारहिगे या शास्त्रन लग तिनो मगरो ॥
 नाम अमर करत जग म जब दीट लगाना है मानव ।
 जित तप के नाम अमर मानी नहीं, जीव कनेवर माट भरत ॥
 बहु पाप मे तिधि सख्य कर क चाह मान श्री-नाक यश को जा ।
 रहने व पाछे मना-जा ते मति मध्य-अ धेर बनो है गररो ॥
 मैन तो सार निराज है जो जगदीश्वर कहनात हैं ।
 घटी पत्र भर काम सभी तज के, हरि, मुपय ईश्वर निन विहरा ॥

रसना भजन पंचेन्द्रिय ज्ञान

रसना प्रभु गुण मीठा है री अनुभव कर तू थोडा चम क हृदय
 बुद्धि मे दीठा है री ।
 नयन देख हुए प्रेम मगन ज्या कमल अमर मधु चीठा है-री ॥
 कण सुनत कबहु न अघाय मृग भुजग पिरे पीठा है री ।
 ध्राण, चढे प्रभु पद पुष्पन को सूष सदा हरि निष्ठा है री ॥
 स्वभावरति कर्नति से मरा शीतकाल ह बिनष्ठा है री ।
 हरि रमन । त मत्व सहारा पिहू मधु अमर बलिष्ठा है री ॥

हरि गुणगा भजन

हरि गुणगा हिय उपजो पान ।
 गुण ही सार जगत म मुमुक्षी । सदा हात है भान । टर
 गुण गामे सनकादिब योगी नित्य रहत है जयान ॥
 गहरे थल म पठ विश्व के करके दया ध्यान ॥ टेर
 यही अमर धन मानव जनका करे कयो न कल्याण ।
 अनुभव म भर आमारी । देख दु ख अनाम ॥
 सत्पुत्र का दाता जग म अमर नाम समान ।
 माया तप्या उमर गवाई मृना त हरि गुण वान ॥
 अ त समय पछतावा मन म किया न प्रभु गुण गान ।
 समझ हरि गुण गाय "वैद्य हरि सार जन्म का जान ॥

प्रभु भजन

प्रभु का गुणगा के सदा सजनी हिय आनद मेरे उपजत है ।
 देख तेज की रूप माधुरी मन मधुकर बन गूजत है ॥
 उस कमल नयन कमलापति के दिशिवाम विराज रही कमला ।
 यह अविनाशी सब घट वासी भक्तो के हिय विराजत ह ॥
 निराकार साकार रूप घर प्रिय जगदीश कहाते है ।
 जह देखु तह छविरूप बने यह चद्रभानु नित भ्राजन है ॥
 चक्र सुदशन हाथ लिये दुष्टा का दण्ड दिलाते है ।
 आलि ! समदर्शी नही भेद कहू नप रक गेह नितराजत ह ॥
 शख चक्र गदा पद्मधारी सदा साम्य भाव से शाभित हैं ।
 यह ध्यान निरतर जाहि वन मतते बडभागी कहावत ह ॥
 कौनमति से कहू गुणावली रोम रोम प्रभु की शोभा ।
 अखिलानन्द की सुपमा "बैद्य हरि" बलि नितनूतन जावत है ॥

ईश हैं एकादशेन्द्रिय ज्ञान भजन

ईश है हृदय तनी के तार ।
 मनुज कलेवर की सितार म करते है भनकार ॥ टेर
 नयन देख काना से सुन के खीच नाक मभ्रार ।
 जीभ गाव हाथन मिलाव सुर करदे मन म पार ॥
 स्वघ अश्वर घर सितार का जगहित करहु विहार ।
 जह सुनिवे को सघ मिले तह प्रेम से गा हरि वार ॥
 दशेन्द्रियन सह मन नेता को ल निजकर उद्धार ।
 बाज उठे पूरी तनी म निराकार साकार ॥
 सुरत फलवती इन गुणनन की मुदर राग मल्हार ।
 गान कथन से पोत पाप का 'वद्य हरि' हो पार ॥

जगत मे सार भजन

जगत म सार ईश का नाम ।
 घनी निधन सब जन्म मरत है, नाम रहे कुछ याम ॥
 ईश गुणावली गा कर जग मे शेष न रहता काम ।
 प्रभु गुण गाय अमर जीव जग होता, अनुभव माम ॥
 विषय द्रव्य को सार समझकर भूलत आठो याम ।
 लोक बडाई म पलडा गुं देख तुला हिय याम ॥
 जान मदमति छाड़ ईश तज खडे लोभ के घाम ।
 दु ख की आधी चलती हर घर सुनो सुवह श्रीशाम ॥
 भागत देखे भागी सुभागी कम भाग के याम ।
 दु खभव गठरी भार "बैद्यहरि" बटवाता बिन दाम ॥

लक्ष्मीपति जय विष्णु प्राथना

लक्ष्मी पति जय रमापति जय बैकुण्ठेश की नितजय हो ।
 सनकादिक नारद नित ध्यावें शिव मानस हुआ जय हो ॥
 अनुपम मुकुट शीश शोभित छवि चारुतिलक मस्तक राजे ।
 गदा पद्म गुभ शङ्ख चक्रवारी विश्वम्भर की जय हो ॥
 कमल नयन कमलानन के नित वाम भाग साहे कमला ।
 गल बैजतीमाल कण्ठ मे कुण्डल शोभा की जय हो ॥
 नील कमल प्रतिभा है कलेवर ऋषिमुनि ध्यान लगाते है ।
 हसमुख मधु कर धरत शीश पे भक्तजना के नित जय हो ॥
 कबुध्रीव विशाल वक्ष पर दिव्य मणि भलकाय रही ।
 सदा अभयदे शरणागत को सब घटवासी की जय हो ॥
 लम्बित जानु बाहु चारु हं चिबुक अघर और गण्डस्थल ।
 कोटि मदन छवि लाजन हारे शेषशायी विष्णु जय हो ॥
 ब्रह्मा शंकर सप्तलोक के वासी निरंतर ध्याते है ।
 लक्ष्मी चाप रही चरण न का भगुलता घारी की जय हो ॥
 कोटि मूय मम तेज विराजे चन्द्रदव सी शीतलता ।
 शारद सी माधुरा वागी उपजावती हृष हिये जय हो ॥
 धरे विश्वपति मजु हृदय यली तेहि अमर पद पाते ह ।
 ध्रुव दशन दाता जे चतुर्भुज अघिल लोक नायक जय हो ॥

बडभागी ज्ञानी नर नारी वणित छवि मानस मे धार ।
 "वैद्य हरि" हृत्मानस मे जगदीश हरि की नित जय हो ॥
 परमेश्वर भजन राग कसूरी ताल ३ निर्गुण
 परमेश्वर भज नित उठ प्राणी जीवन थोडा है । टेर ॥
 गह प्रबध अरु विषय भोग मे मूल्यवान बीता जीवन ॥
 अबतो कर कल्याण आत्म वा क्यो मुख भोडा है ।
 सुख म दिन वर्षों के बीते पल मे कल की सी यह बात ॥
 काम लोभ इस जीव जगत के बाधक रोडा है ।
 मन उपवन फुलवारी म तू ईश गुणन का बोदे बीज ॥
 फूल खिलें भव तरने के जग सार निचोडा है ।
 मान सरोवर हसा मन को भेजो मोतिन के जह डेर ॥
 "वैद्य हरि" चुग हो सजीव क्यो भ्रम मे दीडा है ।

कलेवर देख भजन

कलेवर देख करहु रे विचार ।

सब शरीर की देख स्वस्थता सुन्दरता आगार ॥
 आख नाक मुख कान देह के प्रति अ ग सजे अपार । टर ॥
 इसी देह को एक रूप लख मोहित सब ससार ॥
 अतर मति से देख सजन यह मास पिड का भार ।
 पृथक पृथक सब अ ग निकालो रख दो मति अनुसार ॥
 जोडत जोडत उमर बीत गई हृदय बुद्धि गय हार ।
 यही सोचकर सार रहित यह एक प्रभु ह सार ॥
 उपजे सग एवत्व दृष्टि से पृथक दृष्टि दू पार ।
 एक दृष्टि म रहता तू कर पृथक दृष्टि आघार ॥
 पल मे बेडा पार करेंगे "हरि" के प्रभु साकार ।

ईश भजन

ईश की माया बनी अपार ।

उमर तप म खोदी सारी क्वट्टु न पाया पार ॥ टेर ॥
 विधि हर श्रुति मुनि ध्यान लगाक गये शेष मे हार ।
 विश्व बना है प्रभु विराट् का रूप हिये तू धार ॥
 जो अनय मन भक्त, रिभाय, उसे रूप अधिकार ।
 अजुन रण म रूप देखकर कम्पित हैं हर वार ॥
 बोला कर प्रार्थना धारो रूप चतुभज सार ।
 "वैद्य हरि" म नयो विराट् विराट् साकार ॥

जगत में सार भजन

जगत में सार ईश का नाम ।
 धनी निधन सब जन्म मरत है, नाम रहे कुछ काम ॥
 ईश गुणावली गा कर जग में शेष न रहता काम ।
 प्रभु गुण गाये अमर जीव जग होता, अनुभव नाम ॥
 विषय द्रव्य का सार समझकर भूलत आठा नाम ।
 लाव बढाई म पलड़ा गुरु देख तुला हिय नाम ॥
 जान मदमति छाड़ ईश तज खड़े लाभ के नाम ।
 दुःख की आधी चलती हर घर सुनो सुबह ओशाम ॥
 भागत देवे भागी सुभागी कम भोग के नाम ।
 दुःखभव गठरी भार "बचहरि" बटवाता बिन नाम ॥

लक्ष्मीपति जय विष्णु प्रार्थना

लक्ष्मी पति जय रमापति जय बैकुण्ठेश की नितजय हो ।
 सनकादि नारद नित ध्यावे शिव मानस हसा जय हो ॥
 अनुपम मुकुट शीश शोभित छवि चारुतिलक मस्तक राजे ।
 गदा पद्म गुभ शङ्ख चक्रधारी विश्वम्भर की जय हो ॥
 कमल नयन कमलानन के नित वाम भाग सोह कमला ।
 गल बैजतीमाल करण म कुण्डल शोभा की जय हो ॥
 नील कमल प्रतिभा है क्लैवर ऋषिमुनि ध्यान लगाते है ।
 हंसमुख मधु कर धरत शीश प भक्तजना के नित जय हो ॥
 कबुध्रीव विशाल वक्ष पर दिव्य मणि भलकाय रही ।
 सदा अभयदे शरणागत को सब घटवासी की जय हो ॥
 लम्बिन जानु बाहु चारु हं चिबुक अघर और गण्डस्थल ।
 कोटि मदन छवि लाज्ज हारे शेषशायी विष्णु जय हो ॥
 ब्रह्मा शंकर सप्तलोक के वासी निरंतर ध्यात हं ।
 लक्ष्मी चाप रही चरण न का भगुलता धारी की जय हो ॥
 वाटि मूय मम तेज विराज चन्द्रदेव सी शीतलता ।
 शारद सी माधुरी धाणी उपजावती हृष हिन जय हो ॥
 घरें विश्वपति मजु हृदय यत्नी तेहि अमर पद पात हं ।
 ध्रुव दर्शन दाता जे चतुर्भुज अखिल लोक नायक जय हो ॥

चडभागी ज्ञानी नर नारी वर्णित छवि मानस मे धार ।
 "बँध हरि" हृत्मानस मे जगदीश हरि की नित जय हो ॥
 परमेश्वर भजन राग कसूरी ताल ३ निगुण
 परमेश्वर भज नित उठ प्राणी जीवन थोडा है । टेर ॥
 गह प्रवध अरु विषय भोग मे भूल्यवान बीता जीवन ॥
 अवती कर बल्यारण आत्म का बयो मुस मोडा है ।
 सुख मे दिन वर्षों के बीते पल मे कल की सी यह बात ॥
 काम लोभ इस जीव जगत के बाधक रोडा है ।
 मन उपवन फुलवारी मे तू ईश गुणन का बोदे बीज ॥
 फूल खिलें भव तरने के जग सार निचोडा है ।
 मान सरोवर हसा मन को भेजो मोतिन के जह डेर ॥
 "बँध हरि" झुग हो सजीव बयो भ्रम मे दौडा है ।

कलेवर देख भजन

कलेवर देख करहु रे विचार ।

सब शरीर की देख म्वस्थता सुंदरता आगार ॥
 आख नाक मुख कान देह के प्रति अग सजे अपार । टेर ॥
 इसी देह को एक रूप लख मोहित सब ससार ॥
 अंतर मति से देख सजन यह मास पिड का भार ।
 पृथक पृथक सब अग निकाला रख दो मति अनुसार ॥
 जोडत जोडत उमर बीत गई हृदय बुद्धि गये हार ।
 यही सोचकर सार रहिन यह एक प्रभु ह सार ॥
 उपजे सग एकत्व दृष्टि से पृथक दृष्टि हू पार ।
 एक दृष्टि मे रहता तू कर पृथक दृष्टि आधार ॥
 पल म वेडा पार करेंगे "हरि" के प्रभु साकार ।

ईश भजन

ईश की माया बनी अपार ।

उमर तप म खोदी सारी क्वट्टु न पाया पार ॥ टेर ॥
 विधि हर ऋषि मुनि ध्यान लगाके गय शेष म हार ।
 विश्व बना है प्रभु बिराट् का रूप हिये तू धार ॥
 जो अनय मन भक्त, रिभाय, उस रूप अधिकार ।
 अजु न रण म रूप देखकर कम्पित है हर वार ॥
 ओला कर प्रार्थना धारो रूप चतुभज सार ।

"बँध हरि" म वसो निरंतर निराकार साकार ॥

कोयल वन भजन

कोयल वन मत प्रभुहि रिभाले जो जग के हैं सजन हार ।
 रूप सुरम्य सुवाणी मधुरा मधुर बने जग के करतार ॥
 शख चन गदा पद्म विराजे बठी लक्ष्मी चरणाधार ।
 शेषशायी प्रभु श्याम तनुज ह मल गोभित है मुक्ता हार ॥
 ऐसी शोभा जगत दर्श की बनी है सुंदर ध्यान विचार ।
 पिक पद्मी विश्वेश्वर गाले गुण गौरव स जो साकार ॥
 माधुरी वाणी सद जग बश बरी सुन प्रभु होव प्रेम अपार ।
 "बैद्य हरि" के भास पिक म सुन मीठी पीहु प्राणावार ॥

मन मराल भजन

मन मराल चल मुक्ता ग्यान जहू प्रभु मान सरोवर है ॥
 माया गुण का मानसरोवर अगम अथाह भरा है ॥
 पाप पुज के भूठे मोती देवत मन उभरा है ।
 परम परख नित गुण के मोती नाना सोच समझ के ॥
 हृदय थली म रस पट्टा चांद प्रेम मुधा का भरक ।
 मोती की पहिचान प्रेम स कर लेना हर वार ॥
 चाखन म फीके कडवे हा पाचन मधुरा धार ।
 मुक्ता गुण गुरभि से निकसित मधुर पयस की धार ॥
 चरण कमल का दास वत्स वन पिवहु स्तन मभधार ।
 अनित्य मोती जोहरी परखे नित गुण मुक्ता दास ॥
 "बैद्य हरि" तो भस्म बनाई गुण मुक्ता की खास ।
 खाय अमर यण इन मोतिन को कई नर हुए निहाल ॥
 मूर तुनसी गुण नानक खाये कबोरा सच्चे टाल ।

ॐ जय अखिलेश हरि-आरती प्रार्थना,

ॐ जय अखिलेश हरि ।

जीवन दाता सुग के सम्पत्ति सबहि धरी ॥ टेर ॥
 व्यापक रहत सब दिन हर पल प्रति जीवन व पास ।
 करत रक्षा निशदिन सहकर सप्रहि त्रास ॥ जय
 मुना निरंतर प्रेम भरी मुद प्रार्थना हम की ।
 आश नहीं पल रहता क्षण म हम दम की ॥ जय
 जो की नित उठ प्रभु का ध्याव प्रेम मना भारी ।
 धन सम्पत्ति सुग देन निशि दिन बनवारी ॥ जय
 प्रभु पर दात दयाल हुए प्रभु जाना तप भारी ।

दीया अमर पद जग मे मुदभये गिरधारी ॥ जय
 तुम हो पूरण काम सदा सब सतन हितकारी ।
 मैं पामर मतिहीन हू सेवक अधिकारी ॥ जय
 मातपिता अपराध सुवन के नित्य क्षमा करत ।
 मात पितु तुम जग के रक्षक हो चरते ॥ जय
 तुम हो मूय प्रकाश चादनी चाद की बन जाते ।
 विषयाधीन जो हाकर स्तुति न कर पाते ॥ जय
 बुरे भले सब जीव तुम्हारे तुम रक्षक इनके ।
 दते दण्ड बमफल बड़े पाप जिनके ॥ जय
 कोयल रूप बनाके मानस नित प्रभु गुण गावो ।
 जन्म जन्म की ऋटिया क्षमा करन आवो ॥ जय
 स्वामी चराचर की यह कीर्ति धवल रूप गावो ।
 "वैद्य हरि" नित मुद हो मन वाञ्छित पावो ॥ जय

तू चकोर (भजन)

तू चकोर मन प्रभु चदा है । तू मधुकर प्रभु मकरदा है ।
 तू चक्का प्रभु रवि छदा है-तू दुःख कद प्रभु सुखकदा है ॥
 तू पापी प्रभु पाप हारी हैं-तू तापी प्रभु ताप हारी हैं ।
 तू दुःख दाह प्रभु शीतलता है-तू दरिद्र प्रभु स्वर्णलता है ॥
 तू राजहंस प्रभु मानसरोवर-तू याचक प्रभु कल्प तस्वर ।
 तू तम निशि प्रभु दिन प्रकाश है-तू सीमित प्रभु सुविकाश है ॥
 तू शोभा प्रभु शोभा खानि हैं । तू कृपण प्रभु अवडर दानि है ।
 तू रचना प्रभु रचना कर्ता,-तू उत्पन्न प्रभु पावनकर्ता ॥
 तू स्वामी हम सेवक तेरे-तू अघहारी हमसे घनेरे ।
 तू आता हम निशिदिन टेरे-तू 'हरि वैद्य' के कर हिय डेरे ॥

मन मधुकर भजन

मन मधुकर मकरद प्रभु के नाम का नित तू पी लेना ।
 फूल खिले मुख कमल नयन म छवि अनुपम उपजावन हार ॥
 सदा सुमज्जित अमर गन्ध का मधुमय मधु हिय घर लेना ।
 पख मूडु अपने फलाकर नित मुख दिग मडराता रह ॥
 जीवन सफल बनेगा तेरो प्रेम की डग दो भर लेना ।
 शोक तथावन छवि मधु मधुका भवन के लगे लगे ले

हर अगनि मकरन्द भरा है जह बँठो तह घर लना ।
छोड़ सग भ्रमरी वा-नी नित भ्रमर मुधा प्रभु पुष्पन हार ॥
'बँध हरि' फिर सदा गंध मधु सू घन गू घत तर लेना ।

प्रभु (भजन) गजत तारा घमाल

प्रभु से प्रेम है तेरा ता थड़ा पार ह्रावगा ।
उसी के नाम का सहारा ल सुख की नीद माता रह ॥
उसे चिन्ता सदा तेरी सुतक बल्ल्याण वायगा ।
तेरे जीवन की विष वाटी हरी है पाप लतिका मे ॥
उसी म सीच विष हारी मुधा बू दे निचोवेगा ।
दशो इंद्री श्री मा से तू उसी के ध्यान म लगजा ॥
तेरे तन घाव भव का जो निरखकर के वो घोवगा ।
तरे सिर बोझ चिन्ता और लगा है घन बमान का ।
'हरि' का भार हल्का कर दहन घन का वा खावगा ।

दीनानाथ प्रार्थना

दीनानाथ कृष्णा निधि स्वामी तुम सबके रखवारे हो ।
श्रापत्काल सात्वना देकर पूज्य देव रत नारे हो ॥
पाप ताप हर दुख दनुज दल भय हर नाम तुम्हारा है ।
कर्मयोग का सदुपदेश दे भ्रजु न की निस्तारा है ॥
तुम्ही दिवाकर तुम्ही सुधाकर तुमही पूज्य हो अग्निदेव ।
तुम्ही ईश तुम पालनकर्ता जग के पूजित हो महिम्ब ॥
पा सबत तुम्हारा प्रकृति जग का सदा रचाती है ।
ज्यो भ्रमरी निर्जीव कीट को ले नीडन मडराती है ॥
खल बामी अघ भरा जीव यह तुम्ही तारन हारे हो ।
मनहू कमल जल पृथक् बि दु मम कर्मभाग रचनारे हो ॥
सुख के दाता तुम्ही विघाता, विष्णु शकर तुम्ही तो हो ।
जग के कर्ता भरता हरता तीन साकपति तुम्ही तो हो ॥
हम पामर डूबे माया मे निक्स नही प्रभु पाते है ।
मग तण्णा सोपान प्रतिदिन ऊचे चढत जाते है ॥
मन बगुला वन नयन बीच जग नदी किनारे भाव रहा ।
भूठ कपट या मीन पाप की घम भक्ति को हाव रहा ॥

मोह सि धु मे डूब रहा तुम पीत जगत के तारन हार ।
 अशरण शरण धम सस्थापक डूबत को नाविक मङ्गधार ॥
 मानस लहरी उथित तरंगे मवत प्रवाह बहाता हे ।
 क्षण क्षण उमरा नित नव यौवन घटी पल प्रतिदिन खाती है ॥
 काम शोध मद गज तुम भृगपति माया डाकिनी के तुम मत्र ।
 मन चकौर के अमर सुधाकर सुमति प्रदाता तुमही सु तत्र ॥
 हार शरण मे आपरी आया रख देना प्रभु मेरी लाज ॥
 "वद्य हरि" के हृदय कमल मह बसहु निरंतर रहहु बिराज ।

प्रभु का रूप भजन-गजल ताल घमाल

प्रभु का रूप प्रभु माया प्रभु सत्र जग समाना है ।
 भक्त प्रह्लाद का प्यारा रहे जड और चेतन मे ॥
 उसी दम खम मे प्रकट उ ह हिरदे रमाना है । टेर
 उसी की देवी माया ने किया जब रूप काली का ॥
 मधु कैटन को मारा था भयकर जग डराना है ।
 प्रभु की धार आना सिर यह माया जग सजानी है ॥
 अघेरी मे पडा विषया की नर तू क्या भुलाना है ।
 अभी तो रात सब बीती हुआ चाहता सबेरा ह ॥
 "हरि" तो हाथ जाड़ेगा बदल जाव जमाना है ।

नास्तिक हमने (भजन) नास्तिक धाद मे आस्तिक

नास्तिक हमन जग म दखे प्रभु को नही मनाते है ।
 झूठ-कपट मद काम शोध पग हरी मिथ्या बनलात ह ॥
 मतिभ्रम पाप पुज का उगा उसका सदा सजाते है ।
 ईश ध्यान सापान चढन की सुन गाथा शरमात ह ॥
 दुःख की ज्वाला दह सुलगती वैद्यराज बुलवात ह ।
 कमज व्याधि नही नशाती तब मन को समझाते है ॥
 प्रभु को रट मन, वैद्य रोग के तेरे वही कहते है ।
 मनहु कल्पतरु नाम सीच प्रभु राग मुक्ति के पाते ह ॥
 पाप राग की भरी पटिका ताला बन्द डराते ह ।
 "वैद्यहरि" अब ईश शरण मे जा पटी खुलवाते ह ॥

सत्त्वद्धि भजन गजल कब्बाली

सत बुद्धि समझाय मुझे प्रभु के दिग पुचन की गतिया । टर
 नति-नति सब बंद शास्त्र कथ निराकार भी है साकार ॥

(हरि हर भक्ति रसामृत गीत दूसरा विश्राम

जिसको भजू मन ध्रम म समाया बीत गय दिन बहुरतिया ।
 वह निराकार साकार रूप म हर दम तुम म रहता है ॥
 समति से साकार तुम्हार बय हृदय मन बिच छतिया ।
 नीदणमति बिन नही मिलता तय निराकार कहनाना है ॥
 उस क्षण ध्यान चतुमुज का कर भद बुद्धि तज और मनियां ।
 निराकार निलेप सदा वो बड़े सुवृत्त तप मिलता है ॥
 माकार रूप उस शक्तिमान का पापी अपापी सब लम्बिया ।
 कठिन माग है निराकार माकार सुगमता वाला है ॥
 "बँधहरि" तो निराकार म अनुना चित्त टिग रनियां ।

सोपान भजन गजल कव्वाली

सोपान सहस चढ दखा सखी नही दीठी प्रभु की मूरतिया ।
 वे नील गगन सोते या रहने सप्त ताक की तुम नगरी ॥
 मैं खोजति खोजती हार गई नही मिली कही वह मूरतिया ।
 स्वग लोक जन लोक सत्य जहा मत्थु लोक सब राज रहे ॥
 घट भीतर साकार वसे बहि निराकार की है गतिया ।
 प्रेम सत्य जह कठिन प्रतिज्ञा जा भा निभान हारी हो ॥
 उसके मन्दिर मन रहत नित निरखो दिन घटा श्री तुम रतिया ।
 श्याम सुबोमल चतुमुजन म देत भक्त दासी को ज्ञान ॥
 "बँधहरि" दिन रन दखता नही भूठ सच्ची बतिया ।

ईश का ध्यान लगा ते भजन गजल कव्वाली

ईश का ध्यान लगाके हिय मन मन्दिर म सु विचार करो । टेर
 बिना एक मन नहा ठहरत व गोविन्द मनुहारी है ।
 मान सरोवर मुक्ता टिग ज्या चल मराल नित चित्त सगरा ।
 प्रेम पथ की स्वस्थ बीधी बिच हृदय मिहासन शाभित है ॥
 मनहु नील नभ पूण सुधावर अमृत बिन्दु करल निखरो ।
 ध्यान वाटिका हरित सुपुष्पित नीर स्नह शीतल पाके ॥
 नील कमल दल पयस बिन्दु पडी जनु मुक्ता म रग भरो ।
 ध्यान सरोवर तुमुद खिले है -पा-राकेश प्रभा नूतन ॥
 मन हू चन्द्र प्रभु भालिगन निज मोद मनहि रग पीत हरो ।

जब हिय मन तम लोक पार कर प्रभु प्रकाश म जावेगे ॥
 'बैद्यहरि' तब आनोक्ति हो भव उदधि से कयो न तरो ।

व्यापक प्रभु भजन

व्यापक प्रभु अतरयामी । टेर
 तू जो पाप करत अहनिशि नर देखत हैं सब स्वामी ॥
 चद्र, भानु, दिक, काल, ऋतु मिस ईश नाक विचरामि ।
 तू जो मन मे बडा सयाना बनकर विपयी कामी ॥
 तोरी गति उसमे न छिपी बहु सांचहिय अभिमानी ।
 गहरी तम की गुफा फसा है कबहु जिचारी न जानी ॥
 अब तो शेष रही मे रटले राम नमामि नमामि ।
 काल ज्वाल तब भाल लपक रही जारन को सुलगानी ॥
 'बैद्यहरि' लोकाश नाम का छिडक सदा तू पानी ।

आखें खोल भजन

आखें खोल श्याम को देख । टेर
 मजुलसाट कुबु केशर की पडी है कज्जल रेख ॥
 विधि भी लिखगें जाहि कलेवर जग शासन का लेख ।
 श्याम जलद तनु शोभित नखरो के की की गति पेख ॥
 नील नीरज मनु रति पति धारे सुन्दर सुघड मुखे ।
 विधि नील नभ तडित निचोडी सहित प्रभा अवरल ॥
 सुघरि पीत पट, दत पक्ति जिभि शोभा रही न शेष ।
 बड भागिन आखे है तूरी राशि है तोरी मख ॥
 'बैद्यहरि' के सफल मनोरथ तेरी देखा देख ।

(दूसरा विश्राम समाप्त)

आलि मोरे भजन

आलि मोरे हिरद ज्योति जगी ॥ टर
 भाग गया तम प्रभु प्रकाश पा-मूरत मिली सगी ॥
 कोटि दामिनी सहस्रभानुद्वि देखत गई ठगी ।
 श्रीरा ना वही ज्योति ईश की जग मानस म दगी ॥

(हरि हर भक्ति रसामृत गीत तीसरा कि)

रात दिवस मधुरी मति मारी प्रभु मरद पगी ।
मति गति रति लगी प्रभुहि चरण रज में भी वही भागी ॥
पूण काम अभिराग रण का दू बन रही लगी ।
मम नयन अनुराग द्रवित हो बाणी सरस बगी ॥
'बंध हरि' की ज्ञान पिपासा प्रभु पाने सुलगी ॥

हरि विन भजन

हरि विन कौन सहारा नर का ठर ॥
जगरक्षक तू ही सुखदाता हस्ता नित भव डर का ॥
बिना भजन निष्पन्न यह देखी ज्या शरीर है खर का ॥
भव शरीर निर्जीव होत है जारो कहे सब पर का ॥
कमभोग वेग नहीं चलता वश दास सुत जर-का ॥
देव देख जग रचना केशित अखियन आसू डर का ॥
दह भस्म पृथ्वी म सम्पत्ती ज्यो पक्षी विन पर का ॥
ए दिवस शुभ व्याह हात सब गाके मंगल वर का ॥
भक्तकाल कोई नहीं सगी धम एक सग सर का ॥
भवतो चेत चेत सुन प्राणी प्रभु है जीए मरण का ॥
'बंध हरि' तो सहता रहता नित प्रभु गुण व ठर का ॥

प्रभु ह शरण प्राथना भजन

प्रभु ह शरण तुम्हारीजो में आयो दुख में भाग ॥ टर ॥
भव तो तरा आन्य लेकर रहना पडती जग म ।
ब्राह्म पडे बनवान जगत नदी मुच बाया मग म ॥ मैं
मेरा पाप घडा गल ताहि भर आया देखो ।
भव तो तुमसा-मत्री पा कर सगे दियो लखो ॥ मैं
मोह नदी म तँर धका हू अत्र डूजन की त्पारी ।
तुमहि नाविक खवन हारे गोविंद हो गिरघारी ॥ मैं
मायानद म कमल खिल हैं घन जमीन नारी ।
जनकी गंध म अमर बना मैं भूला बनवारी ॥ मैं
मान बडाई अरु डरपा की ममता मन मे जागी ।
ममता नाश करी तव किरपा की सुलगादे आगी ॥ मैं

हम मकंठ तुम नट हो नचाते हमे भरोमा तेरा ।
 "बँध हरि" की मति चकवी के तुम हो मूय सवेरा ॥ मं

मोहे हरि भजन

मोहे हरि भरोसो तेरो ॥ टर ॥

नट धीरज सेतु बाध को तारन तरन सवेरो ।

मोह वनज तुम दहन वृशातु और नही कोउ भरो ॥
 पाप दनुज तम हरण दिवाकर कर हिरदे म डेरो ।
 आधि व्याधि सापिनी खाने बन गरुण, हिये कर घेरो ॥

काल कराल दाढ पीसनी लख धीरज टूटो मेरा ।
 तुमहि स्वामी हो रखवारे क्यों न टलाओ तेरो ॥

मन मधुकर बन पद पकज पे दिन दिन गू जत हेरो ।
 "बँध हरि" सो तेरी आश पे चरण धूलिनी चरो ॥

मगल मूर्ति प्राथना चौपाई

मगलमूर्ति जय मधुसूदन—पाप पु ज गज केहरि सूदन ।
 मोह विप-लता नाशन हारे—ग्राह, मुक्तकर गज रखवारे ॥
 माया डाकिनी के तुम बरी—मोहि उगारहु करहु न देरी ।
 मम मानस के मजु मराल—चुगहु, हिय घरि मुक्तामाल ॥
 पद पकज म हो मम भक्ति—सदा विराजतु मम, तब शक्ति ।
 मन मधुकर तब कमन नथन म—ना-मकरद ला है-चयन म ॥
 वरुणा सागर सुख के बर्तरी—जग पालक रक्षक सहर्तरी ।
 कर जोरे "हरि बँध" चरण मे—आन पडा प्रभु तोरी शरण म ॥

हरि तुम भजन राग बर हस ताल घमाल

हरि तुम भक्तन के हितकारी ॥ टर ॥
 अजु न के रण भूमि सारथी बन सब विपदा टारी ।
 चिर प्रतीक्ष शबरी की इच्छा खाय वीर पूरी कर डारी ॥
 जल विच युद्ध भया गज ग्राह का लटत लडत गज हारी ।
 छाडि गरुड माग बिच धामे भक्त गजहि दु ख टारी ॥
 भक्त-दास गेह मे प्रकटी पावन सुरमरि धारी ।
 मूरदास को अमर किया दे जान चक्षु असुरारि ॥
 लोभ काम की वंतरणी म डूबरहा मन्धारी ।
 "बध हरि" उद्धारक प्रभु व चरण कमल बलिहारी ॥

(हरि हर मति रसामत गीत तीसरा विधात)

बिना विद्वेश भजन गजल ताल घमाल

बिना विश्वश गुण गाये सु आयु बीतगी सारी ।
मनहि मन रह गई ईच्छा न प्रथ की पुजिता टारी ॥

यही पल वय आयु क अभा तो ईश रग म रग ।
नही तो यम की कालिख से हूव मंती यह देह थारी ॥

हरि की चरण गंगा से अभी यो पाप कीचट को ।
पुरी सुर पुर म बाना हो लिखे लेख गिरधारी ॥

नदी बहती प्रथम ममता फले हैं प्रथम मद मत्सर ।
प्रवल बाहो म कयो डूवे पकड नाविक जे बनवारी ॥

मरी है मोम की गगरी कपट मिथ्या के पानी से ।
सुखा प्रभु नाम मूरज से हरि, जीवन मे जो खारी ॥

प्रभु मोरे मिलित राग वैराय भजन तर्ज प्रभु मोरे अलगुन चितन धरो
प्रभुजी मोरे मन में यों आवे ॥टेरा॥
लिपट जाऊ तोरे चरना कमल म भव दुख नाहि सतावे ॥

मठ कपट पाखड पाप की त्यज तप्या सारी ॥
हरि के रंग म रंग इ हरिदा माया डिग मत धावे ।

जब अस्थिर मति होती जाती तब सोचत हूँ मन में ॥
त्रिया धरनि धन बहु उपजाकर जगयश क्यों न कमाव ॥

कुछ क्षण खुलते ज्ञान नयन तब सार ईश को जानू ॥
प्रमद कमाई जग यश करी का क्यों न गीत तूँ गावे ॥

जग के भोग पदारथ मुदर लखे हुया अवीर ॥
यही उन्नति यही सुयश आनन्द यही चित भाव ।

मूढ मति स धन जीवन रति भोग सभी क्षण भ्रमुर ॥
जानत ममता कीचरही क्यों द्विदिधा म भरमावे ।

जगमत बना आधिभौतिक है रूप विराट प्रभु का ॥
प्रि कतव्य विमूढ हृषा सुन मति उपवन बन धावे ।

स्थिर मति तत्व निचोड हरि की मूर तुम्हसीकृत गाया ॥
हिय तराजू धर के तोनी पलटा मारी पावे ॥

निवृत्त राग के गह तप वन है युक्ति हृदय म दिवारी ॥
कछु जग जाले कछु प्रभु ध्याने मन सतोष बधावे ।
नो आनन्द प्रभु के गुण से गाने म प्रति प्राया ॥
काचन कामिनी "वद्य हरि कछु आनन्द राशि धावे ।

हे प्रभु भजन

हे प्रभु अब तो कृपा करा ॥ टर ॥
 भवज दु ख स भ्रमित रात दिन आ-तव, चरण पगे ।
 सुमति क्ली पकज की विगसे नित नव मोद भरो ॥
 तव यश गाकर मति बने मम एसा बली करो ।
 म जसा सेवा म हाजिर खोटो शवा खरो ॥
 और नही काहु ईच्छा मन चेरो अपनो बरा ।
 मम हियमति मन माहि कलेवर अपना रूप घरो ॥
 तुझे सहारा अमृत बल पा रच रच गुण सगरो ।
 "बैद्य हरि" घनभाग्य होगया डूबे चाहे तरा ॥

प्रभु भजन

प्रभु निज भक्तन की रखवारी ।
 समदर्शी करते तुम नित हो सदा अटल उनवारी ॥ टर ॥
 हिरण्यकशिपु दानव प्रह्लाद का भूधर से दिया डारी ।
 तू ही रूप धरि अदृश शक्ति का दाम की विपदा टारी ॥
 जामिनी कामिनी वियोग हर्ता रति मन मोद अपारी ।
 राजारव के तुम्हहि सुधाकर बनहि चन्द्रिका प्यारी ॥
 भक्त मूर तुलसी उलभे जब पिया नह मभधारी ।
 जान नयन पकज भानु बन उधरे किरण हजारी ॥
 दुपद सुता के चीर दु शासन लीचत करत उधारी ।
 तुम्हहि चीर बन अपार होगय अत दुष्ट गया हारी ॥
 माया भूसलाघार बरप रही ममत्ता आधी बारी ।
 "बैद्य हरि" को धीर बघाघो कर गोवधन धारी ॥

शुभमति कवित

शुभमति शांति की सता हरित हो-प्रभु गुण की तार हिय म पलेगी ।
 घानद भ्रमर यश पापके पूरण काम वासना की आग तारे हिन ना खलेगी ॥
 मोद उपजावन की सदा ही जननी यह-खडग बन पाप रूप अघपे चलेगी ।
 मूर तुलसी के हिय अमृत की धार बन "बैद्य हरि" के अब हिये म घलेगी

चेत चेत कवित

चेत चेत हरि बच अब हरि हित नित-इसी त्रिविधापना सहारे तर ज ।
 जग की विभीषिका बनी है भयजकरी ईश बिना अन्त कोई काम
 प्रायगा ॥

मूठी बाधे धाया मानु उदगदरी न तू-“हरि” पम नग चान छात्री हु
जायगा ।

मा मधुकर घर ईश व कमल पद-जगवग श्रीर भी भमर पन पायगा ।

प्रभु में शरण भजन

प्रभु में शरण तुम्हारी धायो ।

मव साधन व कर अनुभव में सुख बचदू रही पाया ॥टेर॥

दु प दरि द्रता मोह पास म, जाया जग लपटाया ।

त्रिविधताप की अनल ज्वाल म जीव रह्या भुनगाया ॥

दल जगत की सदा भशाति तय पद शाति हू धायो ।

बुद्धिमान मिथ्या भ्रम जल्पत, बैद्य नाडी ओ छायो ॥

समझ चेतनर फिर अनेनवन् छालग नाग इसाया ।

नही विश्वास कहा शाति सुध, दसभ्रम में भरमाया ॥

शास्त्र गुरु के पढता सुनता सुध्याता तू कहायो ।

आन पडो “हरि” पद सराज म अलिबन मन ललचायो ॥

मैं तो हरि पद भजन

मैं तो हरि पद कमल लगू गी । टर

छो तण्णा जग भग्म, वरम की अमित रेन भटवू गी ॥

छाट बपट जजाल मोह के प्रभु पद रैन जगू गी ।

पाप पव श्रीरभूठ द्वेप से अब तो दूर भगू गी ॥

मममानस की कर अलि रचना प्रभु मवरद पगू गी ।

जग के अमित सुमारग तज व प्रभु पद राह बगू गी ॥

हरि की माया हरि ही रक्षक हरि क नाम दगू गी ।

जगनाता प्रभु के पान को मगल वष रचू गी ॥

“वद्य हरि” हू चरण कवल का धरत ध्यान निरखू गी ॥

मैं सखि प्रभु के भजन

मैं सखि प्रभु व प्रेम रिभाई ।

भानु काटि सम जिन की शोभा शाति मुधा बर्पाई ॥

शवरी गीध अहल्या तारी मारी भी दु ख दाई ।

हनि चद्र की श्वेतशवरी हो मन कमुद खिलाई ॥

नगशिल कान्ति हुलस हुलस के मन मंदिर लहराई ।

प्रेम पत्रिका हिय लेखिनी निव ताहू ही पढाई ॥
 जाके गुण गा पाप विभूषित पापी हू तर जाई ।
 ऐसे ईश की गुण गरिमा से भक्ति हिय सरसाई ॥
 अत अनग की सुन्दर शोभा लाजी प्रभुहि लखाई ।
 "वच हरि" के सदा कलेवर ऐसी छवि बसजाई ॥

मन हिय कमल भजन

मन हिय कमल नयन की कल्पना ।
 बरहु निरन्तर पाहु अमर पद छोड जगत की झूठी भरमना ॥ टेर
 शुक् नासा भ्रूकपोल मुन्दर सुन्दर चिबुक मुगाथा जल पना ।
 कचवेणी गुम्फित शीशान पर भाल तिलक कुकुम गा रचना ॥
 कण छिद्र म लटकत कुडल कनक छवि की बनी है भनकना ।
 शख ग्रीव आजानु बाहु हैं उरविस्तृत मुख प्रेम छलकना ॥
 पदमानन मुख नयन कमल से चरण कमल बलि जाऊ शीशमना ।
 "बैद्य" हरि तब मन्द हास्य पे नित योछावर शिवदृ अपरना ॥

रसना प्रेम से भजन

रसना प्रेम से जगदीश । टेर ॥
 रटती रह तू इतना तो री । एक बार दश बीस ॥
 पदा पोषण जग सहर्ता है अण्डन हू अधीश ।
 प्रेम से कहति कहति नेम से कहति रह सहरीश ॥
 सदा विराजत नित्य पूज्य है सब देवन के शीश ।
 चरण कमल दावती नित लक्ष्मी उपर छत्र फरीश ॥
 "बच" हरि धरि वसुधा उपर रक्षक सबही अहीश ॥

नयन तू भजन

नयन तू सहित नेह भरि देख । टेर
 प्रभु रक्षक अतर्थापी है इक टक ज्योति पेव ॥
 देखा जिसन पाया अमत अमर हा गय भेल ।
 ध्रुव ने देखा प्रेम नजर से अमर मीन नही मख ॥
 मूर तुलसी न अपन अनुभव देव लिख दिया लेख ।
 भाग्य विधाता अग जग तारण लेखन हारे रेख ॥

'बैद्य हरि' भगवत पद रचन करे कीज तरेण ।

मन मे मन के भजन

मन मे मन के आनन्द छाया । टेर
 विषय भोग को सुन्दर बाला जा म चित नव नूतन भाया ॥
 भोगत 2 थकी देह जब तन्गणी प्रोढा जान कराया ।
 सार नही यह भूठा भ्रष्ट कुछ 2 समझ मरम हिय आया ॥
 नित अभ्यस्त स्वाभाविय छूटत नाही माह की पास र माया ।
 एक दिन ठेस लगी मन चाटी तरुणी शर बाणी का चलाया ॥
 दुख पडा घट हुआ जान जग देखा देखी में पछताया ।
 ईश चरण चल पडा भटक क आनन्द राशि म आनन्द पाया ॥
 कर उद्धार जगत अपने का "बैद्यहरि" तो पद चित नाया ।

रेमन सत्य भजन अर्तयामी

रेमन ! सत्य सुख हु यह जान । टेर
 अर्तयामी को क्या खोजत जाहि तुझे पहिचान ॥
 घट घट सब स्थानन व्यापक नित वह ऐसा घर ध्यान ।
 कमत नयन मुख हसी घोड़ी बाजत भूरली तान ॥
 हर पल हर क्षण भ्रमत निरंतर हर प्राणी के प्रान ।
 आयु के कुछ क्षण प्रति दिन तू उसके गुण हू बखान ॥
 अजर अमर आनन्द जाहि म हाता नितनव भान ।
 एत दीन दमालु करणा सागर कृपा निधान ॥
 "बैद्यहरि" की पूण काम के चरण धूलि मे ज्यान ।

सिर तू ईश पाद भजन

सिर तू ईश पाद रज धार । टेर
 जासे तिरि अटल्या नारी करतू देख विचार ॥
 चरण कमल पावन रज जाकी करती सब का पार ।
 यही सहारा सब सुरगण का जो है स्वगागार ॥
 आनन्द हू की आनन्द दाता सुख दे हाथ पसार ।
 अभिलाषा शिव ब्रह्मादिक को मोसे और गदार ॥
 "बैद्यहरि" धारण कर कवन पाया अतुल अपार ।

भावना जाग उठी भजन

भावना जाग उठी मेरी ।
 प्रभु की ज्योति हृदय घरन की वनन को बेरी ॥ टेर
 मन पपीहा वन क्या नही टेरत तू दिन रन ।

स्वाति वृद्ध प्रभु दरश की पाने से हो चैन ॥
 रग चढा जब ईश प्रेम का नही लगती देरी ।
 इसी असी की तेज धार से मरते काम रु त्रीष ॥
 लोभ पिपासा मृग तपणा भी कभी न करती तोद ।
 मीरा ध्रुव क हिरद जागी जग की लोई गेरी ॥
 इस दपण म मुख देखन की ईच्छा मेरे मन मे ।
 सूर तुलसी अरु अम्बरीष ने देखा जीवन क्षण म ॥
 "वचहरि" की हृदय कुटया चमत्त साभ सवेरी ।

करुणा सागर महिमा भजन

करुणा सागर महिमा जानी । टेर
 भक्त प्रह्लाद सत तुलसी अरु मीरा सूर ने गति पहिचानी ॥
 अम्बरीष और हनुमान ने व्यास सरीखे उत्तम जानी ।
 परमहंस शुकदेव मुनि जो जन्म काल से हा गये ध्यानी ॥
 सब सुख सागर सुख की राशि और हिं सब आनन्द की खानी ।
 यह जाने दिन रैन टरे भव दुख की टारन हारी निशानी ॥
 त्रिविध ताप सकट जग ब घन छूटे पास ज्यो बलहि धानी ।
 यही सोच सेवा मे लगने की हू 'वचहरि' ने ठानी ॥
 सबकामना पूरन हारे दानी शिरोमणि के भी दानी ।
 आयु नाश क्षण भगुर देखी ज्यो धारा का चलता पानी ॥
 यही पुरानो और ददो ने नेति नेति कह सदा बखानी ।
 ज्ञान जगत के सभी जीव की सदा निकलतो उत्तम दानी ॥
 सन्वासमभ फिर लघ विराट को जानी गरिमा अर्जुन मानी ।
 सती शिरोमणि अनसूया ने अत्रि ऋषि की परम सयानी ॥
 भूतल सुतल तलातल चहु दिशि एक यही है आनी जानी ।

मेरे चित मे लगन भजन

मेरे चित मे लगन लगी । टेर

ईश रूप साकार दश को नित नित चाहजगी ।
 झूठे जग भाया प्रपच म मैं नित रही ठगी ।
 मान बडाइ ईर्ष्या तृपणा मन से नही भगी ॥
 क्वचित्त काल सुविचार सरणि म प्रभू के प्रेमपगी ।
 शानि बला नाहिं काहु कही चित्ता अनल दगी ॥
 'हरि' भरमो मे मन भरमा अब भगवत चिह बगी ।

लक्ष्मीकांत राग साहनी विराट् प्रभु को

लक्ष्मीकांत मुरेश पनि की आजु शामा घनी बना ।
 सजनी विवसा हृदय कनिया देख मानु सीमनी ॥
 रङ्गा निधि दगुजारि की माया यह नाच नचारही ।
 विश्वना की अखिलेश की शामा सजहि मन भा रही ॥
 दग नभ राखेण प्रतिभा याद प्रभु की आ रही है ।
 दख उडुगण की सुमाता रूक्षमतम बणी जा रही है ॥
 देव रूप विराट का जा छा रहा सबत्र है ।
 भूमितल तर अतन सुतल म ध्याप्त यह सबत्र है ॥
 तरु नदी और श्री हिमानय शस्य श्यामल उर्वी भी ।
 उदधि जग के अति भयकर जीव जिनने गुर्वी भी ॥
 उनम सत्ता ईश की जा दुख सुख दिया रही ।
 कह ग्य दव की मजु रश्मि जलज मुग विक्रमा रही ॥
 श्री दिवाकर की किरणा में तज उमकर छा रहा ।
 नभ म बादल गजकर वही ग्रीजली दर्शा रहा ॥
 जल को पा वही हरिन दुर्वा मोर दादुर जोर है ।
 पूण चद्र की शरदिवा अमृत बनायुत मोर है ॥
 जिनकी रज को धार शिर पर प्रकृति जग रचने लगी ।
 ओष प्रोत हो प्रभु गुणो म प्रसव घर्मो नित भगी ॥
 सत्र व्याप्तादर त उत्तन रूप अण्ड का यह सगा ।
 कोटि अण्ड क स्वामी समुल विगुल अपनी श्री वजा ॥
 भरण पोषण से सुरक्षा इसरी नव नित कर रहा ।
 प्रकृति के बनक स्तना म पयस मीठा भर रहा ॥
 यह ही विश्व विराट प्रभु का दृष्ट रूप अनूप ह ।
 सब व्यापक समझ 'हरि मन कयो पठा भव रूप है ॥

साभ समय विष्णु आरती

साभ समय नीराजन बेला लक्ष्मीकांत की हुई आरती ।
 सुर नर ऋषि मुनि नाग लोक के लोक सुगावें मधुर भारती ॥
 धूप दीप कपूर गंध में आल्हादित हो नयन आरती ।
 शांत शील श्री पदमनाभ प्रभु भुजग शयन पर फूल डारती ॥
 सकल विश्व आघार कांति नभ वारिवाह सी बग सारती ।
 अखिलेश्वर करुणा सागर के सुदगाय पर प्रेम भारती ॥

भव भय हारी पाप तमारि के चरण टेक दिया शीश पा-रति ।
योगिध्यान म नित छवि वसति नाहि 'बंध हरि' हृदय टारती ॥

ततीय विधाम समाप्त

मेरे तो भगवत् कृपा भजन

मेर तो भगवत् कृपा सहाई । टर
आन पडे जो दु ख शीश पे हरति सब कुट लाई ॥
सुख सम्पति जे पाते प्राणी करते प्रेम मितार्ई ।
भगवत् प्रेम सभी से करते स्वाथ प्रेम है भाई ॥
तुलसी कृपा परमपद पाया जगहु अमरता छाई ।
सदानंद दाता प्रभु सगरे करत दूर तम काई ॥
मोह माया नागिनी खाने को जीव कलेवर घाई ।
गभवास ज्वाला म तापित ईश शयथ म खाई ॥
बाहर आन पडा इन लाव प्रभु महिमा नही गाई ।
प्रभु की दीन दयालुता पे म बार बार बलि जाई ॥
जुग चीता माला फेरतहू, फेरहु अक्षर ढाई ।
आलस द्वेष कपट वेशन को काटन बन जा नाई ॥
दिन दिन दूना प्रेम चरण हो वही भक्ति मै पाई ।
सोते उठते खाते पीने लेत हु जभी जभाई ॥
राई को पवत तुम करते पवत हू को राई ।
जान सुगरिमा के दाता अज्ञान पापिनी ढाई ॥
तोरी कृपा सर्वाहि जग देखी नही जानहु जनाई ।
भव दु ख सकट काटन हारे सर्वाहि पाप न शाई ॥
"बंध हरि तव कृपा आसरे करे गह गुज राई ॥

प्रभु गुण दोहा

प्रभु गुण गाये नाम हा तव क्या और नगाय ।
जग इसको समझे सदा ऊचाहाथ बढाय ॥
सुख शरीर की कल्पना जा मे ईश्वर प्रेम-
रोग बीजबही देह म, व्यथा-नाहि तहनेम ॥

स्वस्थ बराबर सुख नही पिता मनहु यह जान ।

ता मे स्त्रण सुगधि है ईश्वर का जह मान ॥

सुख मे ईश्वर मूल्य है दुख म एव छदाम ।
स्वाथ मे सबही भजे दिन स्वाथ के दाम ॥

ईश्वर की श्रृपा हुई सबत दश की माल ।

दो हजार के मायन मन गृथी माल ॥

पहनाई प्रभु व गन जाम प्रेममणी ।

अन द मय हो भा गई तन म कणि कणि ॥

ईश्वर के दरबार म जो काई करे पुकार । यायाघीश भगवान है करन बडापार ।
जिसकी जमी भावना जस पल की चाह । ईश्वर के दरबार मे वही मिले अथाह ॥

ईच्छा काहू की गही चाहता भक्ति विवेक ।

राम कृष्ण गुण नित रचू शान्तिसहित हरेक ॥

माया जगपति दब की व्याप रही सबत्र ।

सकट माचन नाम भी उनका है यत्र तत्र ॥

मैं तो चली---भजन सबव्यापक ईश

म तो चली नमंदा पार प्रभु की गुण गरिमा गाने ॥ टर ॥

मारग मिली प्रेम मयी मीरा गाती गुण अनुराग ।

ईश्वर सभी जगह है व्यापक तख मन मदिर बाग ॥

भक्त मूर गुण गावे प्रभु का मन उल्लास भरा ।

हिरद से जाने न देह प्रभु-यह है प्रेम खरा ॥

तुलसी सत क्यानक रचदी रामायन की भारी ।

ता मे शकर भोले बोले व्यापक सब मुरारि ॥

तुलसी सत की बहती दखा राम प्रेममयी गगा ।

भक्ति वक्ष क कमल खिले थ देख होय मन भगा ॥

प्रेम कलेजे दख सखी वे प्रकटें श्री भगवान ।

खभ पाड प्रह्लाद बचाय मार दैत्य बलवान ॥

उपकी माया शक्ति सभी जग फन रही रो भोली ।

मैने देखी, मीरा बोली भरो त्याग की भोली ॥

मूर तुलसी का वाणी विच विच रूप प्रभु साकार ।

कहती देखी निराकार भी-भ्रम म पडी मभार ॥

निराकार साकार ठसी के रूप सत ने गाय ।

दृढ मन क रचने दच्छित फल "वैद्य हरि" न पाय ॥

ईश की हिरदे माता---भजन इन्द्रिय एकादश सम्प्रोवन

ईश की हिरदे माला पोई ॥

फेरा प्रेमहु मनीराम तुम अतर दृष्टि होई ॥ टेर ॥

कहत नया सुनो रे कानो घम याय मैं देखा ।

पामर जीव अघम ने प्राणी हाता उनका लेता ॥

रसना बोली स्पर्शेन्द्रिय से छूकर दसो माला ॥
 कमल चरण की लेहु सुगन्धि द पजुडी म ताला ॥
 बाणी प्रभु गुण गाती कहनी मदद करा रे हाथो ॥
 पैरो नन्न हाय लुल जाग्री भुन भुन टवो माथो ॥
 गुप्तेन्द्रिया तुम त्यागो मत का जीतो काम बिकार ॥
 मन राजा के साथ स्नेह से ले लो मन्त्री भार ॥
 अय जीवो को बना सिपाही कर सेना तैयार ॥
 द्वेष कपट मद काम शोध को जीतो धीरज धार ॥
 कर कल्याण दुखी जीवा का दे द सुदर सीख ॥
 हरि नाम को खूब निचाके पीवो मजुल ईश ॥
 ऐसी माला दशरथ हो के फेरो करा प्रचार ॥
 जगदीश्वर अपनावेंगे कर बेडा सबका पार ॥
 "बैद्यहरि के" मन ने अनुभव कर पाया आनन्द ॥
 सब सुख दाता सब मनारथ वही सच्चिदानन्द ॥

लोकेश विष्णु स्तुति

तज—रामचन्द्र वृषानु भजु मन (राग सोहनी)
 लोकेश विष्णु हारी भव भय भजहु नित मन प्रेम से ॥
 शान्ति सुख के अमरदाता श्रीपति को नेम के ॥
 दया सिन्धु सुदीनवधु नाथ तब पद लाईये ॥
 ससार सागर के अंधेर स तिराने आईये ॥
 कमल नाचन मुख कमल और पद कमल म मन अली ॥
 पान कर भकरद का त्यज माह माया खल बनी ॥
 शीश मजुल वेश है शोभा मुकुट की है बनी ॥
 लोक पावन तापत्रय विघ नाशके है प्रभु धनी ॥
 भात्रे त्रिपुण्डर कण पुण्डल कार्ति मूय लजावती ॥
 मद हास्य की माधुरी ज्यो रति मनोज मुहावती ॥
 मुख सरसता कम्बुग्रीव की चिबुन ओठनि चरणता ॥
 आजानुभुज उर भगुलता रोमावली की विपमता ॥
 लख नील नीरद मीवि छवि मन हृष अति उपजावती ॥
 कटि पीत पट की चमक चपला की चमक भनकावती ॥
 कर धनुष शारंग देख क वजयती माल जो ॥
 शेष शकर सुर मुनि लख धन है जीवन काल को ॥
 पाप तम नाशन को दिनकर मजुता रावेश सी ॥
 पुण्य अम्बुज को गिलाने सुप्रभा है दिनेश सी ॥

श्रीभा सुधाम पूणवाम प्रियवर सनवादिकम् ॥
 धर रूप नौका सप्त ऋषिवर रक्षित प्रलयादिकम् ॥
 आनन्द वद कृपालु विष्णु मम सुरगाम कीजिए ॥
 चरण कः ह आसरा "हरि वैद्य" को गृह लीजिए ।

आज मोरे हिरदे—भजन

आज मोरे हिरदे बहुत प्रमाद ।

छाया ईश गुणी को गाने नित आनन्द समोद ॥ टर ॥
 नारद शकर शेष सभी ने वद नेति कह गाया ।
 उसी चराचर स्वामी वश है दब दनुज सब माया ॥
 पदम नाभ की आदि सष्टि मे किसे ब्रह्मा पावन ॥
 कमलनालगत कोटि तपस्या करो प्रभु मनभावना ॥
 अखिलेश्वर की हुई कृपा सब सात ऋषि रच दीह ।
 आदि सष्टि के यही प्रवक्त क प्रवृत्ति पुरप से कीहे ॥
 उसी सष्टि म हमसे पामर नही सष्टि अधिकारी ॥
 तपि क्षमा सागर ने कीनी प्रेम कृपा मिर डारी ।
 अब तो प्रेमी मित्रो ऐस दीनानाथ की स्तुति ॥
 करते रहा "वैद्य हरि" मन से यही प्रभुकी विभूति ॥

सब चाहत मान बडाई जीवन हे—भजन

मव चाहत मान बडाई ॥

कोई प्रभु के मनुल गुण गा हृदय कमल हलसाई ॥
 कोई पुस्तक लिख जगम्यानी से पाता समान ॥
 कोई कपट पाखंड द्वेष ने धावत सब ही स्थान ॥
 कोई मचय धन हिन भागे देश विदेश सदा ॥
 कोई साधु कोई पंडित रमते विश्व वदा ॥
 कोई भोगन विषय भोग ससार म जे मन भाय ॥
 कोई सचाई सज्जनता से नागयण डिग घाय ॥
 कोई भलाई से प्रमिद्ध हा जग म नाम वमाता ॥
 कोई बुराई घागग करके अप्रिय जग हो जाता ॥
 वैद्य हरि न मन म ममभा कीन माग है साचा ॥
 ईश्वर की गुण गरिमा ए मन ! गा जो जगहि राचा ॥
 और अमरतास सब ही नश्वर रहती यह बुद्ध काल ॥
 एमा सोच हिय कीर्ति म गाई दीन दयाल ॥

यही बड़ाई मान हृदय मे जिनके नित ही आवे ॥
 ते बड़ भागी सफल लाग हैं जीवन धन्य बनावे ॥
 ऋषि मुनि और साधु सत सब चाहते हैं नर नारी ॥
 कोई राग वैराग घाटकर हो गृहस्थ सचारी ॥
 तुलसी सूर मीरा बाइ के हृदय कमल मे विकसी ॥
 मान बड़ाई राम कृष्ण के प्रेम की गंगा निकसी ॥

मेरे तो दीन दयाल-भजन

इष्ट देव हं मद्रा सयाने प्रेम की मूरत खरी ॥
 वा के चरण सदा शीश रख नैण सू नीर डरी ॥
 गदा चक्रघर पदम शख से मो पर कृपा करी ॥
 नील कमल शुभ अ ग, कमल सा मुख देखत हु तरी ॥
 रोम रोम पर बारि जाऊ गुण गरिमा डगरी ॥
 धोइ मरी पाप कालिमा पक लगी सगरी ॥
 प्रभु बिन नाही कहु सहारा पल भर एक वरी ॥
 ईश प्रदत्त सुमति की सपदा टारे नही टरी ॥
 जीव की वृद्धि विषय भोग मे पच पच सदा मरी ॥
 वैद्य हरि गद तारण की प्रभु गुण हैं अमर जरी ॥

प्रभु मोरे-भजन

प्रभु मोर नयन पटल मे आवे ॥ टेर ॥
 नव बादल शोभा सरनिजसी चंद्र मुखहु छवि छाय ॥
 केकी पख पखुडिया मुकटनि मद हास्य मुख भाय ॥
 मद्दु आनन वेणु रव करते छिद्र हु अ गुरि लगाये ॥
 छलित कच बुद्ध नमन मटक कर शोभित कटि भुकाये ॥
 कुण्डल ग्रीव शीश चरण की चपल गति सरसाये ॥
 कटिहु पीतपट करानि पहु चिया गल बन माल सजाय ॥
 राधा जमुदा नद गाप के मन मे गानद जाये ॥
 वैद्य हरि भी हृदय कमल को मुद हो फिरे खिलाय ॥

भुक सिर—भजन

भुक सिर हरि पद कमल सदा ॥
 साथ जम तुम्हारा होगा कृपा मे उनकी कदा ॥
 पाप दैन्य दानध पर चलती उनकी सुदह गदा ॥
 नारायण के सुप्रभाव से छूटे फास ददा ॥

अजामील का यम दतन से न बद्धु हृष्टा तदा ॥
 मानादर के गभ वान म जा बुद्ध करा वदा ॥
 भक्त पियारे अथतर तं जब ग्लानि घम की मदा ॥
 वद्य हरि ने माद ुवाया पावन पद एक दा ॥

तन मे रोग-भजन

तन मे रोग कारिमा लागी ॥ टर॥
 दूर करन अरु घाने घाया नही टरती हे अमागी ॥
 टुशता झाई राम रोम म काम वामना जागी ॥
 बक्षराज एक मित्रे सयाने, दसा बताई मागी ॥
 नारायण का चूर्ण रात दिन मेथन कर तू भागी ॥
 दससे हागी राग बालिमा नाश मेर मन प्रागी ॥
 नारायण ही जीवन बूटी मन उपवन मे लागी ॥
 सदा सुरक्षित रखना इसका सब रोगा को लागी ॥
 वद्य हरि चालीस वष म सेइ हा अनुरागी ॥

मै हरिनाम-भजन

म हरिनाम के मोदक खाय ।
 मनघत म बुद्धि भरने से गोला गाला मु पचाय ॥ टर ॥
 ज्ञानेन्द्रिय के वेशन म सुश्वत सिता लिपटाये ॥
 अमर मधुरता रसना चख चग दन्त न जान अघाये ॥
 दह कडाई म रव, दी ही, मद भाच सुलगाय ॥
 मधुर मधुर तम माधुरी वर्णन गद गद स्वर से गाय ॥
 जह देगू नह छवि निरागी घट घट मत्र के पाय ॥
 स्वयं खाय कर बैद्य हरि ने वाधव, प्रिया, खिलाये ॥

ईश कृपा कवित

ईश कृपा से बन जोग सुजसका मनका लगाना बडी टेडी मेडी खीर है ।
 मति की परीक्षा देनी पडती है रातदिन हसज्या निवालत पयसमाहि नीर है ॥
 चोमे चाखे उपवन जब फले सजही बडे भाग आनन्द से खाव ज्याही कवीर है ॥
 आनन्द निधान करुणा क पारावार की कृपाहु बहत बडे द्रापदी का खीर है ॥
 गुण मान गाय जा के मिलता अमर पद-अनुरागभरी चागी भवतर जायगा ॥
 राजा महाराजा बडे काटाधीश जगम नाही पाया चन पडलावा रह जायगा ॥
 स्वण सयोग यह मिलता कृपा स जाकी-मन धाम धार घीर दिव्यमणी
 पायगा ।

भगत घनी की बरी समता मनहि "हरि"-ऊँचा रहे पलडा जो
हरि पल सायगर ॥

ज्ञानदोह

जगके बहल पचेड हैं नर को पकटत राय-नारायण इव आसरा
वह ही सदा बचाय ।

गजमुन गिरिजा तनयजे सोहन मगल रूप-घ्राखु बाहन भक्त व
टारत विघ्न अनप ॥

प्रभु वन भजन

प्रभु वन केवट-नैम्या हाकी ।

भवमातर की चपन तरगे टरराती हा बरकी ॥ टर

जय नाथिक स्त्री देखन चाहो निशि दिन सुन्दर भाकी ।

वन विराट खेवन को नौवा, खेवत है अघ म्हाकी ॥

समदर्शी वो खेवनहारा जान न म्हाकी थाकी ।

लेवो खवर प्रभु भान हमारी, सुघ बुघ नहो यहा की ॥

नैम्या चलती सकती है पर सकती न घर सब बाकी ।

अजय निराली माया उसकी गति न जानी जाकी ॥

जो नैम्या मे बैठ तर गय धर प्रह्लाद भक्ता की (भगताका) ।

वैद्य "हरि" की उत्तर गई, ले, मान बडाई जहा की ॥

प्रभुजी भजन

प्रभुजी तुम हो दीनदयाल ॥टर॥

करुणा सागर कृपानिधि बन करते जीव खयाल ॥

पूण काम सिधु आनन्द के दाता सुखहु रसाल ।

आनन्द राशि सच्चिदानन्द हो तारण हारे हाल ॥

दीनबधु रक्षक कहलाते, कालहु के भी तान ।

परम आद्र कर दया बचाते अघ राशि के गाल ॥

आत्मा राम को मन अभिराम को रट छूटे जजाल ।

पाप पिशाच से रक्षित करत बन कर पक्की ढाल ॥

वैद्य हरि के लिखो लेख जा शुभ नित होवे भाल ।

हृदयाङ्गण के भजन

हृदयागण के मृदु सिंहासन ह हरि आन विराज ह ।

सारी कृपा दु ख दारिद भागे भागत निशिदिन काल ह ॥

गति तव चरणे सदा रहु थिर यह सुंदर वर माग ह ।

प्रेमहु पियार प्रभु गुण गान करिये ॥
 मार हु प्रपचो मे चित्त को हटाय प्राणी ।
 सब मोह माया छोड ध्यान ब्रह्म धरिये ॥
 लका भी सदा से चली आई यह कुरीति रीति ।
 करें निन्दा सब भूठी वहाँ ना ही चरिये ॥
 सदा ही सुमगल पावन यह सध्या प्यारी ।
 बँध हरि गुण गाय भवोदधि तरिये ॥
 ईशकी गुणावली सुमन हिय धार प्रिया ।
 बाही के चढाय पोय माला प्रेम डोर की ॥
 साभ सबेरु दिन रात घटी पल बीती ।
 बीते ऋतु मास नाहि अम करु भोर की ॥
 कल के भरासे रखवा काम गुण गान का ।
 नाहीं यह सुनीति बात कहु मन मार की ॥
 मेरी मति नन नम प्रेम जन चरगनन ।
 "बध हरि" आश बाधे नाहीं बहु और की ॥

राम दोहा

राम कृष्ण के पद कमल हृदय कमल से मिलाय ।
 दु ख रत्न र पार हो इह मन मुघा पिन्नाय ॥
 उच हरि टढी बडी जगत पोत की छात ।
 प्रभु नाडिक के आसरे चढेवे भागी कहान ॥
 कान चक्र की देख क चलती गदा कराल ।
 अमर नाम गुण म प्रभु होजा नर तु निहाल ॥
 तुनसी मूर सुबास से हुई हरि मे गध ।
 प्रभु चरण मे लग गई पर मुट मोद प्रदध ॥
 कृपा हुई जगदीश की मैं पाया आनद ।
 गुणावली विभु प्रेम की गागा सच्चिदानन्द ॥
 सब आशा छुटती जभी तभी तुम्हारा आश ।
 तुम्हरी छोडे हायगी प्रभुवर चहु दिशि वास ॥
 राग द्वेष त्यज ए प्रिया । ईर्ष्या मान गुमान ।
 लोभ शोध पाखट छन दश मित्रेगे आन ॥
 मोह बडाई देखके उत्सुक नरका मन ।
 जाना त्या प्रभु प्रेम म ट ख नहीं व्याप तन ॥

सहित जीव भय विश्व को देवत हुआ उदाम ।
 जीव जीव को खात है, बिन ईच्छा प्रभु दास ॥
 कलि म प्रभु मानू नहीं नीति आपकी खास ।
 प्रभु प्रसन हं, दीनता, दख दरिद्री दास ॥
 प्रभुवर दास दरिद्रतो ना माने एस काल ।
 मन्दमति कगाल की बुद्धि चले कुचाल ॥
 भूखे भजन न होत है कहते लोग गुपाल ।
 कुछ भक्तो को दीजिए दाता दीनदयाल ॥
 विश्वम्भर तब नाम है अत्र वस्न सब देहि ।
 पाव तीन अत्र, तीन गज वस्न सदा सब केहि ॥
 मन सब दिन नहीं इश मे लगता मिन सदा ।
 हाता कुछ-कुछ अत्र मे व्यस्त ह यदा कदा ॥
 युवती रूप कुरूप हो तो भी मनहु विचार ।
 देवत निश्चय पिघलता घत अग्नि आगार ॥
 सेवन समरण नित बडे कामाग्नि की लोय ।
 जो चाहो बचना सदा सात्विक पथ मन खाय ॥

प्राणी गाठ भजन

प्राणी गाठ हृदय की खोल ॥ टेर
 लख चौगसी योनि भरमत पोया देह अमोल ॥
 सौदे तोले भूठ जगत के ईश नाम अत्र तोल ।
 तुलसी मूर, पोया मीरा ने प्रभु मिश्रत विपघोल ॥
 विष प्रभाव सब आधिब्याधि मिटि होगया कचन चोल ।
 गथि खालन का यह मन्नु है राम राम मुख बोल ॥
 सच्ची गाठ कोई एक खोलत भूठ वजाते ढाल ।
 प्रभुवर के दरवार जगत मे कभी न चलती पोल ॥
 "बैद्य हरि" प्रभु चरण सहारे करता है कल्लोल ।

मनमदिर की सवस्था

मन मदिर की अल बेली बूटी म मूरती प्रभु की राज रही ।
 हियमती बनेवर राम रोम मे द्वीप्ति उसकी आज रही ॥
 दुष्ट दु शासन पीडा से, तब कृपा पाहु बधू लाज रही ।
 जसुमति नद, भाग्यशाली नित आगण मरली बाज रही ॥
 याद बरहु नित प्राणी प्रभु, मिर बाल की विद्युत गाज रही ।

धनघोर घटा दुःख जजानो की, जीव नीडर, घर छात्र रही ॥
 प्रेम पिया स नैनो मे छवि निशि दिन तोरी विराज रही ।
 तब मान सरोवर माती चुगने "हरि" हसिती आज रही ॥

हरिजी तोरे भजन

हरिजी तोरे चरणन आन परा ।
 तुम दान भवसागर तारण नर तोरो आशरो । डेर
 बहु दिशि देखा सद्बिचार स मददगार तू खरो ॥
 पाप पिशाच हरन अध-किरपा तेरी जाय जरो ।
 तम पूरित कमज हैं कनेवर अब तो प्रकाश करो ॥
 कम बंध की कठिन डोरी म बंधो जीव सगरा ।
 अनुभव तारी शरण सार है अरु जग सब भंगरो ॥
 कठिन काल कतव्य देख मरो जीवन जाय डरो ।
 मति, देव की, उदर मध्य बिच नृपण का रूप धरो ॥
 तब यश विमल पताका फरने मम मन सदा फरो ।
 भाव सदा तब चरण भक्ति का हृदय कमल हू मरो ॥
 "बैद्य हरि" तन तीन काल की बाधा ईश हरो ॥

विश्वेश्वर भजन

विश्वेश्वर रक्षा करो तुमही रासन हार ।
 मेरी नात्र बचाइय नाव पनी ममधार ॥
 अत्र तो दया कर दीजिए प्रभु धीर बधान बाले ।
 दुनिया के जजाल मध्य फस निकला चाव प्राणी ॥
 पर कर्मों का भोग पबल है सत्य शास्त्र की बाणी ।
 तुम स नाविक जगत पीन स पार नगान बाले ॥
 जब रोगी के निकट मौत घर रूप भयकर आती ।
 बरु डाक्टर मन्ना बाल ज्यातिपी कुटुम्ब सधाती ॥
 कर उपाय जब हार थके तुम त्याधि नशान बाले ।
 मान बडाई गहू याता हित नर कर बहुत उपाय ॥
 कदम भास कछु श्रमाल्पता स सिद्धि करहु न पाय ।
 दुःखी दीन कतय भूट की राह बतान बाले ॥
 श्री तउपण अरु सुधा प्यासभय जब ही मताते जनको ।
 कष्ट नदी के बीच भवर मे नही धिर पाता मन को ॥

राम नाम का है आघार गिरिवर को उठान वाले ।
 सजन सनेही मुख साथी से तिन धन वा अपमान ॥
 प्रिया पुत्र मित आशा बाधक ऐसा होता भान ।
 श्रोधानल से दग्ध हृदय मे सुधा सिंचान वाले ।
 भव सागर की चपल तरंगें चाहती सदा डुवान ।
 वैद्य हरि के चरण कमल सिर धर के जगान वाले ॥

मन लगा दोहा

मन लागा प्रभु पद कमल नयन युवती के रूप ।
 तदपि विकार न उपजे अनुभव कहा अनूप ॥
 सगत के सदुपाय से निश्चय जीन अनग ।
 अनुभव यह प्रत्यक्ष है बच नित सुसग तरंग ॥
 रहसि देह रमणी सुहृत् कबहु नयन मत देख ।
 ऋपि मुनि पंडित मा सदा विवश भीन नहीं भव ।

पिता है भजन

पिता है निधन के धन ईश । टर
 पालन पौषण निन रखवारे विश्वम्भर जगदीश ॥
 जग मे नर बहुतेरे दबे कहने मैं हू अधीश ।
 निधन दारिद्र कभी न टूटा अगणित हुए महीश ॥
 नाम सत इनके कहन है मुरलीकेश गिरीश ।
 गदगद वाणी रत्ने प्राणी पूजन सदा हरीश ॥
 वैद्य हरि धन अनुसित पाया चरण कमल रख शीश ।

जिसने भजन

जिसने हरि पद प्रेम किया । टेर
 कलिमल नाशक पुण्य रूप फल अधिक तिहान किया ॥
 हरि गुण गा जा की अमरध्वज फरकी जे जगन जिया ।
 और हु तार आप उधार धर्य सुयश्र किया ॥
 जग की लाज हरि हित छाडि सुद मित धन अनिया ।
 मल रखवारे ऋपि मुरन के तिन यत् सिर राविया ॥
 प्रभु पद पवज धान पडे जग भूडे म अघिया ।
 लोक कीर्ति परलाक धम की अम्बुज राशि चिया ॥
 वैद्य हरि की हृदय मठी म बसते राम सिया ।

हरि आरती

ॐ जय जय सदा हरि ।

सभ फाड हिरनाकुश मारे नरसिंह रूप धरि जय
 राणाभेज्या मीरा मारण प्याला जहर भरि ॥
 हरि चरणा मत मीरा बाई पीया हरप करि जय
 चार करण तुलसी घर चोरी आये रात मझार ॥
 राम प्रभु ने रभा कीही खुद बन पहरे दार जय
 सत तुलसी ने सत्र बुद्ध त्यागा कष्ट राम को जान ॥
 शरण गही श्री असुरारि की कर गुण हिरद गान जय
 सूरदास न बाल वृष्ण गुण गाय लाख हजार ॥
 प्रभु प्रेम का अमर द्रव्य यह लेलो बुद्धि पसार जय
 अ तयामी सभी जगत के तुम खत्रारे श्याम ॥
 चरण शरण हू तेरी तो सत्रके पूरण काम जय
 दु ख दरिद्र भक्ता के काट तम हो करुणाधाम ॥
 पाभर जीव खडा तब द्वारे करता सदा प्रणाम जय
 करुणा सागर नटवर नागर सब सख आगर ईश ॥
 शकर प्रिय हो मुनिमन रजन शारद अरु फणीश जय
 भाग्य विधाता हा तुम सुख क देते सम्पत्ति दान ॥
 मै मतिमद अधम हू तो भी करते कृपा महान जय
 आत्मा राम पूरण काम शोभा प्रिय घनश्याम ॥
 यशुमति नद जगत उर राची अरु हिरदे बिच मान जय
 आरती जो हरिनारायण की प्रेम पूरण गाव ॥
 बैठ हरि सुख सम्पत्ति भक्ति ईच्छित फल पाव ॥

दोहा नास्तिक प्रांत

जन मन के बदले सदा बदले समय अनक-इनका स्वामी ईश है
 चानर सवका एक् ॥
 मानत जो नही ईश का ते नम पडे गवार-प्रवृत्ति काप होकर करे
 ईच्छित फलहू असार ॥

है घर का मेरा सागी भजन मिथ्यामोह
 है घर का मेरा सागी ।
 मातु पिता वा-धव सागी है सुतदारा मितरागी ॥
 धन वैभव भूमि सागी है मागी घर की आगी ।
 अम का पदा हिय पडा तब कोई न सागी भागी ॥

सागी हमारी वन की लकड़ी तन सग अग जलागी ।
 धम कम अघ सग चलेंगे अब तो साच अमागी ॥
 जब व्याधि "हरि" पीडित करती ज्ञान चेतना जागी ।
 तब जगदीश्वर पाद होत जब मृत्यु कालिमा लागी ॥
 नख पछनावा आत्म मदिरे यम की फासी आगी ।
 परहित कारिणी ज्ञान गुराणि बार बार समझागी ॥

सागी दोहा

सागी सागी सब कह पितामातु सुत दार ।
 मागी वन की लाकड़ी धम कम सतसार ॥
 पाप कम अरु व्याधि का आन पडे तन भार ।
 चाहत बाधव बाटन नही बटता लाचार ॥
 राजा रक ऋषि मुनि तन अपने के भोग ।
 खुदही देखे भोग ते सब साधन सब लाग ॥
 यह विचार मन धम से ले नारायण नाम ।
 नौका अपनी तारल भजु मन राधेश्याम ॥
 सब्दि चार सतसग से सम्मति मिले विवेक ।
 शन शन अभ्यास म जीतो मनहि चिन्क ॥
 मन जीते सब की विजय जान बुद्धि नर उर ।
 यह नेता बलवान है सर्वोद्रिय मिर ठाउ ॥

अब ता नन्न

अब तो जगपति मुना पुकार ।
 काम लोभ के महन मन म अरु ॥ १ ॥
 अगम अथाह पाप परि फारि ॥ २ ॥
 अब तो टारो वृषानिधि ॥ ३ ॥
 मति मन प्रवा ॥ ४ ॥
 सुख शांति की सुद ॥ ५ ॥
 जोर नही बनना ॥ ६ ॥
 बंध हरि क ॥ ७ ॥

जयति जय आरती लक्ष्मी रमणा की

जयति जय जय लक्ष्मी रमणा—सत्त वे पावक टुर टरणा ॥ टर
 सोनत ह शेष नाग शय्या—तरत सवा लक्ष्मी मैय्या ।
 छाया पगीन्द्र नित छय्या—जगत सन रहता है शरणा जयति
 हाय म शय चन्द्र राज—छवि मद्रु पाम गदा छाजै ।
 दश स दारिद्र निन भाजे—जीव व सब कारज सरणा जयति
 शरण म मै पाभर आया—करा अब मेरे पर दाया ।
 विश्व की हा तुमही काया—सभी अपदोष क्षमा करणा जयति
 तव गुण गान वद गाय—सुनत नर मुग्धुनि हर्षाव ।
 विश्वपति मेर मन भाय—नयन नित चरणन म ढरना जयति
 हो तुम तीन लीन स्वामी—बसत सब घट अनर्यामी ।
 अह तव माया अनुगामी—तुम्ही हो तीन ताप जरणा जयति
 कीर्ति सब सुर मडल गाव—ब्रह्म शिव प्रेम ध्यान तार ।
 तदपि तव पार नहीं पाव—आप है सय तारण तरणा जयति
 प्रभु हो तुम करणा सागर—भरण कर देो धन गागर ।
 मति मीरा नटवर नागर—हिय म निन प्रकाश करणा जयति
 वृषा से हरित भरित प्रभुवर—अभी ता करदो विश्वम्भर ।
 जगत के स्वामी कमलावर—विश्व के नित पायण भरणा जयति
 जग रूप विराट तरा है—जह सागर भू टेरा है ।
 धिर-हिम-पवत घेरा है—तह बहन श्वत भरणा जयति
 ल घूप दीप वपू रा—प्रिय मादक मृग मद चूरा ।
 यह नीराजन सब पूरा—मन मोद नहीं डरणा जयति
 मृदुगघ फूल की माला—डाली गल दीनदयाल ।
 "हरि" हृदयाङ्गण उजिमाला—दिया पाद पद्म घरणा जयति

जय जय आरती नदकिशोरकी

ॐ जय जय नदकिशोर ।

सुभग नान रत्ना कर भव भयहारी मोर ॥ टर
 वसारि देवकी के प्यारे तुमहो विश्वपति ।
 तव गुण महिमा गाये बडत नित्य सुमनि जय
 प्राण पियारे श्री वसुदेव के किया नद घर वास ।
 आनद धारा उमडी जसुदा घर म हुलास जय
 बालकृष्ण छवि व्याज विलोकी पूतना विपद् लगाय ।

मुखधन दिया प्रभु के प्राण पिथे हृषाय जय
 वेला शयन पाने पोढ़े कर उलटी शकटी ।
 दधि माग्यन भ टोर श्रोष रदा भकटी जय
 माखन दधि अरु प्रेम के भूखे श्याम करत कल्लोल ।
 भाड महि मव डारे ते यशुमति मन मोल जय
 गोकुल मव उत्पात मिट और छाया अखिलानद ।
 नद यशोदा ग्वालिनी मन म अति आनद जय
 मार मुकुट कटि श्वेत धु घरु तन भुगली छाई ।
 भालतिलक गोरोचन सब जन घलि जाई जय
 श्री घनश्याम पुत्र देवकी की कीर्ति घवल गाई ।
 धूप दीप कपूर स दत्रि माखन लाई जय
 समने हृदय कमल से मैने दी गोविन्द मुख माहि ।
 आनद उमग कृष्ण ने खाय मन मुलकाहि जय
 बँध हरि मन प्रेम नदी की बही मधुर धारा ।
 चरण कमल मै धाय आर बाधव दारा जय

विश्वपति की प्रार्थना

विश्वपति नाकश भव भयहारी हृदये घर सदा ।
 चरण त्राके नटिनी माया नाचती सब सपदा ॥
 नव नीर नीरद देह प्रतिभा विश्वमन नित मोहती ।
 मुकुट कूटल मुख अरुणता भाल मृगमद सोहती ॥
 शारङ्ग घनुष आजानुभुज उर भगुलता की रेख है ।
 कमल लोचन कमल मुख कर चिवुक भकुटी सुवेख है ॥
 वैजयन्ती गल सुशोभित पीनपट करि चमकती ।
 चक्र शख गदा सुदशन शक्ति नव छवि दमकती ॥
 मन भ्रमर यह कमन म पीले मधुर मकरन्द को ।
 मेघ पपीही तरसती तव दज स्वाति बूद को ॥
 स्मर दीन बधु सप्रेम भक्ति सुख निधि कमला वरम् ।
 विष्णु जगदीश्वर कृपालु सत्यानद क्लेवरम् ॥
 पाप तम दानव प्रभाकर कोमलाङ्ग शिव प्रियम् ॥
 नमति शुक्र सनकादि सुरगण ऋषि समूह जितेद्रियम् ।
 कथयति हरि बँध श्रद्धा शिर घरत पदरज कणम ॥
 गति रति मति चरणयो मागत चराचर जनगण ।

सौम्यभाव सर्वथा

सौम्यभाव मुख मण्डल साहे अघरन शोभा निराली है ।
 दशन को जुटने नर नारी कहैं सयानी आली है ॥
 एक सबी उठ मीठी वाली तिलक राम को काल्हि है ।
 सली सखा मनया है हर्षित आर बजावे गालि है ॥
 सजनी खुशी श्रीराम ज म की आजु मनम है घनी ।
 उलास पावन जनित सुखकर शोभा पावन अति बनी ॥
 जेहि प्रथम श्री ऋषिराज सह वह ताडका पल मे हनी ।
 "हरि श्याम रूप अनूप राम की देख छवि खिली हृत्कनी ॥
 मन चकोर । प्राथना अन्नर्यामी इन्द्रिय सम्बोधन पूर्वक
 मन चकोर नरा अन्नर्यामी दीन बहु प्रभु विश्व सृधाकर ।
 हृदय कमल वन विवसाने को अगणित रश्मि तेंज प्रभाकर ॥
 प्रज्ञा यामिनी मे उजियारा जगन्नियता परमेश्वर का ।
 घर तू ध्यान सदा धन धन हो व्यापक भवत अखिलश्वर क
 अहकार दानव तू हटजा आते है असुरारि देख ।
 क्षण म तव तोरी माया का नाश होय यह कपट कुवेन ॥
 आत्मा सुरसरि पावन धारा बहती अब तो कर कल्याण ।
 लगा आयुष्युरा जीव देह मे चेत हृदय धीमन मे जाण ॥
 नान सरोवर पय भरने का नव नीरद मेघो के राज ।
 सर्वे श्रीर अमरगण बाधा मटी ऋषि मुनि विश्व सुकाज ॥
 रसना पपीही स्वाति बू द हित टेर लगा तू प्रभु नाम की ।
 तप्या प्यास बुझेगी तोरी पाकर छवि उम करणाघाम की ॥
 नयन नेह का भर तडाग श्री जगदीश्वर पद सीचन को ।
 प्रभु पद प्रेम टारने हारे त्यज कामादिक नीचन को ॥
 सुनो काल घटलि अन्नापत्ति का और शब्द से नित भुज भोड ।
 ईश प्रेम शब्दावली धारा निक्से मुख मागत "हरि" गीड ॥
 त्वचा पान सग विश्वपति की महिमा मे तू करतें स्नान ।
 निमत छवि लोकेश्वर देग ऐसा मन में नित पहचान ॥
 जग विराट पुण्डित कानन गुण सुमन शघ की लेरी । ध्राण ।
 दीन दयातु लीलाधारी करने जम जम तव त्राण ॥
 बमद्वियो । तुम सेवा भाव से विश्वम्भर पद सपन सदा ।
 हा अनुगामी मन नता क नित्य माद नव जम मुदा ॥

शुक सनकादिक शेष मुनि शिव नारद करते सदा सुध्यान ।
मानव जन्म सफल करले तू प्रभु की गरिमा अरु गुण गान ॥
करणा मागर शोभा आगर विश्व उजागर तुम रखवार ।
मंगल सुख सम्पत् मुद मादका कृपा से भरना नित भडार ॥

रमना राम भजन

रसना राम सुधा घारा पी अमर बनाती है लेर
बडभागी जो जीव विश्व मे स्वाभिरुचि दर्शति है ॥
मोह माया के फदे को फस जब मिथ्या बतलाते है ।
फिर प्रकृति देवी इस बाने को जब स्वय सजाती है ॥
तुलसी सूर कबीर आदि ने पान किया अपन युग मे ।
स्थिर कीर्ति हो तरे जगत मे कहते शास्त्र सदा जुग मे ॥
कयो अक्सर जान का तू नर दे आत्मा पछनाती है ।
दृढता स पहलाद भक्त ध्रुव हृदय कोठरी मे डाला ॥
कष्ट महा पाकर भी दोनो अमर पता का की माला ।
पहनी रम्य कलेवर "हरि" यह छटा दिखानी है ॥

जय हो दीन दयाल आरती

ॐ जय हा दीन दयाल !

चरण कमल चित्तधरते बडभागी ते निहाल ॥ टेर
मन तव चरण सुरसरि घारा नित्य स्नान आनद ।
जगदीश्वर लोकेश्वर पाया आखिलानद जय
अघतम घोर निशापु उजागर हो हिम कर रात्रेश ।
दानव वन दावानल व्यापक नित्य रमेश जय
हृदय हम तव चरण सरोवर चुग्ने को मुक्ता ।
रहता अटन तीर पर सावधान युक्तवा जय
आत्मेन्द्रिय मन कमल तिलाने प्रभुवर पूज्य दिनेश ।
ध्यान मग्न चित नारद शुक सनकादि महेश जय
असित मगर-दु ख द्वारा-सुमगज स्तुति भारी ।
छाडू विहगपति घात ईश्वर वनचारी जय
नीट मृत्युगत पवड अमर ज्यो जानत तन मे प्राण ।
ईश कृपालु मृत्यु से जीव वरत कल्याण जय
अचरीक भवरन्द व्यस्त मुद तैमे पद तव ध्यान ।
करणा सागर सब सुख-आगर कृपा निधान जय

— 20 —

भव सागर गत नौका नाविक हो तुम विश्व पति ।
 तारे मुनि जन प्राणी प्रेम भरो रीति जय
 भूपति जगपति सुरपति पावन नाम तुम्हांग है ।
 कमलापति कलियुग म मोद हमारा है जय
 धप दीप नवद्य भक्ति स प्रभु गुण मुद गावो ।
 यद्य हरि श्रद्धा मे फिर प्रसाद पाजो जय
 गुण सम्पत्ति धन देहारे ईश नोः स्वामी ।
 घट घट के पहिचान दु छ अतवामी जय

फलपलशत तृष्णा नाशिनी हरिस्तुति

फलपल शत वय ममाप्त हुए तृष्णा प्राणी को मार रही
 अज्ञान जनित हिय कर्मत्र कलैवर दग्ध नित्य वर जार रही ॥
 मृग शा क तमय मृगतृष्णा नख चमक धूलि हो जात ह ।
 सच्ची व्याकुलता घम घाम प्याने के बठ म डार रही ॥
 पर त्र मानव चेतन जानी इस म क्या भर माया है ।
 यह व्याधि सापिनी कोमल देह म दश स्वविष नित डार रही ॥
 इसकी औषध सतोपधीर और प्रभु की पावन मवा है ।
 राग निवृत्त नर को यह म तप बन गुण गरिमा तार रही ॥
 एकान्तवास जन सेवा से मानव मानी बन जाता है ।
 सुदर विश्वभर आश्रुति ही जगमल नदी से डार रही ॥
 जब श्रायु पुरी होती है पछतावा म म बढ़ता है ।
 तब रोगावस्था नयन कुमारिका दग्धकार अ सु डार रही ॥
 मूर रु तुलसी भीरा को अनुभव था इसके मारन स ।
 हरि वद्य कृपा प्रभु की महनी जग बचना ठगिना उबार रही ॥
 धर कुलपति हो बाधव हित धावत पाप की राशि बटोरन को ।
 नही अतकाल अघ नाई बाटे यही विटम्बना मार रही ॥
 यह सोच भेराजी अडुलाया पी अमृत नाम अखिल पति का
 परमा शान्ति तृष्णा नाशिनी पा गुणगाथा धी उचार रही ॥
 कर पाप धम सुख दु ख अपण शुभ असुभ कम सब अपने को ।
 हरि ' जाने म हरि हा का हू यह मय सदा स्मृति मार रही ॥

लक्ष्मीकान्त प्राथना

नन्दमीकांत त्रन त भगवन विश्व पावन अतिप्रियम ।
 वन्द्यान नर नित शुद्ध मनमा प्रणत पाल नितेन्द्रियम ॥

विष्णु नारायण दिवाकर इस जगत को पालते ।
 कृष्ण माधव विश्व मोहन चक्र पाणि चतुर्भुज ॥
 अच्युत गरुडध्वज भज सफल जन्म दिवङ्गमे ।
 दत्तारि लामोदर मुकुन्द जनादन पीताम्बरम् ॥
 विश्वरूप अघोक्षज कटरणा के पारा वार को ।
 पदम नाभ मधु रिपु पुरुपोत्तम विश्वम्भरम् ॥
 जल प्रायिन नर कातक कर हृदय बन्द कपाट मे ।
 मुर मदन कसारि माधव कशव दामोदरम् ॥
 यज्ञ पुरुष पुराण पुण्य धार धति स्मृति ओजसा ।
 बन् मालिन श्रीपति उपेन्द्र देवकी प्रिय नदनम् ॥
 पुण्डरीक नयन स्वभू प्रभु ध्यान घर अभ्यास से ।
 शारङ्गीन बैकुण्ठ पति हृषीकेश पदमालसा वरम् ॥
 गाविन्द विध्वक्सेन शोभा घाम पूरण काम को ।
 मति रति गति पद कमल भागे भिषग हरि युग वरम् ॥
 नाम नारायण हरि के जो कहत नित प्रेम मे ।
 सम्पदा सुख मोद आत्मा ददति हरि आनन्द परम् ॥

विश्व आपत हरि प्राथना

विश्व आपत दुःख विनाशक याद कर हरि प्रेम से ।
 हृदयाव मन अघ हर प्रभाकर भजतु नर नित नम से ॥
 कमलापति पदमापति प्रभु स्वानुभव आदेश से ।
 विश्वपथ डगरी दिग्गते आत्मनेत्र सुवेष से ॥
 श्रीपति लक्ष्मीपति निज ज्योति गुप्त्र प्रकाश से ।
 कर रहे ब्रह्माण्ड दीपित मय विराट् आभास से ॥
 पद शरण गह तू प्रभु की व्याप्त ज्योति अनक से ।
 तर सते सुरगण जिह नित अमल मजु विवक मे ॥
 गुण मयी अनुरुम्पा जिमकी मोद जग म भर रही ।
 पायोधि भवभय जनिन वाधा रहित मानव कर रही ॥
 भाग्यशाली जन मनीषा अवगुणा मे डर रही ।
 नाम पथ भर उदर अपने पाप राशि टररही ॥
 तल सुतल जल भूमि जिमकी ज्योति पीकरजी रही ।
 भक्त प्रबरो की स्मृति धी प्रेम अमत पी रही ॥

इन्दिरा हरि प्रिया पति की विश्व माया छा रही ।
 उनकी सुईच्छा जग चरा चर मे सुगाथा गा रही ॥
 रजकणो म सजीवता अस्तित्व उनके खिल उठी ।
 वैद्य हरि नाभि हृदय म जागकर के मिल उठी ॥
 स-मन-दश इन्द्रियन सह लालेश पाकर हिल उठी ।
 हरि कृष्ण ज्योति चादिनी उन तन अ धेरे बिल उठी ॥

जयति श्रीनारायण सत्यनारायण स्तुति

जयति श्रीनारायणाम्या सत्यनारायण प्रभु ।
 रमाकांत श्री शेष शायी इन्दिरापति ह स्वभू ॥
 भूत्र सत्या चार शम दम विप्रगुण सतानद को ।
 व्रतविधि पचापति बही, धय अखिला नद को ॥
 भिल्ल ब्राह्मण घर विधि व्रत दय क मन हृपभर ।
 पूजाकरी सकुटुम्ब स श्री सत्य देवानद भर ॥
 उल्कामुख पथवीपति पदमा पति के ध्यान से ॥
 सपल जम मनारथ पा तर गया संत ज्ञान स ।
 सतान पाई वैश्य साधु प्रभु कृपा लीलावती ॥
 डूबत पति परसाद-पाया-सुता साधु कतावती ।
 तु गध्वज भूपति मनारथ बाधवा का पाय के ॥
 हरि प्रिया पति भक्ति से उत्सव किया हर्षाय क ।
 अपर जम सुदामा ब्राह्मण भिल्ल भी गुरराज हा ॥
 नपति दशरथ मारध्वज स्वायभ मनु महाराज हो ।
 घन विभव वादित मुफ्त सुत देत ह सौभाग्य को ॥
 सधमी नारायण सु सेवा मिलत हैं अहोभाग्य को ।
 मन मजरी क कुमुम अपण करहु दीनदयाल को ॥
 वैद्य हरि रम पद कमल शिर विश्व के महीपाल को ।
 ममार की सत्र सिद्धिया भगवान देत दाम को ॥
 हर मुसवा पीर पूजा प्रेम भजतु अनाश को ॥

सत्यनारायणजी की प्रार्थना

सत्यनारायण प्रभु का ध्यान नर नारी धरो ।
सुदमयी ससर्ग यात्रा युग कलि की तुम करो ॥
पार करन जलाधि जग के दुग्ग अघतम नीर से ।
विश्व ताविक के सहारे एस जनम म तुम तरौ ॥
स्थिर चेतसा कर पद कमल म भक्ति अणण आत्मजा ।
कल्याण वाली श्रीपति को मोद जग में है खरो ॥
मन्तति सुख सुभग सम्पत्ति धन सुहाग प्रभुत्व के ।
दाता अमर यश मोद मुद तावेश, जग नारी नरो ॥
विश्वजन दारिद्र्य आधि विविध बाधा ध्यातु न ।
पश्य नारद मन दयाद्र हो प्रभु चरण मे जा-परो ॥
स्वण सिंहासन स्थित श्री लक्ष्मीकांत मनोहरम् ।
पृथ्वाद्धिन बलविधि नर लोक श्रुयिवा मन डरो ॥
कथ सुमवा मत्य प्रभु की मन्त हो आनद मे ।
मृत्यु लोक निवासी सुनकर प्रेम प्रभु के नित गरो ॥
कुरु धूपदीप मु अरती बाधव महित उम लोक मे ।
लक्ष्मीनारायण सुधा कर का हिय से ना टरो ॥
रम्य मुरतर जाकी माया देत सब आनद है ।
बंध हरि धर पद कमल सिर जगत बाधा नही टरो ॥
शक्त चप गदा सुदशन धारते भुज चार हैं ।
इस कलिमन हागिणी छवि ध्यान नुर उर नित भरा ॥

ईश प्रार्थना

ईश तुम्हारे आश्रित सब जग ।
शताब्दिया स पा स्वतंत्रता भारत मानवत्रय दृष्टा ॥
रक्षा करनी हाथ तुम्हारे यही विश्व को मय दृष्टा ।
नय्या इसी डोलत डगमग ईश तुम्हारे आश्रित सब जग ॥
नृप शशोक सा पय चलाकर सुखी बनायो दुनिया को ।
उल्लेमानव की मति सुल्टी कर क जगादो दुनिया को ॥
स्वारथी जन से व्याकुल अब लग ईश तुम्हारे आश्रित
जिमम हित होव भारत का वही मूक सब को करारा ।
वर अविद्या घणा सभी से अम्युदय इसका कर ॥ ।

जयति लक्ष्मी नारायण प्राथना

जयति लक्ष्मी रमण विष्णु नाम आनन्द है भरा ।
 भवता रटल दीन बंधु आयु सब विषयनगरा ॥
 क्षीर निधि गृह्णवमुर के सोने सदा भ्रमुरारि हैं ॥
 धरतु समरथ की छत्रि हिय-स्वगसम सुखकारी हैं ॥
 शेष की मजुल परिधि चहु छा रही भगवान के ।
 शीश पर छाया फणो की छारही छवि आनके ॥
 शख चक्र गदा सुदशन तीक्ष्ण शोभा पा रहा ।
 पापिया के भुङ्ग अग्नि काल का वर्षा रहा ॥
 चार कर माये मुकुट कानन म बु डल चमकने ।
 सौम्य आनन तेज प्रतिभा सूर्य सम सिर दमक ले ॥
 भालत्रय रेखा बनी बन्तुरी मिश्रित मनय की ।
 भागी माकण्डेय मुनि स्तुति कछु दिव्यार्द्र प्रनय की ॥
 आप बाल मुकुट वन सोय थे बट पुट मृदु दले ।
 अटटहास समुद्र जन नभ पृथ्वी म सब कलमले ॥
 नर कमल पद कमल का अ गुण ले मुख कमल म ।
 भयज वायु नग हिमालय बहत प्रलयज अनन म ॥
 लक्ष्मी के सग रमण जिसका प्रलय भी महा शक्ति म ।
 होता है, नौमि बाल वृष्ण लक्ष्मीकांत सुभक्ति से ॥
 दाबती पद कमल कमल बँध हरि मन भ्रमर हा ।
 पान चरणाम्बुज किया मकरन्द-आत्मा अमर हो ॥
 राकेण जग रमाणांत का हिय ध्यान नर घर लीजिए ।
 विश्व तम रजनी उजागर का मधुर रस पीजिए ॥

श्रीराम हरे कीतन भजन प्रार्थना

श्रीराम हरे श्रीवृष्ण हरे हरि हर लोकेण वृपालु हरे ।
 केशव माधव गोविन्द हरे दामोदर नारायण भजुरे ॥
 अनाननता तन क्षेत्र बढी अह चिंता सापिनी मन हिय मे ।
 करती निद्रा नाश रटु श्रीधर हरि प्रेम गिरा सगरे ॥
 ससार व्यथा विष पूरित हा बल से तन नगरी घुस जाती ।
 तब अच्युत गोपी बल्लभ स्मर-दुःख रोग दशा सब दूर करे ।
 बु ठित बुद्धि सुविचारा से सतसगति अरु आचारो से ।
 होती-जब दूर भजहु मन से श्रीजानकी नायक पद पकरे ॥

भव काई से वचन की रटु श्रीरामचन्द्र देवकी नदन ।
 श्री वामुदव हरि वैद्य भजो त्यज काम लोभ जोभय-जग-रे ॥
 आनदाराम खिला गह म लख बाल शिशु लीला भूला ।
 अब तो श्री दीनदयाल हरे करयाद गोपाल दशा विगरे ॥
 गह पालन म सुत समरथ जब तेरा प्रिय नर हो जाता है ।
 तव धीरे-धीरे तप्या वो छेदन कर नाम बटार खरे ॥
 जिस पाप से धन प्राप्ति होती उसकी उलभन नही मिटती है ।
 तू ज्ञान से सोच पति मृत से दारा-पल-पास म बैठ डरे ॥
 सब स्वारथ का रोना जग म जीते को राजी पूछते है ।
 जब जजर देह प्रपूरित कफ तन निकमे से सब जीव लरे ॥
 अब चेत तू धन मद मे भूला सच्चा माग मोह माया फस ।
 कुरु गीता ज्ञान मुरारि हरे भव जलधि ईश्वर नाम तरे ॥

भजु जगदीश प्रायना

भजु जगदीश अखिलाधीश नित नम शीश मोद करम ।
 करुणा सागर सब सुख आगर पान उजागर दु ख हरम् ॥
 हिय आराम करुणा धाम मुनिमन ग्राम नित्य चरम ।
 भजु जगदीश ॥
 बशी मुख धर आताहलधर स्वामी चराचर ब्रह्मपरम् ।
 राधा स्वामी अतर्यामी पदहु नमामि धय नरम ॥
 भजु ल वेप सुन्दर वेप नमति सुशेष सदा-हरम् ।
 भजु जगदीश ॥
 पवज नयन वासुकीशयन सब सुख अयन मुकुट धरम् ।
 मृग मद भाल यशुमविलाल मदा वृपाल बलेश जरम ॥
 सु दर भवुटी करननि लकुटि गलहु दुपट्टि विश्वभरम् ।
 भजु जगदीश ॥
 कु ज विहारी लीलाधारी कलिमल हारी हरति डरम् ।
 श्रीवाभरण कुण्डल करण मृदु वर चरण स्नेह भरम ॥
 कटि पीत पट प्रेम वित्त रट गगा मजु तट लोभ टरम् ।
 भजु जगदीश ॥
 गिरि धर धारी मुनि मन हारी आपत टारी पाण्डु वरम् ।
 चक्र सुदशन कलिमल धधन अघतम कपन मोह तरम् ॥

गीता ज्ञान निमलमात्र आत्मा दान धर्म धरम् ॥

भजु जगदीश ॥

जयति रमेश विष्णु प्रायना

जयति रमेश णटवर धप नमति अनेप जीव सदा ।

जय जय स्वामी अतयामी तव पद गामी जीव मुदा ॥

जय अतिनेश्वर जयति सुरेश्वर जय जगन्नीश्वर माद एता ।

जयति रमेश णटवर धप नमति अनेप जीव सदा ॥

जयति दयाला जयति वृषाला जपुनित माता शाभा धाम ।

जय अमुरारि सख सुगकारी कुज विहारी पूरण काम ॥

जय कमला पति सदा गत्यमति दाना सुगति प्रियवर राम ।

जय सर रक्षक दानवभक्षक पूज्य सुयक्षक प्रिय नित माम ॥

जय वनमाली हरति रजाली दुख अध वाली लावेश्वर ।

जय मुक्त सागर शाभा आगर ज्ञान उगागर परमेश्वर ॥

जय जय भानु पाप वृशानु नमशिर जानु अमरेश्वर ।

जय जग पावन सुरमुनि भावन काम लजावन विनुधेश्वर ॥

जय धनश्याम नित्य ललाम जग बल धाम विश्व पति ।

जय सुर नायक सख सुग दायक मम ममपायक हृन् नुमति ॥

जयति कमल मुख हरति भवज दुख अमरा नद सुख दहि रति ।

जय प्रिय शरु सदा सुगकर रमा रमण वर नित्य प्रति ॥

जय सुख सिन्धु लज्जित ददु अमत बिन्दु सदा वरम् ।

जय अध माचन शोच विमोचन मगमदरोचन भाल धरम् ॥

जयति मुरारि गिरीवर धारी पाप तमानि निशा चरम ।

जय बशीधर वैद्य हरि शिर सदा परशुधर दहि वरम् ॥

राम जन्म शोभा वणन

राम जन्म की खुशी आज सखि घर घर छाई है ।

बडभागी दशरथ रागे कौशल्या माई है ॥

दिव्य लोक से कुमुम माल परी ले वर्षाई है ।

दशरथ मन आनंद उमग की शुभ घडी घाई है ॥

हृपिन नर पति दत्त प्रजाजन आज बघाई है ।

कौशल्या डिंग सखी सहेली मगल गाई है ॥

रोरी केशर पीत हल्दी की गन्ध सुहाई है ।

याचक बन्द को परम प्रेम भणिए लाल बटाई है ॥

भूपति शीश त्रिवा गुण पद पर अति हर्षाई है ।
नीता म्बुज मुच नयन देय प्रिय रति नजाई है ॥
गत अनग रावेश पूण सी सुदर ताई है ।
योद्धावर हा राम छवि "हरि" मन मे बसाई है ॥

मुखदराम के भजन

मुखदराम के सुदरना की शोभा आजु बनी ।
अरुण अधर पवज नीचन की देवत प्रभा बनी ॥
गुन नाशा मजुल गण्डस्थल मंद हास्य गजनी ।
शीश मुकुट कु टल कानन म भनवत दिव्य मनी ॥
हाथ घुपु मृदु अ ग श्याम है बटि पट पीत तनी ।
उर साह बजती माल दमपत ह दत बनी ॥
"हरि बलि हारी ऐसे राम पे हो के बना घनी ।

भिषक्कर रामध्यान भजन

भिषक्कर रामचन्द्र को ध्यान ।
शिव शकर नित धरत सदा ज्या करते हैं यश जान ॥
तुलसी दास ने बटे प्रेम मे कियामुचा का पान ।
मीरा करवे हुई कृष्ण मय ममभ पूण कल्पान ॥
बैद्य हरि कर रात दिवम तू अमर अमिठ यह जान ।

मै तो समुक्ति राम तिलक

मै ता समुक्ति रही मन माहि ।
रामतिलक का मोद सबहि मनु आभपराहि सजाहि ॥
लेले तिलक थाल गीरोचन कु वरि सत्र हरपाहि ।
मदमति बुबरी बैनेयो थो बुरी सिग्गावन दीही ॥
ज्यो पवज गत अमर मनारथ गजहि तोर हरलीही ।
नही भरोसो देवगति को ऐस सु-सम सखारी ॥
दनराज अजुधा का, ददी कानन आज्ञा लखीरी ।
विधि विपरीत हात जा के हरि भेटन कोई न हारा ॥
प्रिय सखा पितरौ त्याग चले वन लखन रामसिय द्वारा ॥

जगत के राम भजन

जगत के राम एक आधार ॥टेर

शदि द्र ख कठिनता मे यह बालत नर हर वार ॥

उर्वी न भी देख विनय नी बढा पाप का भार ।

रमते योगी सदा राम मय लख निशिदिन ससार ॥

“हरि” मनोरथ सबके पूरे एक राम अवतार ।

श्री राम चन्द्र राम राज्य स्वाराज्य मूल

श्री रामचन्द्र कृपा निधे करुणा के सागर है प्रभा ।

भज प्रेम से नर तू सदा सीतापति है जो विभो ॥

ससार मे मुख राज्य के व आदि नर वर भूप है ।

उनके चरण चिह्नो प चलते वे धम के स्तूप है ॥

यदि चाहत सुख को जगत म जीवनी उनकी मना ।

विश्व म हागी समद्धि तब प्रकृती का बैसी बना ॥

फिर आय भारत की यह जननी फूलती फलती रह ।

वनु मा होशस्या श्यामला यह दु ख को हरती रहे ॥

प्रजातन का जहा रूप था आर ध्यान था सुबिचारका ।

होता सुकाल जहा सदा दृढध्यान था सदाचार का ॥

सबकी थी इससे विमल बुद्धि देती शुद्ध प्रकाश थी ।

मर्याद म चलते थे अपनी दण्ड की भी त्रास थी ॥

हात थे मानव दीध जीवी पालते मयम को वे ।

शुद्ध घत और अन्न दुग्ध का ढालते साधों म व ॥

रक्षा जहा पर गोधनो की रात दिन होती सदा ।

मानवत पालन व उनका कर के हाते थे मुदा ॥

यही हतु था मुख राज्य का गुण गान जिसका आज है ।

पर युग के वश म हो व नर मर्याद मुक्त समाज है ॥

इसस जो आवि व्याविमी बढती सदा ही अनक है ।

“हरि” राम व चल चरण चिह्न पे सुख का कारण एक है ॥

मम मंदिर आये भजन

मम मंदिर आये राम ।

सावरि मूरत धनु पाणि ह अखित लोक सुख धाम ॥

मजुल नामा कपोत भ्रूपर लाजें कीटिशत काम ।

कौशल्या दशरथ के सवम सीतापति श्री राम ॥

सिना दूध नव नीत माहिन प्रिय व्यजन रचे ललाम ।
 बिठा दीनधन हृदयासा पे पर ने रवि अभिराम ॥
 सतन घन राजीव विलोचन रुचि रुचि खाय राम ।
 नीराजन और धूप गंध स पूजें आठो याम ॥
 सखिराम की अद्भुत शोभा देख घम्य सब वाम ।
 "हरि" निछवर राम छबि पर प्रात मध्य और शाम ॥

आये रावण भार रामागमन विजया दशमी पर
 आये रावण भार श्रीराम सखि घणो ह्य हुयो ॥ टेर
 पुर नर नारी मातु मब पूछे गढ लका की बात ॥
 कैंने तो तुम निशिचर मारे और छुडाई सिया तात सखि
 बोल राम सजहि समझा के सुनो लगा कर ध्यान ।
 पहले लक जग हनुमत ने सीता की सुधि देई आत सखि
 कर पूजा शकर की हमने सागर सेतु बघाया ।
 उतरी सेना भालु कपि की डेरा लक डलाया सखि
 कु भकण और मेघनाथ थे सूर बडे बल वान ।
 हमने मारे तोरी कृपा से हिये माहि शर तान सखि
 शिव को कर रावण न राजी बहुत लिये वर दान ।
 ध्यान चुका अमत नाभि का सोखा मार के बान सखि
 रावण सूर बडाभारी था असुरा का सिर ताज ।
 देव सुखी कर भार भूमि हर मारा दशमी दिन आज सखि
 आयो शरण विभीषण म्हारी दे ताका का राज ।
 पाई विजय दशानन पर हम इन कपियन क वाज सखि
 पाय विजय सीता ले हमने कर पितु वचन प्रमान ।
 आय चरण तुम्हारे देखन भरत वडिन प्रण जान सखि
 चरित राम का गाकर नारी नर हो सुखी सुजान ।
 ओज तेज "हरि" बडे मूरता गह घम का हो जान सखि

सखि तिलक राम राज्या भिषेक वणन
 सखि तिलक राम को आज खुशी घर नगर मची ॥टेर
 कु वरि मन आनद घणा है अजुधा नगरी आज ।
 नेले थाल फूल गोरोचन कु कुम मृग मद साज खुशी
 मंगल गीत सुनावें नाचें हिय ह्य है भारी ।

मधुर वाति से मंत्रहि रिभावेँ ददे कर बरतारी सुशी
 युवता वाला प्रीडा सबन कर अनुपमशृ गार ।
 लटवा राम नाम का मोती गले प्रेम का हार सुशी
 सुन्दर गीत बघाई गावेँ सब गिति सधि गहेनी ।
 राम रग मे सबहि राची घन ज्यो टूफण मरनी सुशी
 फुदर कमा खिले सरवर पर श्राद्धगण बंद पने ।
 महतन शोभा गज मुक्ता मणि नित नित नर्त् बडे
 वाम अ ग श्री सीता साहे धाता चमर डुलावेँ ।
 रामसिंहासन बठे हस मुख शोभा कहीं नहीं जाव सुशी
 नृत्य मोर मृ जन मधुतर का पून उठा श्रुतुराज ।
 सुखी प्रजा आनंद भगन थे सब जग साचा सुराज सुशी
 सत्सव राम तिलक का सानी जो बोई नित उठ गाव ।
 मोद प्रेम आनंद एकना "हरि" उसवे हो जाव सुशी

विराजो राम भजन

विराजो हृदया सन म राम । टेर
 शीश जटनि बना मार पध का कीट काटि छवि काम ॥
 वैष्णव तिलक इटु मुख चमक पीत छवि ज्या दाम ।
 कमल नयन सरसिरह लोचन मद हास्य सत्र माम ॥
 गल मनिमाल कानकु डल है चिबुक चित्र की ठाम ।
 पीताम्बर पट शर घनु पानी कटि तरकस हैं ललाम ॥
 पाप नशावन मजुल पावन राम-योगी हिय नाम ।
 श्याम कलेवर मोहिनी चित बन नित्य पाप रज माम ॥
 बैद्य हरि के राम पियारे जप घट प्रातहु शाम ।

राम नाम हो भव की नौका

राम नाम है भव की नौका । टेर
 ध्रुव प्रह्लाद अम्बरीष शबरी चडे जान कर सुन्दर मौका ।
 नानक तुलसी सूर कवीरा जग गुरु शकर भये अशोका ॥
 रति देव मुनि सबहि विभीषण सदा ध्यान से रहन विशोका
 धनु धर राम सिया शोभा को मन मंदिर म बिठा दे चौका ॥
 कम योग के नित निरखन से कट पाप सुल उपजे भौका ।
 राम राज्य आनंद भगन थे ऋषि मुनि प्राणी अह सब लोका ॥
 यम के दूत अजामील पकडन घाय राम के नाम ने रोका ॥

बैद्य हरि चढ गया समझ के जीवन क्षण भगुर दिन दो का ।

अज नयन भर राम राज्य शोभा

आन नयन भर दन लेहु सखी शाभा सीताराम की ।

गुरु सिष्ठ उपदर्शाहि दुख कर सुनहु गोल अनी कान की ॥

रासिहासन राम विराजे वाम मोहिा श्री जानकी ।

आना चमर डुनावें तीन। पग चम्पी हनुमा भी ॥

चहु दिशि विषमी सुमन पक्क के शाभा घणी पच जान की ।

कर धनु कटि तरासघारे मव वान्ति है मगल खान की ॥

चारु तिलक सुंदर अ-नासा कु डल मन बन दाम की ।

उरभुज सुभग सुरढ अ ग अ ग हैं उपमा लाजें वाम की ॥

विद्रुम मुक्ता दिव्य मणि विच मुकुट हेम अभिराम की ।

ब्राह्मण चंद पढ़ें नित प्रातर्हि सामगान मधुरान की ॥

भाचन मागि अयाचक हा वें ईच्छा पूरण काम की ।

नित नित नूतन गौरी बाला गावें विशोरी शाम की ॥

प्रजातत्र का चहु सुराज है भाद प्रणाली श्री राम की ।

बदीगण मागध नित गावें हिय मगल हरपान की ॥

पीत वसन मृदु कष दुपटिया रेशमी पहिनी पाम की ।

कमल नयन सर सीम्हलाचन मात योद्धावर जाम की ॥

हेम वण सत्री जनक दुलारी शोभा खानि लताम की ।

शासन करनि सात्वना दते मगल मोद वधान की ॥

हृदय मंदिर की कुसुम थली म ठौर बनाया जान की ।

बैद्य हरि म आन विराजो पृत भवतु काया चाम की ॥

नर आपत काल राम नौका ताल कसूरी

नर आपत काल सहारा देती राम नाम गीवा ।

निया मिन सुत माल घग्नि सब दु ख नही बटवाते ॥

यही सोच कर याद किया कर आया है मौन

पूव जम की पुण्य सीढी पर टके रख निज पाव ॥

चरण पष्ट का तभी छोडती आगे घर के जलीका ।

मोह ममता उपजान वाले बध व धु नित आते ॥

जब डूबत नदी दु ख शोध की करत जीव शोका ।

चन काल का नित या चलता सब ही पिसते जाने ॥

पिसने की भव तरी बारी जीवन दिन दो का ॥
 ईश भजन ही चिन्तित्सा इसकी कर मन नित सनोप ।
 'बँध हरि' चालीस वष भ जानत रहू भगोका ॥

राजा सिंहासन भजन गीत

राज सिंहासनासीन राम की शोभा बनी अपार । टेर
 मुकुटपगी हेमाभ नीलमणि मुक्ता विद्रुम सार ।
 शख पटी लटी सजी वेश की कू डल की भनवार ॥
 मस्तक धँपणव रेख तिलक की रची मुसजन हार ।
 उनत ग्रीव सजी कर धनु शोभा हृदय है मुक्ता हार ॥
 कर प्रगड मणि बाजू बंद की शोभा रची रत्न नार ।
 कमल नयन कमलाननहि पर लाजें कोटि रति मार ॥
 मनहु सौम्यता धरे रमापति छोडत भ्रमृत धार ।
 बँध हरि भुज पसार लेटा पद पवज प्रभु द्वार ॥

बँठे मजु राम राज्य मे प्रजातय भ्लाकी

बँठे मजु सिंहासन सीताराम राजधानी
 करें चर्चा मुद प्रजा के सुशासन की ॥
 भ्राजाकारी भात नित चमर डुलावें मृदु ।
 महिमा भएत ऋषि मुनि श्रीर दामन की ॥
 रघुवर बोले सुनु जनक दुलारी प्यारी ।
 प्रजा के मुखह सुनी बात तोरी रावन की
 ऐसी नीति नए लोफ सीना रही पर घर
 तोमी राखी राम पाली नीतिरी दु शासन की ॥
 एसी सुन गाथा मोरे ि ये म गलानि हुई ।
 दूर करने की मैंने बुद्धि मे विचारी है ॥
 जाहु तुम रहू ऋषि वाल्मीकी आश्रम ।
 लखण के सग वन मैंने मन धारी है ॥
 जानकी ने आना धारी शिर रघुवर की ।
 मजुल प्रमोद हिय भारत सुनारी है ॥
 ढरि धार भ्रमु वन रामहु सीता के नैन ।
 'हरि' के ढर कि गई नयन दुधारी है ॥

शिव कह गिरिजा राम चरित सार वणन
 शिव कह गिरिजा सुनो प्रेम मे राम प्रभु की सहनानी ।
 दशरथ कौशल्या ने की हा पूव ज म तप महा प्रबल ॥
 मागहु तो सा पुत्र गेह म तथास्तु कह शारंग पानी । टर
 देव चतुभुज कहति कौशल्या तात करहु छत्रि शिशु लीला ।
 शिशु रूप कर रादन प्र नु ने क्षण मे धारा रजधानी ॥
 मोहन लोना कर नित प्रभु ने मोहे मातु पितु सब जा को ।
 पकज नयन रम्य मुग चंदा बलि गया शोभा छानि ॥
 गाधि तनय मख रक्षा हित ल राम लगन को अपने राग ।
 मारीच सुबाहु हती ताडिवा देख ऋषि मन हर्षानी ॥
 धनुषयन भ गय जनक के गव जिया भूपन का दूर ।
 धनुष भग कर व्याही सीता मोद जनक हिय महारानी ॥
 लखसित वेश भप दशरथ ने रामराज्य की सुविचारी ।
 केकयी राज भरत हित मागा राम वनहि भोजन ठानी ॥
 छाया शोक सकल अजुघ मे क्रिया भूपने सुर पुर वास ।
 मनहु मनोरथ मनुष कमल गत गजहि कर धीही वन हानि ॥
 ऋषि मुनि मन आनंद होत नित रामलखन सिय सुरसरि वास ।
 चित्र कट म कण नाक भग शूपाखा मन अजुजानी ॥
 करि पुनार तर दूषण दिग जब रण हित अये वे बलवान ।
 मार राम ने सगति दीही सुर मन मोदहि अनुमानी ॥
 रावण सुन कटी स्वसा नासिका सीता हरन मनहि म धार ।
 कपट हेम मृग प्रो पित करके लखन राम गये वन जानी ॥
 माधु दप म हर सीता का मग पर गोघ हितु के काट ।
 अशोक तर तर थाप जानकी सोपी दिजटा मन कानी ॥
 लखन राम शाका कुल मग मे गोत्र जटायु की गति जान ।
 वन मिथिलश कुमारी दूढत मन मह शोच नयन पानी ॥
 बरी वन म सुग्रीव भिनता मकट श्री हनुमान के साथ ।
 वाली मार सुग्रीवराज्य दे कर सुधि सीता जिय जानी ॥
 उल वणन कर ऋषपति ने हनुमान को भोज लव ।
 दे मु न्दरि सीय सुधि मगिले लका जारी सुभर मारी ॥
 चमू चड उल भालू चन्दर की सेतु बाध मारि (११ ११)
 शरण विभीषण असुर पति को राज गर ११ ११ ११ ।

धु भक्ता घननाद दशानन मारगिराय रण मैदान ।
 ले मुद जनक दुनारी चाले विबुध ह्य सब सुग्य भानी ॥
 चढ सानद विमान पुष्प के सहित सुभट मंत्री रघुनाथ ।
 मगल मति राम पधारे भरत मातु सुग्य उपजानी ॥
 प्रभु का मुबुट मजु पहिना कर द अभिषेक गुरु महाराज ।
 मुदहि घ्रात नर नारी मातु मव वाद्य बजत हैं गुग्य सानी ।
 चहु श्रुतु राज सुपुष्पिन गिरिजा ब्राह्मण बंद सुनाय रह ।
 फनित हरित वसुधा नित नूतन उपजाती अमृत पानी ॥
 राम चरित गाथा तुलसी की कथित वैद्य हरि न गाई ।
 नित नित नूतन नहीं पुरानी देनी सब गुग्य सब प्राणी ॥

प्रभु रमापति राम कालीन सती जम गाथा बनजारा ताल

प्रभु है रमापति भय हारी सुन गिरिजा बात हमारी ।
 वे जन रक्षक भय प्राता मम मानस मजु त्रिधातारी ॥
 नहीं देखत तपित हमारी सुन गिरिजा वान हमारी । टेर
 फिरें सिया छू टने वानन सुर मुखी हनु बन बन री ।
 कर प्रत्यय शैल कुमारी सुन गिरिजा बात हमारी ॥
 यदि आना स्वामी की पाऊ ता कर पारख हरपाऊ जी ।
 मोहे जाने दो त्रिपुरारि सुन गिरिजा बात हमारी ॥
 शकर ने मन म जानी गौरी प्रभु माया भुलानीजी ।
 नहीं है मारग शुभवारी सुन गिरिजा बात हमारी ॥
 गौरी ने रूप सिय घारा कर जारे गम महिभाराजी ।
 बाले शकर कह प्यारी सुन गिरिजा बात हमारी ॥
 सब जिव समाधि बल जाना गौरी से प्रभु अपमानाजी ।
 नहीं हो तब सग हमारी सुन गिरिजाबात हमारी ॥
 शिक्ष दक्ष यन अपमान लख तन योगाम्नि जरानाजी ।
 तब जम हिमालय पहारी सुन गिरिजा बात हमारी ॥
 मैं पूव जम का गाया तब जम राम की मायारी ।
 मैं धरी समाधी भारी सुन गिरिजा बात हमारी ॥
 सती जम "हरि ने गाया हो राम मे प्रेम सवायाजी ।
 दाता नगल सुख कारी सुन गिरिजा बात हमारी ॥

लख राम धनी भजन

लख रामधनी राकेश को मन कुमुद सदा खिल जाव । टेर

राम हमारे उपवन पकज के हैं सय प्रभाकर ।
 मन मराल के मान सरोवर रति पति छवि लजावे ॥
 हिय चकोर के सरस सुधाकर भकुटि भ्रमर के मधुमकरद ।
 प्रिय वाणी की सुकोमल कोयल सुनत देख मन भावे ॥
 मोह यामिनी प्रकाश कर्ता मोद सुरसरि की मधु धार ।
 कलि कल्मष नाशिनी रविननया स्नेह सुधा सरसाये ॥
 नोय सापिनी खान गरुड हो नान नदी की सुंदर लहर ।
 वैद्य हरि जग का सजीवनी प्या प्या अमर बनावे ॥

सोहे युगल छवि सियाराम भजन

सोहे युगल छवि सियाराम की । टेर
 केहरि रत्न जडित आसन छवि बैठ लाज शत काम की ।
 युगल छवि बनी मन पपीहे की स्वाति वू द अभिराम की ॥
 चित्त वत्ति नरवी वियोग हरि ज्या शोभित छवि भान की ।
 पुष्टरीब हिय मुकुलित कारी शोभा खानि ललाम की ॥
 हांपित हिये लख विकसित कनी सब रूप कुरूप सुवाम की ।
 मृदु मुस्वान भरी चितवनध्रू-दण्टि ठगी लख माम की ॥
 मुखरित निखरित सियाराम दिग फिरें बधू सब गाम की ।
 बद्य हरि मन मराल लालमा मुक्ता छवि युग खान की ॥

कभी मन गावे कबित्त

कभी मन गावे मेरा राम गुण गरिमा ।
 कबहु मोहित श्रीकृष्ण गुणावली ॥
 अभी कर मुक्त जीव अपना हरि तू वैद्य ।
 विष्णु गल माल बन मोती मुक्तावली ॥
 आवे कभी चित्त मूर तुलसी की देखा देख ।
 सू घ ईश गुण की गंध सुमना वली ॥
 पाकर दिनेश तेरा हिय मन पकज ।
 सुमन बिलावे ईशान कर उनावनी ॥
 दृढमति धिरमन ईश के गुणो को रा ।
 विन अहंकार जीव सत्ता भी नशायगी ॥
 काम मद शोध लोभ प्रभु क चरण का ।
 कर हिये तोरे प्रेम ज्योति जग जायगी ॥

घड़ी पल नग शिग्न शोभा हू प्रभु की धार ।
 शांति सुलता तवमन लहरायगी ॥
 ईश गति ईश भक्ति ईश का सहारा पाके ।
 मुकुलित पगड़ी हृदय मिल जायगी ॥

जय राम प्रभु राम प्राथना

जय राम प्रभु जन मुख दाता प्रियतम हा जनक दुलारी के ।
 सुरमुख मुनिमुल जाहित मारे यातुघान लका क तुम ॥
 भार हरा वसुधा का तुमन भक्षक दु ग महामारी क ॥
 ग्राहि ग्राहि सब विश्वमन्त्री जब भ्रमुरा न उत्पात रिया ।
 देव पथिवी सबकी सुनने वाले प्रायना प्यारी के ॥
 मममन अतिगन चरण कमल तव मडराता है नित हर्षित ।
 पद सरोज लख दारिद भागे शिवमानस सचारी के ॥
 म पपीहा तुम स्वानि बू द हो मैं चकोर तुम हा चदा ।
 रक्षक वन चीर होकर "हरि" द्रोपदी पाण्डव नारी के ॥

हियमम राम भजन

हिय मम राम नाम धुन नागी ।
 मृग तपणा जग जजाला स कुछ कुछ हुआ विरागी ॥ टर
 गहरे पानी पठ देख मन जलती काल की आगी ।
 स्वारथी जग की देख महिमा भक्ति बुद्धि भव जागी ॥
 बाण चक्र क सभी कलेवा होत नित सब दागी ।
 कछु हरि चर्चा कछु गह पालन करत मदा सुरागी ॥
 नित नारायण भगन निरतर ऐम विरले भागी ।
 वैद्य हरि अभ्यास योग से नारायण का सागी ॥

सखि आज विजय कर राम लका विजय वणन
 सखि आज विजय कर लका नगरी आय राजा राम ।
 घर घर मंगल छाया सब के बात बनायें नारी ।
 उत्पाती रावण इस जग स आज गया पर धाम सखि
 दशमुख वृ भक्षण दोउ भाई पाकर वर बल वान ।
 हुए जगत म ऋषि सुर नासक ग्राहि सुनी सब याम सखि
 शुभ बेला शुभ तिथि नखत की विजया दशमी आई ।
 दशकधर की हुई पराजय विजय राम के नाम सखि
 युद्ध चरा बहु काल मिलन की भरत स बला आई ।

चले राम गण सहित सीय के अपने अजुधा गाम सगि
 जब से विजया दशमी मरनित सब ही जन के मन म ।
 धम अथ और बहुत सफलता पूरा होय सब काम सधि
 जब मे सब ही वर मनाते दशहरा बडा त्योहार ।
 बिना पूछ सब सिद्धि धाना अनुभव ऐसा माम सगि
 राम विजय से हुई सभी की विजय मुनोरी प्यारी ।
 भगल गान सदा मह सब के होवें प्रात अरु शम" सरि
 राम प्रेम की जय लक्ष्मी यह वैद्य हरि ने गाई ।
 मन् वाद्धित सब भगल दाता राम ह पूरण काम मधि

भव दुःख । कवित

भव दुःख जनित री । रोग दुबलता को ।
 राम नाम चूण शतावरी का चाहिए ॥
 पान करने से ही पुष्टता अमिट भारी ।
 सुलभ सर्वहि ठौर चाहे जहा जाईय ॥

जनपद ध्वसकाल पूव सचय कर ।

बिन अनुपान जो चाहे वसे साईय ॥

रोग दुबलता को भेटन म अद्वितीय ।

वैद्य हरि खाय और मित्रो को खिजाईय ॥

पाप पयो मे तेरे मन मधु कर राम ।

प्रति पल मोद भरा नित मडराता है ॥

मोहिनी मरुत तोरी अजब सुहा नी प ।

लिय फूल माल हिय "यादावर जाता है ॥

सारे दुःख मुख खानी रूप म बदताने मे ।

ओडासा सकत पा मोद दन आता है ॥

इसी बडी आश पे खडा खडा वैद्य हरि ।

जाडे दोना हाथ तारी प्रारथन। गाता ह ॥

कुछ क्षण दोहा राम

कुछ क्षण कुछ पल कुछ समय कुछकाल मुविचार ।

राम नाम चित्तन प्रिये । जग म अमृत धार ॥

बिन गुरु मुख क्या है प्रिये । समभन पाया आज ।

चित्त टिकाया राम पद वे सब गुरु के नाज ॥

राम नाम मे चढ प्रिये ! देखो जगत विराट !
 महिमा व्यापक ईश की जल धल नभ सघाट् ॥
 यही रूप सानार है जलधि हिमालय राज ।
 थल के व्यापक चर अचर और असभव साज ॥
 भाषा जगपति देवकी व्याप रही सबत्र ।
 स्रष्ट मोचन नाम भी है उनका सबत्र ॥
 भाग्य विधाता जगत के राम हैं पालन हार ।
 उ हैं बधु क्षण प्रेम से भजु मन बारम्बार ॥
 म या नटिनी नाच के माहती पानी जीव ।
 जो देखे मोहे नही व ही रहे सजीव ॥
 सब पन ग्राह्य ईश हैं जाहि रचे सो लेहु ।
 बोइ लेता तरन को कोई डूबत बेटु ॥
 जग भूठे जनाल म फम ने से भी दु स ।
 छोटत भी दु ख ऊपजे चहु दिशि दु ख ही दु ख ॥

प्रभु की पावन नगरी अयोध्या दशन
 प्रभु की पावन नगरी आई चलो मखी दशन करने को ।
 राम सीय सिंहासन बठे भाता चमर डुलाव ॥
 हनुमान दावे चरणन को मन मे अति सुख पावे ।
 ले गगरी दशन मिस चाली जमुना रमणी पय भरने को चलो
 राम राज्य उपदेश भरा है गुरु वसिष्ठ की गाथा ।
 जिसको जसा योग्य चाहिए ारते सदा सनाथा ।
 प्रजा चन मुद करनन हारे निबिधताप ज्वाला जरने को चलो
 स्वध धनुष द्यवि वरद दस्त से दे सबको सत्तोप ।
 भाग्य विधाता सभी जगत के टारत सबके रोप ॥
 रूप माधुरी नयन भरहु लगव रामचन्द्र सियावर धरने को चलो
 सुन्दर मुकुट नैण सुन्दर हैं मन्दरता चह छाई ।
 राक्षस के सहार जगत से ऋषि मुनि दुख भगाई ।
 भक्त का उद्धार धम धिर कर ही लिया अचतार धरने को चलो
 अलिगन गावत बेबी नाचत हस की है पहिचान ।
 प्रजा सुगी समृद्ध उर्वी भी हरिन धम म जान ।
 वच हरि ने आनद पाया पी मरद अमर भरने को चलो

जय रामचन्द्र रामकृष्ण प्रार्थना

जय रामचन्द्र प्रवधेश प्रभु जग मर्यादा पालन हारे ।
 उपदेश मुखावह द जग म ऋषि सुर हित राक्षस सहारे ॥
 भद्रदावाग्नि से दग्ध मनुज तव कृपामयी हिमता चाहे ।
 बलिबन्धुप नाशक नाम तेरा सब वेद शास्त्र नित उच्चारें ॥
 भव दुःख जनित भ्रांति व्याधि स तारन को नाका तेरी ।
 ससार नदी म बहती है नाबिद हो जग सजन हारे ॥
 नाम सुरेश रमण सदा नित शिवशकर भी रटत ह ।
 इस विश्वोदधि की उदर दरी म डूबत जन तुमो तारे ॥
 शरणागत जन पामर मे मै आया ह शर तुम्हारे पर ।
 कर कृपा दृष्टि मम विकर पर भू भार जनित हरन हारे ॥
 इस जगती तल के प्राण मे सब जीव कम के दुःख पाते ।
 प्रथ माया यवनिका दूर करो हे मधुर वशी बादन वार ॥
 दुःख पाप निशाचर को सायक तेरेही तीक्ष्ण दहन है ।
 मन हृदय बभल कर उजियारा प्रिय कान्ति श्याम तन मृदु वारे ॥
 मन पकज विरस पडा प्रभु तरा ध्यान दिवाकर पाकर के ।
 तव पद रजकण पे याछाव दुःख गान्धुप मयुरा क टारे ॥
 समय समय अनुस्य हर सब विश्वम्भर यह तेरे है ।
 हरि वंश राम श्रीकृष्णचन्द्र न जनहित नर तन बहुधारे ॥

जयति सीताराम प्रार्थना सीताराम की

जयति सीताराम प्रभु जग सीध सुदरता धरी ।
 भवना कर तन आत्मपावन आयु मानव सबगरी ॥
 शुभ चरित्र उदारता की धार पुण्यात्तम बही ।
 बठिन प्राणा मातु पितु की प्रेम पूषक निर गही ॥
 मीय की पति प्रेम भक्ति मातु गिरिजा ज्ञान धर ।
 शिव स्तुति की चाप गुन्ना हरतु स्वामी ध्यानकर ॥
 राम राज्य मुहावना मुग सुर सरि की धार भी ।
 बहती भजुभा नायि नर मन कर धर धार भी ॥
 तन धरार तरे सिया रट हागई तुम भक्ति म ।
 राम क पद बभन धर चित धिर गही तिर इति म ॥
 राम न यत वान सीता रजकधने दयकर ।
 पञ्च कर मर्यादा रायी स्वए सीता धेवकर ॥

कठिन पथ पति नयन वन-म चन्द्रपट्टी सुव छोटकर ॥
 आश्रम बाह्यपीवी विनाये पद कमल कर जाडकर ॥ 7 ॥
 राज तज वनवास का पथ ले दियाया राम न ॥
 आत मानु प्रेम समता मानी कहराघाम ने ॥ 8 ॥
 कठिन पतिव्रत जनक तनया विश्व में दिसला दिया ॥
 पानी वन उपदेश गृह श्री राम न सिंगला दिया ॥ 9 ॥
 राम सीता जगत व आदेश मंगल रूप है ॥
 यद्य हरि घर ध्यान-दोनो अखिल धमस्वरूप है ॥ 10 ॥

जय रामसिया (रामसिया प्राथना)

जय राम सिया मन मन्दिर के हृदयासन आन विराज रहो ॥
 द्रुवत जग दु ग्य सगिता म आवर के भेरा हाथ गहा ॥ 1 ॥
 तुम मर्यादा पुरुषोत्तम हा जय नर नारी पथ दिगलया ॥
 मान पित समान गति का आ-जग फिर उपदेश कहो ॥ 2 ॥
 बाल तरण वय लीला की युक्ति रम सार मरी बने ॥
 तब तन म मरे हृष शोभ आश्रवय उपजता नित्य ग्रहो ॥ 3 ॥
 राम राम रग पद तेर रन मम मानस मधु चूम रहा ॥
 हरि वैद्य जात पथ दशक प्रभु के चार चरण रज शोश चहो ॥ 4 ॥
 चतुराश्रम की मर्यादा युत हो जोवन दीघ कृपा करवे ॥
 दरदान हमे दा सुमति का हिन्द भक्ति रम की धार बहो ॥ 4 ॥

सातवा विश्राम

भज प्रिय राम [राम प्राथना]

भज प्रिय राम लज्जित काम कहराघाम दुख हरम् ॥
 भव भय हारी पापतमारी जय असुरारी मोदकरम् ॥
 अन्नन्द वन्द कीशान चन्द दशरथ उन्द ब्रह्मपरम् ॥

भज प्रिय राम ॥ 1 ॥

मजुलनेश पूज्य सुरज मद दनुजेश सदा हरम् ॥
 कुडन मुकुट सरयू निबट गगा सुतट कलि करम् ॥
 नयन विशाला गल मणिमाला शोभित माला सीय करम् ॥

भज प्रियराम ॥ 2 ॥

दीपीन भनुटि पीत दुपट्टी हरिसमननुकटि मधुर स्वरम् ॥
 निजुक कपान मुदर घोड छवि अनमाल वनुप घरम् ॥
 अघर अरणावा श्यामतरुणता टरति कुममता चान गूह ॥

भज प्रियराम ॥ 3 ॥

शतदल नयन शोभा अयन घृतशर चयन कृतसमरम् ॥
 कटिपीताम्बर भक्ति उजागर सब सुखसागर विपद टरम् ॥
 अतुलित तेज भ्राजितआज काति सुपुञ्ज विश्वभरम ॥
 भज प्रियगम ॥ 4 ॥

लीलाधारी प्रिय त्रिपुरारी अनाकारी पितुहि चरम् ॥
 जगदाधार हरभूभार अपरम्पार महिम वरम् ॥
 वद्य हरि पद-राम राम वद विकसित नितरद जमनरम ॥
 भज प्रियराम ॥ 5 ॥

वड भागिन (सबय्या वाल भाकी)

वड भागिन तुम नदरानी श्री कृष्ण की मातु कहावत हो ॥
 श्याम सरिखे लाडिले को खिला प्रेम की गंगा नहावत हो ॥
 मर्यादा कुल की पालन कर घम की नदिया बहावत हो ॥
 पूव जम के "हरि" जप तप फल सुत का जम बतावत हो ॥ 1 ॥
 नटवर ! तुमतो कहावत हो प्रिय ! हमसे कहते ला नट को ॥
 तुमसा दूजा नट नही जग मे जानत है सब के घट को ॥
 सुंदर छवि तो मोहिनी हारी देख देख पीले पट को ॥
 सजनी नटवर नट मागन "हरि" करलो दशन को चट को ॥
 कृष्ण कहैया आँख मिचीनी खेलत सखि नद आगन सोहे ॥
 कभी घोडिया कभी ऊटडा कभी वपभ बन मन को माह ॥
 आपस मे जावें बारी से दधि मागन "हरि" मागन कोहे ॥
 घूल कं घाब से भर निज तन खूब हसे इस सागन कोह ॥ 3 ॥

श्याम तोरी (कृष्ण छवि भजन)

श्याम तोरी तिरछी तिरछी भीह ॥
 देखत प्रेम भये जड चेतन मुनियन के मन मोह ॥
 मजुवदन सरसी रूह लाचन शत अनग छवि सोह ॥ 1 ॥
 दशन पक्ति ज्यो दामिनी चमके घनबिच मूय छिपो हैं ॥
 अनाकाली के भुड समूहन काति कपोल विद्यो हैं ॥
 पद पकज पे लाली रची ज्या इद्र वधू हरपो हैं ॥
 प्रेम के फूलन की माना लिये गावत "हरि" यह दोहें ॥ 3 ॥
 कृष्ण करत (रुक्मिणी सग कृष्ण हास्य वणन)
 कृष्ण करत भकभोरी प्यारी एकमणीजी के सग ।
 श्याम कहे सुन बावरी बात कहूँ मैं तोय ॥

मगधाविष को छोड़ के क्या वर लीहा मोय ॥
 हम तो चगत हारे गैय्या गापिया के मन भय ॥ 1 ॥
 बडे बडे मटु गात के गुणीजन भूप समाज ॥
 छाडि मौहि पाले परी कपटिन के सिर ताज ॥
 हम सब अपनी ले के गडरिया फिरत फिरत वन तग ॥ 2 ॥
 रूप गौर को त्याग के आई लैर कुरूप ॥
 सखियन मन ना भावती ज्या बिन जल का वूप ॥
 घनश्याम की अचरजयुन बतिया सुन रमणि हो गई दग ॥ 3 ॥
 रमणि की बदला दशा बसुध रहा ना पान ।
 थर थर आपत अ ग सत्र तन का रहा न ध्यान ॥
 माधव शोचकरत रमणि के शिथिल हा गय अ ग ॥ 4 ॥
 श्याम सुखामल हाथ मुख पाऊ पमीना माथ ॥
 रमण मने की ह सि त् तो हुई गई ज्या पाथ ॥
 "हरि" प्रेम परीक्षा लेने की तेरी रच डाला मह रग ॥ 5 ॥

मोहे श्याम (श्याम रूप वणन)

मोहे श्याम सलोने आनन की निन ओलूडी आवे ॥ टेरे

मुग्ध हुआ जग मज मूर्ति स
 अघर सुधा बरपावे ॥ 1 मोहे ॥
 मुनिमन पालन खलदल घालन ॥
 भक्तन दुख नशावे ॥ 2 ॥

वरुणगीत गावत धेनुन बिच प्रेम सुधा सरमाव ॥ 3 ॥ मोहे

रिम भिम रिम भिम नाच करत मग ॥
 युवतिन के मन भावे ॥ 4 ॥ मोहे
 लट लटवत घु घराली कपालन ॥
 कटि मगराज लजावे ॥ 5 ॥ मोहे

"हरि बाजती सुनि बणी श्याम की हृदय कपी खिल जावे ॥ 6 ॥

काह तोरी (कन्हैया शोभा वणन

काह तारी वदन की कात्ति निराली ॥

कम भुम रण भुण घु घरु बाज पद सरोजन के लाली ॥ 1 ॥ टेरे
 गण्डस्थल केशन बेणा जिमि सोहन नागिन काली ॥
 नाक नथिनिया हाथ पहु चिमा वानत मंगुल वाली ॥ 2 ॥
 ग्वालिन लाड करत कर चमत और बजावे तानी ॥
 मोर पल मावे पर दाघत चूटिया गूथत आली ॥ 3 ॥

बाल मुकुदानन्द कह है ये छोटे बन माली ॥

बँध हरि बलिहारी छवि पे लट लटकत घु घराली ॥ 4 ॥

सावन मास [सर्वय्या कृष्ण राधा भूलन]

सावन मास हिंडोले भूलन चाले कृष्ण मुंगरी ॥

सखि यामिनी बिच ज्यो दामिनि-शाभित राध प्यारी ॥

राधे कृष्ण को सग हिंडावे दे दे कर कर तारी ॥

गीतन गान करत मद हासी दे दे मीठी गारी ॥ 1 ॥

श्रीजसुमति को बाल कृष्ण की भ्राकी सर्वय्या

श्री जसुमति के द्वार गया प्रिय श्याम की छवि अवलोकन को ॥

लख नदकुमार नयन में धार बही भरी प्रेम अमाचन को ॥

हृष हिये म ठगा सा रहा और ज्ञान रहा नही सोचन को ॥

मन मन्दिर म नित चाह बनी "हरि" दशन दा इन लोचन को ॥ 2 ॥

नैनने (श्याम शोभा सर्वय्या)

ननने खीचा सखि श्याम क समझ नही कुछ आवत है ॥

नवकज कनेवर लाल विलोचन कोटिन काम लजावत है ॥

मोहिनी सूरत हसमुख आनन खँचत छोडत जावत है ॥

"हरि" अनुपम आनन्द कासो कहू श्री कृष्ण सदा मन भावत है ॥ 3 ॥

घन भाग बडी नद की रानी नित कृष्ण कपोलम चूमत है ॥

जम जम जर जरित कलेवर तपसे मुनिजन भूमत है ॥

ऐसी मजु मूर्ति "हरि" देखत शिव सनकादिक घूमत है ॥

जे मायावश जीव चराचर अलि कलि पकज भूतत है ॥ 4 ॥

घनश्याम का ध्यान लगा के प्रिय ! तेही और को ध्यान कियो न कियो ।

मदाकिनी का पावन जल पी कूप का नीर पियो न पियो ॥

देश प्रेम और राम प्रेम से मुक्त हा और जियो न जिया ॥

बध हरि सत्यान को दान दे और को दान दियो न दियो ॥

मातु जसुमति को उवाहना का उलाहना सर्वय्या

मातु जसुमति देह उलाहना श्याम मुदर का तोसे आज ॥

गेह गगनिया दहि दूधन की फोड दर्द मेरो कियो अवाज ॥

धाई जब मैं पकडन को तव आयो मैय्या के दिग भाज ॥

'हरि' कहत है कृष्ण कहेया मुख मरोड नद बाबा को राज ॥

मोर मुकुट दोहा कृष्ण भक्ति वणन

मोर मुकुट मुख वासुरी सग धेनु और ग्वाल ॥

यह मूरत मोहिनी बस जा मन सदा- निहाल ॥ 1 ॥

मुख दधि मासन हाथ मे नाचत नन्द त्रिशोर
जब चित चाया ग्रहण वो भाग गया चित चोर ॥ 2 ॥

मोर पग के सिर मुकुट हाथ मे वैष्णु रसाल ।
भक्तन के हिय मे बसे मद हमत नन्द लाल ॥ 3 ॥

कमल नयन मुख सावरे की मदी मुस्मान ॥
देसत सजनी आज मै प्रेम विवश हू जात ॥ 4 ॥

श्याम सलोन कपण का गीतामृत पी चित्त ॥
यही विश्व आलोक का सबसे सच्चा वित्त ॥ 5 ॥

(वशी बाजी) कवित्त

वणी बाजी मधुवन सावरे विशोर की ॥
जा म निक्कत राग छतीसा ही रग है ॥
स्वर माधुरी म लाजे कोकिल क कठ वो ॥
गावें जिमि रति और प्रेम से अनग हैं ॥ 1 ॥

मूरली की धुन सुनने को भाई गय्या सब ॥
ब्रज बनितहि दौडी सखियन सग है ॥
आनन्द उमग मन जो बन की छटा सोहे ॥
देख सुन "हरि" हिये वहे प्रेम गग है ॥

बोली श्याम को प्रेम व्याज से ताडना । कवित्त

बाली जसुमति काहा छेड खाना आजकल ॥
रात दिन करते हो ग्वालिन क सग मे ॥
दधि नव नीतन की फोड के कुल्हडिया ॥
कुछ ताम कुछ विडा भागत हो जग म ॥ 3 ॥
आच्छी नाही बाण यह तुम्हारी कहती हू श्याम ॥
कान बाट हाथ बाध लटका दू गग मे
मोहन मुलक दीहा भया जी को प्रेम काक ॥
' हरि ' रास गई सब छतियन तग म ॥ 4 ॥

1 = अर्थात् काध स्तनो मे जाकर दूध मे परिणत हा गया ॥

श्याम मुन्दर धूम नन्द की बगिनिया
चित्त को चुराके खल खेपत अनोखे हैं ॥
मोही उफा खेल जातें सब ही ग्वालन को ॥
बहुत घुमावत र पिदावन चान्दे है ॥ 1 ॥
कभी खेल मौद आख चपत की मार भाते ॥

गेंद भडी सोहनि ज्यो जाली के झरने हैं ॥

बहने को भूठी राखे रेख मन माहन को ।

हुए भ्वाल बाल 'हरि' काहनह से झंड़े ह ।

चलो मना कृपन भाकी दशन ।

चलो मन भाकी देखन को ॥

बेकी पख मुकुट सिर सोह कृपन कानन =

मजुललाट सुवरण तिलक को नन्दे से नन्दन क

गल फूलन की माल सरी निन्दे नन्दे नन्दन =

भक्ति सुधा वरपत निन्दे नन्दे नन्दन =

श्याम छवि लख हर्षित नन्दे नन्दे नन्दन =

'वैद्य हरि' बनी एन्दे नन्दे नन्दन =

श्याम दुलारे कृपन नन्दे नन्दे नन्दन =

श्याम दुलारे पिदार नन्दे नन्दे नन्दन = ।

आजुबनी । नदलाल गोभा धरण ।

आजुबनी वंसी प्रतिभा हैं राजनी श्री नदलाल की ॥
 मुग पर तज अरण अषरामृत शीश बिन्दु हरतान की ।
 लट लटकत घु घराल वश की और छग वन मान की ॥
 वकी पग किरीट शीश पर श्री उमवत है भान की ।
 कटि कि किनी पग नूपुर बाज बलि जाऊ ठुम चान की ॥
 मन्द मति मुस्वान निराली तिरछी चितवन हाल की ।
 "हरि" योद्धावर मुदरता पर आज वृष्ण गोपाल की ॥

श्याम शिखर गोभा वध नम ।

श्याम विशेरे चित चार मखी प्यारा है ॥
 माहिनी मूरत तिरछी चितवन है ।
 कमल नयन मुख चन्द्र सा उजारा है ॥
 शीश मुकुट मणि भरवत मजु सोहे ।
 व दावन वासी प जादू साही डारा है ॥
 वशी वजावें प्यारी धेनु चरावें सारी ।
 तब ही गोपाल नाम धारा वशीवार है ॥
 चार तिलक गोभा मुग्ध करत मनु ।
 पीठ जटनि कच सौप वा सा कारा है ॥
 पीत रगन कपट कटि चमक ।
 ज्या ही गगन बिब दामिनी म तारा है ॥
 वृष्ण चन्द्र घनश्याम राम आनन्द घाम ।
 वसहु "हरि" क हिय नाम यह सारा है ॥
 सुत मुख चूमत । नद का श्याम मुख चुम्बन ।

सुत मुग चूमत नद महर है दख सखि मन राजे ॥
 मदु मदु रक्त कपोलन को लग अरण सूय छवि लाजे ।
 काह कपोलन पर बालन की गुदगदी हात ही भाजे ॥
 धावन धावत नूपुर किंकिणी छुन छुन घु घरू वाजे ।
 हसत कहत चुम्बन नही अबके देहु -कहहि भुग प्राजे ॥
 दक्षिण अघर मधुर पितु मरा वाम अघर कडवा जे ।
 एसी माधुरी बोली पे हरि' हृदय बदरिया गाजे ॥

यशुमति । नद का यशोदा प्रति वृष्ण चुम्बन व

मुख जब चू मू प्यारे किशन कुमार का ।

कोमल कपोलन मे आनन्द सुधा बहे ॥

जिह्वा पीज्यो रस कह अमरीत धार का ।

काहा जब कहे बाबा मीठा यह कपोल है ॥

दूजा कटु मुख हाव चुम्बन से खार का ।

तोतली सी माधुरी सी बोली सुन श्याम की री ।

“हरि” हिये सुशी जैसे प्रेम हा साकार का ॥

काह कहे । मिथ्री माखन व्योजन मातु चुम्बन दान ।

काह कह मातु मोहे मिसरी माखन दे दे मधुर कपोल मेरे तब चुमलेनारी

मिसरी माखन बिन खारे सूखे मेरे गाल नद बाबा बोले जब देवे थे चवेनारी ।

बात सुन यगुमति सुधा भरी श्याम की हिये मे हरपि मन आनन्द दवेना-री ।

सुन सखी बड भागी नद की पियारी रानी “हरि” मुख चूम लीना मजुल मुखेना-री

वीथिन विच कृष्ण प्रति ग पी प्रेम

वीथिन विच मथुरा नगरी की घूमत घूमत हार गई ।

श्याम सुंदर को भटकति दूढन मै जमुना के पार गई ॥

होने लगा रजनी मुख सजनी काम घनुप की मार भई ।

थकित हुई निद्रावश स्वप्ने मै प्रियतम हार भई ॥

(सजनी घर मोहन ध्यान)

सजनी घर ध्यान सदा उर मे उस मोहन नद दुलारे का ।

सब शास्त्र मध्य गुण उसका है यह सत महत वखान रहे ॥

कर नर नारी विश्वास रात दिन भय भव भजन हारे का ।

इस देह धरण का घम यही हो प्रेम सदा पद पकज मे ॥

अ खिया मत थक तू देख सदा उस रूप मजु रतनारे का ।

गुण उसका गा रति उसकी पा चित्त उसके उपर चलना है ॥

“हरि” चलता विश्व सदा आया उस पथ मे कृष्ण पियारे का ।

सखि व्याज से कृष्ण प्रति गोपी प्रेम

सखि=व्याज से श्याम बुलावत है नेरी लट उलभी सुनभारे ।

अलकावली मदन की दूती भृकुडि बाण है चढा हुआ ॥

कज्जल रेख बनी नयनन म अधर से अधर मिला जारे ।

कबु ग्रीव नजु चन्द्रानन लटे ज्यो नागिन वाली है ॥

बशरी पू गो वजा मनमोहन इनका जहर मिटा जारे ।

सनुपम प्रेम अगाध सरोवर तट मे कृष्ण विराजत हैं ॥

डूबत बाह गले विच डाली नौका पार लगा जारे ।
मग्न हुड तब छवि निरध के प्रीतम मन को खींचत हो ॥
“हरि” सविनम भ्रज तिहारे से मोहे प्रेम की भाँकी दिखा जारे ।

(रुण भ्रुण) कृष्ण बाल भाँकी

रुण भ्रुण रत भ्रुन माधुरी ध्वनि से घु घरु बाजत यशुमति सुत क ।
गावत नाचत ग्वालन के सग शब्द ठुमक हो रह भ्रयुत के ॥
अधर सुधा से पुष्प भडत 'हरि' ज्यो वर्षा और सावन इत क ॥
सजनी प्रतिभा देख ठगी मैं सुघ ना रहा जावन इत उत के ।

सखि श्याम (कृष्ण प्रेम)

सखि श्याम घटा की छटा को निरख मन व्यापत आज अनु ग मेरे
यह माध की कारी रात बहेले-शोत समीर के धनज धनेरे ॥
मन अटका विश्वात्मा म-नही सुघ बुध देह की साभस बरे ।
“हरि” दासी पे करो दया भ्रब प्रेम मंदिर म शयन के डेरे ॥
सजनी मुख के घाम उह स । चित मे तू धरती रहना ।
नेम उही म प्रेम उही म देन उही की सुखी बहना ॥
जीत उही की हार उही की उही को प्रेम से नित सहना ।
“हरि” जग के वे उजियारे हैं तू उही का निरल यश बहना ॥

मोहन प्रेम

मोहन मोरी नैया तो बिन मझ विच खा धचकाले ।
पार खेवया हो जग के-हुए-सूरदास से भोले ॥
बलि जाव 'हरि', चरण तुम्हारे मजु हृदय पट खोले ।
विषयन म लवलीन उमरिया जाग जगत को जोले ॥

होरी खेलत न द किशोर सखि समेत राधा सग होली खेलन

होरी खेलत न द किशोर सजनी राधे राणी सग । डेर
वीधी सजी है पुष्प वसतन रग विरगें साज सजे ॥
नील कठ केकी बोलत है पिहू चहु श्दतु वर राग जगे ।
सखियन पक्ति निरीक्षण करते चित मे उठी उमग ॥
एक पात्र विच रग वासती डूजे लाल गुलाल भरे
हाथ म ल पैनी पिचकारी श्याम खडे हैं रग भरे ॥
छाहत कचुकी मध्य रेख पर वदन होत है तग ।
सविया का मन मचला मेवन होरी श्री धनश्याम ॥

रग गुनाल मदु हाथो मे ले राघा सखि अभिराम ।
 "हरि" माधव के लेप रही है योवन सा मद भग ॥

सदा वह श्याम की मूरत-भजन

सदा वह श्याम की मूरत हृदय पर रग जमाती है ।
 निरख के मोहिनी छवि को हिये मे हृप भरता है ॥
 सदा हो लालसा दशन की रट जिह्वा लगाती है ।
 इसी कली मे बना दुलभ सदा उस ईश का दशन ॥
 कवि तुलसी ने गाया जो यही माया भ्रमाती है ।
 भ्रमो को छाड सारे नर लगा तू राम की नित गट ॥
 उसी मे पार हा बडा यही श्रुतिया बताती है ।
 अर्हनिग सब ही कामा म उसी का ध्यान धरता जा ॥
 "हरि" जग के पियारे के सभी के वही नाती है ।

बशी बट के नीचे श्याम दशन

बशीबट के नीचे देखा भंने सजनी श्याम ।
 रक्त चरण मे नुपूर सोहे लाजत शत शत काम ॥
 छवि विलोही मजु मोहन की हृपित सब अगमाम ।
 हाथ मुरलिया चमकत कु डल वानन मे अभिराम ॥
 भकुटि तिरछी चितवन तिरछी मोहित है सब घाम ।
 मद हास्य से बोले मोहे खुशी रहो तुम वाम ॥
 मधुरा घर के मुख स वाणि भाधुरी निवसी ललाम ।
 हृप हिय म ठगी सी रही छवि निरख के आठो याम ॥
 'बैद्य हरि' उनके गुण गा तू वे ही करणा घाम ।
 बशीघर कृष्ण की जय हो

अष्टमो विश्राम

जमुना जाती है (कण्ठ प्रति गगरी भरण प्रेम)

जमुना जाती है गगरी भरण को डगरी रोक मत जाने दे ।
 नद के लाला मधुर वारि से हिय की प्यास बुझाने दे ॥
 पाच सात के लगभग ग्वालिन ले गगरी निकसी घर से ।
 श्याम सुंदर माग बिच भेटे कहन लगे ग्वानिती वर से ॥
 भाखन दहि मोह देना सदा-धोरि बशी की टेर सुनाने दे ।

दहि मायन की मीठति करने सुनन लगी मुरती की तान ॥
 मोह गई तही मुघि देह की भूली ठगी गग गया पयान ।
 रती माधुरी बणी की धुन ध्यान हृमा-जल लाने दे ॥
 कृष्ण कपालन की सुदग्ता और निरग मदी मुस्कान ।
 धु धराले शानन की लटिया नयन मजु हैं कसन समान ॥
 ग्यि गीचा तब आकषण म रूप म रूप मिनां दे ।
 आपस म सब सखी सहेती करन लगी माहन की बात ॥
 मोहन नट नागर ने कीहा तिरछी चितवन हृदय आघात ।
 'हरि' अथ म अपने नदनला से प्रेम पात उलभाते द ॥

श्याम की माधुरी भजन

श्याम की माधुरी हृदय समाई । टेर
 खावत पीवत मोवत जागत मन म रचि सरमाई ॥
 चालत हालत बोलत तोलत नह मुघा वर्षाई ।
 ऊठन बैठत नारी मानव ! कभी नही भाव भुलाई ॥
 भूष पडित साधु असाधु की दोषावली मत गाई ।
 'वैद्य हरि' यह माग प्रदशक उपदेशामृत भाई ॥

मा नट से भजन

मा नट से नाच करा ले । टेर
 नट कहता है बंदर बंदरिया की तुही गान सुना दे ॥
 नदनला की नाच उछन कर बानर तू ही रिभादे ।
 मय्या बानर बानरी बोलत नाही तू ही बतादे ॥
 दोनो कापत शीत हवा स कपडा लाल रगादे ।
 पहना के कपडे दोनो की व्याह का साग रचादे ॥
 सुनि मुनि बार्से भोरी श्याम की खातिन मन मनमादे ।
 मय्या बोती तू खुद नटवर । पेजनी अपनी बजादे ॥
 'हरि' सब सलिया मातु श्याम करे बलिहारी के बादे ।

कभी श्याम । हसे सबैय्या

कभी श्याम हम भुग मातु का देख क मातु हसे मुख श्याम करे ।
 हसत हसत कह जननी दुलारे क्या लेगा । तू चंदा रे ॥
 ऐसी छवि को देख रुखि जो खुशी न हो वह भंदा रे ।
 बस हरि ऐसा बडभागी नद यशुमति का बंदा रे ॥

नदरानी ने गेह गई (सबय्या)

नदरानी के गेह गई जेहि आगण खेलत कृष्ण कहुया ॥

पीत भगुलिया श्याम कलेवर धूरि भरे बलदाउ के भैया ॥
 लट लटके धु धराली कपोलन पे माहित "हरि" देख के मैय्या ॥
 बशी बजाव सबही रिभावें रीभी सब वृदावन गैय्या ॥ 2 ॥
 श्री कृष्ण की तिरछी चितवन को लख ह्य हुआ मरे मन मे ॥
 मोर मुकुट पीताम्बर बाछे सोहत मूरली मधुवन म ।
 राग अलापत बशीकरण की मोह गई प्रतिक्षण क्षर म ॥
 प्रेम की गाथा सखि क्या कह "हरि" श्याम भय सब धन मे ॥ 3 ॥

ग्वालिन मोहित (मूरली वादन पर)

ग्वालीन मोहित हुई श्याम पे सुनकर मीठी मूरलीतान ॥
 कहन लगी इस बशी के बण को न मुग्ध है जग मे जान ॥ 1 ॥
 पाकालय के सूखे ईधन म हो ती रमता ग्राहान ॥
 इस मूरली की माधुरी से जड म चेतन का होता भान ॥
 मूरली मधुरव सुन युवती मडल ने छोडा सब कुछ जान ॥
 वे सुध बुध हो मोह गई सब सुन भुन माधुरी की मधुरान ॥ 3 ॥
 यही मधुरता मधुर रूप म बनी रहे साजार समा ॥
 "हरि" कलेवर आनन्द उपजा सुनकर मूरली मधुरव कान ॥ 4 ॥

श्याम तुम्हारी मोहिनी (ध्यान प्रेम)

श्याम तुम्हारी मोहिनी मूरति बसी सदा हृत्पटल रहे ॥
 जग के सब कपटा स टकरा के भी तब गुण गान कहे ॥
 मधुराकृति की माधुरी पी पी नयन म प्रेम का नीर बहे ॥
 "हरि" मन मंदिर सुन्दर आगण मे बैठा क चरण गहे ॥ 1 ॥
 मुग्ध हुई म छवि चितोकी उस श्याम सलान आनन की ॥
 बशी बजावे धेनु चरावे लाली रची मुख पानन की ॥
 ब्रजललना सब मुग्ध हुई शोभा लखके उस कानन की ॥
 राधा कात 'हरि' नद छर्वैया की मधुरिम प्रिय गानन की ॥ 2 ॥
 सखि ललिता म भरके मगरिया आन लगी जब सावन मे ॥
 राह मिले "हरि" चित्त चुरैया सुध बुध रही न आवन मे ।
 धीरज भागा हकी बकी गही गगरी फूट गई जावन मे ॥
 ज्या कुमुदिनी हिमकर सग सरवर-मुग्ध हुई मन भावन
 जमुना तट (श्याम श्रीडा)

जमुना तट बलदाउ के भग मे खेलत मोहन प्यारा है ॥
 वदन सरारुह मे सखि निक्सित वाली ज्यो अमृतघारा

गेंद को फेंक के बोलत बाहा अबके दाव तुम्हारा है ॥

जीत गया वह अश्व बनावे-उसपे-चढे-जो हारा है ॥

श्याम घर अघरन (श्याम स्वप्न दशन

श्याम घर अघरन पे अघरान । टेर

मपने म सजनी मोहन से मिली एक दिन भान ॥ 1 ॥

भाग चले फिर हाथ न आये ठगी रही मोहि जान ॥

उस भानद की शोभा का सखि कभी न होता भान ॥ 2 ॥

मोर मुकुट पीताम्बर सोहे कु डन झलकत कान ॥

बलि जाऊ म कमल नयन पर सुन बशी की तान ॥ 3 ॥

आज सुना मन की सुशियो का मुभ को होता भान ॥

वैद्य हरि के हिये वसे सखि श्याम सुंदर छवि भान ॥ 4 ॥

आजा आगन मे (यशुमति बुलावना

आजा आगन म घनश्याम ॥ टेर

ग्वालिन बालन के सग खेलन बीते आठो याम ॥ 1 ॥

भूख प्याम को तू न गिनत है यह नही सुंदर काम ।

तव बाबा से कहू आज म काह हुआ है हराम । 2 ॥

मार पिटाऊ हाथ बधाऊ और लगाऊ डाम ॥

दधि भाखन तू जी भर खाले और फलो मे आम ॥ 3 ॥

गरमी श्याकुल जीवन करती पडे भयकर घाम ।

वैद्य हरि योछावर जसुमति माघव पे अविराम ॥ 4 ॥

घर सजनी [श्याम प्रभा कथन

घर सजनी भाहन आय । टेर

सुंदर भौं गीरोचन लेपन भाल चारु चमकाये ॥ 1 ॥

शीश जटा मुख मजुल भूरली कोटि मदन छवि छाये ॥

कमल नयन अम्भुज भानन पर स्नेह सुधा सरसाय ॥ 2 ॥

बन्दावन की कु जगलिन विच राग छतीसो गाये ॥

श्याम कलेवर गन बैजती गजराज हिहित घाय ॥ 3 ॥

तेज पु ज मस्तक पर शाभित भास्कर काति लजाये ॥

घट देखत प्रभु वैद्य हरि तोरी प्रिय चितवन मन भाये ॥

मजुल मुखारविन्द कवित्त

कमल नयन श्याम घन सा शरीर सो हे ॥
 हाथ मजु मुरलिया ग्रीवा मे रूमाल है ॥ 1 ॥
 चाकी चितवन जाकी देखवे हृदय "हरि" ॥
 हृष का श्रोत बहे करता कमाल है ।
 कटि पीतपट धरि माथे प कज्जल रेख ॥
 बानो अलकावली श्री मोटे प्यारे गाल हैं ॥ 2 ॥

जय कु ज विहारी (कृष्ण कीतन)

जय कु ज विहारी वृष्ण मुगरी भव भव हारी पाहि हरे ॥
 जय शोभा घाम मजु ललाम लाजत काम पाहि हरे ॥
 जय मोर मुकुट छबि पीताम्बर फबि ज्यो हिम कर रवि पाहि हरे ॥
 जय राधा प्यारे नद दुलारे यशोधा धारे पाहि हरे ॥ 1 ॥
 जय मुरली वादन सब अमिवादन जन प्रतिपादन पाहि हरे ॥
 जय गोपीरजन नयन मुखजन सब दु ख भजन पाहि हरे ॥
 जय आत्माराम पूरणकाम घनवत् श्याम पाहि हरे ॥
 जय दीन दयालु भक्त कपालु मुनिमन पालु पाहि हरे ॥ 2 ॥
 जय देवकी नन्दन दुष्ट निकन्दन खलमद गजन पाहि हरे ॥
 जय कस निपूदन प्रिय मधुसूदन । राक्षस तूदन पाहि हरे ॥
 जय आनन्द कन्दन सच्चिदा नन्दन हरु जग फदन पाहि हरे ॥
 जय योगिपुराज सकल समाज सब जग ताज पाहि हरे ॥ 3 ॥
 जय पूतना चोपक किलिबप मोपक सब दु ख शोपन पाहि हरे ॥
 जय ब्रजनन्दन गोयुत वन्दन सब पद छदन पाहि हरे ॥
 जय ब्रजललनाहिय बमहु मदा पिय चिरजीवजिय पाहि हरे ॥
 जय भक्तराम "हरि" विश्राम शोभा घाम पाहि हरे ॥ 4 ॥

कमल नयन (राधा से कृष्ण परिचय)

कमल नयन उर मोतिन माल है शीश जटा अलकावली सी हैं ॥
 जसुमति प्राण समान पियारे नन्द बाबा के आगन सो है ॥
 कु डल कानन मकराकति सब ग्वालन बालन के मन मो है ॥
 जानत हस के पूछति सखिया राधिका श्याम तुम्हारे को हैं ॥ 1 ॥
 सखियन सुन्दर वाणी सुनि "हरि" प्रेमसनी राधा रानी ॥
 हप हिये सबुचाई कछु हो श्रोत की घु घट लपटानी ॥
 हमी हसी बातें श्याम तला की कह सहेली ।
 अनुराग भरी नदिया उमड़ी घटा श्याम ने

वसहु मोरे (श्याम प्रेम)

वसहु मोरे हृदय पटल म श्याम ॥

कोमल बर कमलानन सुन्दर लाजें बोटिगत काम ॥ १ ॥

गुज पुज का मुकुट धरे सग सेनत है बनराम ॥

मुरलो मधुरव करत फिरत हैं वदावन के घाम ॥ २ ॥

मोहिनी मूरनि सोहिनी सूरत शाभा मजु ललाम ॥

मयुरा की बीथिन विच सोहे पूण चद्र ज्यो श्याम ॥ १ ॥

घम मजु सम-पाप प्रहारी-ऐसा सात्विक नाम

बैद्य हरि दिन रात रटाकर प्रेमहु आठा याम ॥ ४ ॥

घनश्याम मातु स (वृष्ण बाल क्रीडा)

घनश्याम मातु से कहत अम्मा चदा लादे मेरे को ॥

सदा माहि तू या ही भुलावे वान पडी यह तेरे को ॥

चदा स खेलें हम भैया फिर लौटा दू सवरे को ॥

जसुमति ने यो कह भुलवाया चल आता यह नर को ॥ १ ॥

ग्वालिन ने (ग्वालिन प्रेम)

ग्वालिन न मोहन को पकडा चोरत दधि नवनीतन को ॥

बहुत दिनन स आय पवड मे दधि से ल पी भीतन को ॥

दधि मक्खन मरा सब लादो बँद करू ताह जोतन को ॥

श्याम डरे कछु मुस्काये प्रिय ग्वालिन के मन चीतन को ॥

मद मुस्कराहट मोहन की सुन ग्वालिनी हुई प्रेम मगन ॥

जम जम हा भेंट तुम्ही से प्रेम तुम्ही से और लगन ॥

मैं यामिनी तुम प्रकाश कता हिमकर तारा गए ज्यो गगन ॥

नद लाल पर बलिहारी है वच हरि ओर कुटुम्बगन ॥ २ ॥

सुन्दर नयन मे (कवित्त)

सुन्दर नयन म रेख पडी कज्जल की ॥

माथे प मुकुट मार पख शोभा देत है ॥

कानन के कु डल म हीरा सोहे चपला ज्यो ॥

ओठो की गुलाबी लाली मन मोह लत है ॥ १ ॥

श्याम मुख गल बनमाल सोहे फूलन की ॥

देखत सबहि हिय उपजत हेत है ॥

परो म पैजनिपा हाथो म कडलिया ॥

हरि सोहे कटि हेम तगडी समेत है ॥ २ ॥

म नद के महल (कृष्ण प्रेम सर्वय्या)

मैं नद के महल गई-यशुमति ले अङ्क मे श्याम नचावतु ॥

पद पकज नूपुर बाज रहे छवि देखत ही मन भावतु है ॥
कमल नयन मद हास्य अघर छवि बोटिन काम लजावतु है ॥
“हरि” रीझ गई उस शोभा पे जेहि वेद पुरानन गावतु है ॥ 1 ॥

वेणुगीत (कृष्ण शक्ति)

वेणु गीत गावे सखी वृंदावा गोपाल ॥
तिरछी चितवन से सभी मोहे जग जजाल ॥
आज कार्त से कण्ण की चमकत सब रासार ॥
वही तेज विद्युत सखि जिसके बोलत तार ॥ 1 ॥

कु ज विहारी श्याम शोभा

कु ज विहारी शोभा को तू देख नयन भर आज सखी ।
बशी बजावत रास रचावत धेनु चरावत आज सखी ॥
मोर मुकुट पीताम्बर तिरछी चितवन देखहु आज सखि ॥
कमल नयन पग नूपुर कु डल कानन सोहे आज सखि ॥ 1 ॥

नद लाल बोले (नन्द लाल कौतुहल)

नद लाल बोले मातु चन्दा सा खिलोना मुझे ।
लाय दे दे सखा सग खेल को रचाऊ गा ॥
चमकत गोल गीन चदा सी छवि री मोहे ॥
पास मे बुलावे जब हथिया फलाऊ गा ॥ 4 ॥
मैं धावत हू पकडन जब रोक देती है ॥
तू ही तो बताव दादा कैसे का रिझाऊ गा ॥
धीरे से चपत जब गाल पे लगावे मेरे ॥
बाबा की अनबनी कैसे री सुनाऊ गा ॥ 2 ॥

जसुमति बोली (बाल केली वणन)

जसुमति बोली प्रिय नद के कुमार सो ॥
तेरे बिन मेरा यह मन ना लगतु है ॥
श्याम बोले मातु जब प्रेम से पूछ यह ।
दूध भर घन मेरे मुख म फवतु है ॥ 1 ॥
बलिजाऊ लगत तेरी माधुरी वाणी पे मैं ॥
मन मेरो तेरे मुख चद्र पे जगतु है ॥
श्याम हस तीतरी सी बोली बाल उठे जब ॥
वृष्ण कपोलन क्यो कारें से रगतु है ॥
द्रुष्टि द्रोप लग जाव अये । प्रिय लाल मेरे ॥ १

सुन्दर स्वरूप तेरा देग मजु आनन को ।
 काजर लगाये क्यों ना सगेरी नजरिया ॥
 माची माची कह आजा तेरी नहीं मानन को ॥
 माता बलि गई वौंती बाहू की सवारें सुन ॥
 हिमे म आनद छाया देख पूले वानन को ।
 दक्की नदन कह मैना की सी मीठी बाणी ॥
 पुरित सुधा स आयो मधु मात्र पागुन को ।

लगा के प्रेम भजन

लगाके प्रेम मोहन से क्यों विषयों में तू फसता है ॥
 इसी भव दुःख तरने को सदा सद्बुद्धि बैता है ॥
 स्मृति समति की रहने पर क्यों पकज म तू घसता है ॥
 सहारा जिसका पाकर के तुझे माया नचाती है ॥
 सुनादे टेर ईश्वर को क्यों घर-घर पर घसता है ।
 मधुर बाणी यह अपनी जो सुना के रात दिन प्यारे ॥
 तय मजिल उसकी कर लेना उसी का नाम ससता है ।
 मझधार मे अटकी जो नौका लगाना पार तेरे हाथ ॥
 अभय पा विश्व नाविक को "हरि" तो नित्य हसता है ॥

कृष्ण राधिका (कृष्ण वेलि)

कृष्ण राधिका प्रेम मगन हो करते थे कल्लोल ।
 हुई आनद मगन म लख के सुनत सुसोमल बाल ॥
 कमल कुसुम की मधुर महक मे अमर रहा ज्यो भूज ॥
 त्यो मन श्याम की मधुर गंध मे बन पुण्यन का पूज ॥

निरख नयन तू कृष्ण शोभा

निरख नयन तू कृष्ण छवि को शोभा जग की जो सारी ॥
 यही मफलता इसी जन्म की कहते रहते त्रिपुरारी ॥
 चमकीली मिथ्या माया को देख नयन तू मत लनचा ॥
 आखिर सार यही निकलेगा शोभा धाम से सब हारी ॥
 सष्टि के सब जीव चराचर लख मोहित हो जाते हैं ॥
 राज ईर्ष्या पाखण्ड छलो की शतर दष्टि भज प्यारी ॥
 नयन ब्याज से लीलाघर की अभुतता वरुण की ही ॥
 यही सार रत्न नयनन का "हरि" सदा होत त वृत्तिदारी ॥

घन जन्म उस वह भागी का नर रत्नी मे समझ प्रिये ।
नयनाञ्जली के उपवन मे जिन की खिलती है फुलवारी ॥

मन आय बसे भजन

मन आय बसे घनश्याम । टेर
सुदर सुख की खान सदा जो हैं वे शोभा घाम ॥
भ्रुवुटी तिरछी है कर म वासुरी गावत मधुर ललाम ।
श्याम वण अलकावली काली छटा बनी शत काम ॥
केकी पख मुकुट शाभित तिर कणमणि अभिराम ।
पीताम्बर कटि-भलके मोती गल मे आठो याम ॥
चरण टेढ़ मृदु हमी निराली खडे कदम्बक की छाम ।
"हरि" घन घन खुश हाल जगत म मिले हैं पूरणकाम ॥

कृष्ण कीर्तन

यह सुदर शब्द उचार मना श्री कृष्ण हरे गोपाल हरे ।
मधु सूदन श्री कस निकदन नाम कहे सब पाप टरे ॥
अखिलानन्द का लाभ किया श्रीजसुमति बाबानन्द घनी ।
घनवान खिला के अङ्क हुए श्री कृष्ण हरे गोपाल हरे ॥
उत्पात मचा था चहु दिशी मे जब प्रेरित कस के दूतो से ।
क्षण मे उस कस के प्राण हरे श्री कृष्ण हरे गोपाल हरे ॥
जब ग्लानि घम की होती है तब त्राण सत की करते है ।
घमथाप उत्पन हुए श्री कृष्ण हरे गोपाल हरे ॥
बाल्यकाल की मोहन लीला स्मर कर कुज विहारी की ।
"हरि" प्रेमगिरा से नित्य कही श्री कृष्ण हरे गोपाल हरे ॥

श्री कृष्ण चन्द्र प्राथना राग सौहनी

श्री कृष्ण चन्द्र कृपानिधे अत्र तो दया कर दीजिए ।
वरना निधे आनन्द सिधो गुड बुद्धि दीजिए ॥
विश्व के तम लोह म हम घूमने सब लोग हैं ।
हम सबी को उत रहे यह मोह माया रोग हैं ॥
दीन धनु ! दीन रक्षक ! नाम तब दुख मे अहा ।
याद निजि दिन आ रहा जब मन फसा आधिमाहा ॥
पर त्राण इसका किन विधि हो बुद्धि मे आता नही ।
मन नगा है मोह म प्रभु नाम भी भाता नही ॥
देश सेवा भायना उत्थान हो सुविचार का ।

माता पिता गुरु भक्ति का मधु वाणीर सदाचार का ॥
 लवलीन हो मन सत्पथो मे आत्म बलसे युक्त हो ।
 दूर हो कुमति हमारी दुष्टता से मुक्त हो ॥
 मन स्वयं निशिदिन से फसता आ रहा इस जाल म ।
 परिणाम विषमय है परंतु लेख ऐना भाल मे ॥
 सब सोच के भी ना समझ ह यह बडा आश्चय है ।
 नमति सब की इन्द्रिया नित धीर बीर जे आय है ॥
 मन खीचना अपनी तरफ कल्याणकारी हे प्रभो ।
 मपत्र जन्म मनुष्य का तब भक्ति स है ह विभो ॥
 गजराज नग अजामील गरिका को भी तुमने तार दी ।
 अब उबारो भव उदधि से वासना मे मार दी ॥
 आनन्द कन्द कृपालु भगवन जीभ नित रटती रहे ।
 ससार का यह सार है श्री कृष्ण कृष्ण सदा कहे ॥
 कल्याणकारी ताप हारी ब्रजबिहारी स्वरूप का ।
 दशन का ईच्छुक हे प्रभो अजु न के देखे रूप का ॥
 यश गान कर प्रभु आपका आनन्द छाया आज है ।
 तब रूप माधुरी दे दिखा यह चिर प्रतीक्ष समाज है ॥
 भगवान जाने आय मन की "हरि" हृदय आनन्द है ।
 घर ध्यान राधा कृष्ण का जो चहुतु सुख सानन्द है ॥

आज है आनन्द कृष्ण जन्म प्रसन्नता कवित
 आज है आनन्द क वधावे घर सजनी ।
 कृष्ण जन्म श्री नन्दबाबा के भया है री ॥
 गोमुल मे छाई शोभा कोटि रति मदन की ।
 जसुमति नन्द महामोद श्री दया है री ॥
 प्रियाम का मुखार विन्द नील कमल सा है ।
 नाम भी घरा है जा का कृष्ण कहेया है री ॥
 'हरि' भी मोहित छटा ऐसी शोभा धाम की पे ।
 हवित नर नारी लेत बलम्या है री ॥

सुनी जब उस मूरली (कृष्ण मूरली प्रेम)

सुनी जब उम मूरली की तान । डेर
 देह गेह की सब बिता त्यज मधुर सारो वा गात ॥
 प्रेम विषय मुरली रई मुरली मुरली मुरली मुरली मुरली ॥

नीरस रघन पाय सरसता बुभी अनल मन जान ॥
 यह मूरली मनमोहकता की सदा उपजतो खान ।
 अथ । आली तू करी कुहर मे सुन होने हैरान ॥
 ऐसी शक्ति पगी उसरव मे पड़ी सुनन पी बान ।
 "हरि" इमम मदह नहीं है बजैया वृषानिधान ॥

आज सखि मानम (घनश्याम प्रेम)

आज सखि मानस में घनश्याम । टेर
 स्वप्ने आली आय बिगजे कर मदी मुस्कान ॥
 गदगद कठ प्रेम भरी बाणी से स्तुतिया की गान ।
 चरण कमल प लीटन लागी हिये भक्ति रस ठान ॥
 "हरि" प्रभु अतर ध्यान हुए वह जप नित मेरा नाम ।

बडा है इन नयनन् का काम राम कृष्ण प्रेम
 बडा है इन नयन का काम । टेर

राज तिलक प्रिय देख राम का सदा रही अविराम ॥
 दुखी जिहो के नहीं सुराज मे—बसुधा हुई सकाम ।
 गुदर राम श्याम मृदु हसी लख शासक सब घाम ॥
 वृष्ण प्रेम की वह शिशु लीला निरखी आठो याम ।
 श्याम मल्लोने अम्बुज मुख के ज्वर राधा थी वाम ॥
 वृजबिहारी मूरलीधारी रास बिहारी श्याम ।
 "हरि" की अखियन ने जब देखा पूरा हुई शतकाम ॥

रहो मोरे हृदय थनी (गोपाल निवाम प्रेम)

रहो मोरे हृदय थनी गोपाल । टेर
 केकी पख मुकुट शिर जटनि तिलक छवि बनी भात ॥
 आकृति मकर किरीट कण मे मद हास्य नदलाल ।
 नील कमल मुख कोटिमदन छवि देखत मन है निहाल ॥
 दामिनी वरण भंगुला भलकत कर पहुची मणिलाल
 करि किकिणी बनी जात रूप की गथितमुक्त जाल ॥
 पाय पैजिनी नील हरित मनी गलगज मुक्ता माल ।
 जसुमति नद परम घन सजती मैं देखी छवि काल ॥
 "हरि" छवि मानसरोवर मुक्ता मन बन चुगे सराल ॥

मन मंदिर (नन्दलाल प्रेम)

मनमंदिर प्राय विराज री गति जमुमति व नन्दलाल ।
 कानन कुडल नील कमल मुन मोर पल धा भान ॥
 मन मोहक भाङ्गपन भा छवि मंद हाम्य धरु गान ।
 नयन कमल शृङ्गुटि घनग की प्रधरामृन धे नान ॥
 चरण कमल मृदु नूपुर बाजा बशी गल जयमाल ।
 गा गा बशी बजावत काहो नाचत सुंदर ताल ॥
 प्रेमनाप जा आरती गीही बाज उठे पटतान ।
 "हरि" याछावर श्याम छटा प गडे वदम्ब की टाल ॥

मन फूल उठे (गोपाल मोद)

मन फूल उठे गोपाल ।
 उदित चंद्र व ग्रहण करन का भाग उठे तत्काल ।
 कजरी व मासन खाने की मचल पडे नन्दलाल ॥
 मया सहित ता नाचे कूदे जमुमति मन सुश हाल ।
 तू मा कहनी-नूर बढेगे दूष पिमे तेरे गाल ॥
 प्रेम भरी सुन वाणी सुन-भुन माता हुई निहाल ।
 'हरि' एमी गिरधर की शोभा हृदय धरी में हाल ॥

सखि मै गई श्याम दशन

सखि मै गई श्याम अवलोकन । टेर
 बाल भुङ्ग म रजित थे वे श्याम मदन मन माचन ॥
 बाबानन्द के अग उडल के चढते थे भव माचन ।
 देख ठगी सुंदर झूनासा कजरारे वे लोचन ॥
 'हरि' प्रतिभा हिय शोभा धाम की नित सुरम्य दे सोचन ।

मोहे कुजबिहारी (कृष्ण स्मृति प्रेम)

मोहे कुजबिहारी कृष्ण की नित याद हिये आव । टेर
 मदुपदेश जो भरे भागवत नर नित उठ ज्या गावे ॥
 कर कट्याण स्वपेश जाति का-गीता गाल सुनाव ।
 यही सार सब मानुष जन का अम को दूर भगाव ॥

मन रट्टु श्याम भजन

मन रट्टु सुन्दर श्याम किशोर । टेर
 भवमागर की नौका को तट ले जाने का ठौर ॥
 विषया की अधिया में फसा है तब चित यह कमजोर ।
 आधि व्याधि से भरे जगत में नहीं विषयन का छोर ॥
 'हरि' प्रकृताता अत जीव जब प्राण कठ की आर ।

बनी है शोभा नन्दकिशोर

बनी है शोभा नन्दकिशोर । टर
 काली लटननि जटनि बधी है शीश पख छवि मोर ॥
 चारु तिलक चिबुक्नि लिलाट मुख कान्ति सजी है जोर ।
 कु डल भलकें हास्य माधुरी बशी बजी चितचोर ॥
 श्रीवा मुक्ता माल बठ में दिव्य मनो भवभोर ।
 ठुमुक ठुमुक छड चरणन नख शिख लख नाचत मनमोर ॥
 पीतपट्टी बटि-दुपट्टी शोभिति पग नूपर रमभोर ।
 कमल नयन धवलोकन प्यारी हिय आनन्द विभोर ॥
 यह भागद अमर नित नूतन चव आली दिन धोर ।
 'बैद्य हरि' जन्मति सुत शोभा निरख शाम और भोर ॥

मैं नाचत देखे श्याम भजन

मैं नाचत देखे श्याम । टेर
 हस हम मुरली स्वर लहरी में पडते हाथ ललाम ॥
 उद्यन उद्यन तिरछे चरणन बजी पैजनी ध्वनि अशिराम ।
 नाच करन तिरछी चितवन लख मोहित है जगधाम ॥
 सप्तताल म्बर मदगति छवि बहन जीम सके वाम ।
 मोर कीरिट पीठ पट माता तुलसी मोहती माम ॥
 दन पक्ति दामिनी शीश बनी बारी रेव वृत वाम ।
 धेनु चराव मूरनी बजावे ठाडे बदम्ब को छाम ॥
 भुक्ति चरण बटि मुग श्रीवाकर बशी बजति अशिराम ।
 भजनी बार्ति-मैं नाचनी मानस धारो प्रात और शाम ॥
 मृग रावण नयन मट बारे भृकुटी प्रभालजे वाम ।
 'बैद्य हरि' धुनी बजति रहनी ज्यो हरित भूमि पर धाम

मैं तो भुन तोतरे कृष्ण की बाल श्रीठा

मैं तो सुन के तोतर बोल । टर
 गण्गद हृदय हागषा सुमुखी । लरा पर श्याम कपोत ॥
 घुटरनि धाव मयहि रिभावें बाल भांकी अनमाल ।
 शीश लटनि कटि लटक धू घर जातरुप मणि गोल ॥
 अघर चरण कर अघण कान्ति बत् भरयेरी के बोल ।
 मन बन मधुप कमल मुग बैठा-पी मधु पगनि खोन ॥
 पीत सुवास हम रग लालित पहिने मजुल बोल ।
 मगल साज खुशी नित नर के बजत रहत घर डोर ॥
 कृष्ण कानि मय सब जग देखा नयन तराजू तील ।
 मम हिय बिका श्याम शोभा पे निशिदिन हू बिन मोन ॥
 'बैद्य हरि' घनश्याम स्वरस नित पिय प्रातहि घोल ॥

प्रिय भारत पुरुषोत्तम (कृष्ण प्रायना

प्रियभारत पुरुषोत्तम हमको गीता जान सुना जारे ॥
 गोभक्षक गोरगजनो को निष्पामित कर भारत ने ॥
 आशुल फँला गोरक्षा की मागत भीख दिला जारे ॥
 दूध आज्य सा भारत मानव जग के गुरु कहाते थे ॥
 गुरता से लघुता में पहुँचे फिर उन्हें गुरु बना जारे ।
 प्रण किया जिहोने पहले था होगी गो रक्षा भारत मे ॥
 वे गा वध कुमति करवाते सुमति उन हिये वसा जारे ।
 धर्मों की मर्यादा से पुष्पित यह उर्वी प्रकृति है ॥
 वे धन जान से शय्य जे है धार्मिक बक्ति सरसा जारे ॥
 यह जग तेरा तू स्वामी भी सब दास कहाने वाले है ॥
 दे दुष्टों को दण्ड 'बैद्य हरि' सुन विनती हर्षा जारे ॥

कमल नयन (श्याम शोभा)

कमल नयन मुख श्याम सखीरी । टेर
 मात समुख बणन छबि कीही हिय आनन्द में गई ठगीरी ॥
 जसुमति लिंग सुस्तन पीन का भागे काहू छबि कौटि छुतिरी ॥
 पीबत कुचतटी उफन परा पय छाडि गई माता जसुमति री ॥
 लठ मथानि को फौड लकुटि से दधि की बहती देखी नदीरी ।
 घाय जसुमति गहि बाह सत सह बिच कटि मट माथ रसी री ॥

जब घनश्याम उखर परे दोतर यमलाजु न से निकर परे री ।
जसुमति शीघ्र बुताय विप्र कू यत्र मत्र से पीर हरे री ॥
राम कटे सब नाम जिहोवे भव दु ख सरिता दूर बहेरी ।
वैद्य हरि के हृदय पटन म छवि नदलाल की आन बसीरी ॥

बाके विहारी ध्यान कृष्ण

बाके विहारी कौ मन म बसाले । टर
मोर मुकुट छवि मन को लुभावे हृदय मे कु डल ज्योति जगाले ॥
चारु चिबुक बनी रेख कजलकी मगमद गव को नासा रमाले ॥
मजु कपोलनि मजु गण्डस्थल-देखत कातिको, मनहि रिभाले ।
मुक्तागभ कटि हेम किंकिणी-पजनि टुमुरु सदा हर्षाले ॥
नील कमल मुख अरुण नयन है-देख प्रकाश का दीप सजाले ।
कम्बुग्रीव मणि दिव्य सुशोभा-हसत माधुरी मन मे बसाले ॥
भगुला भलकत नील गगन ज्यो-विद्युज्ज्योति मनुहिय उलभाले ।
चन्द्र बदन मनसिज छवि लाजत-कभी हसत कभी छे भनाले ॥
गोकुल घन सतन के सबस-यसुमति नन्द परम सुध पाले ।
वैद्य हरि के मानभरोवर-खिली फुलचारी प्रभुहि विठाले ॥

पालने पोढ रहे श्याम शयनलीला

पालने पाढ रहे घनश्याम । टेर
इष्ट देव पूजन हित रचती जसुमति व्यजन काम ।
रच नैवैद्य इष्ट प्रागेधरी करी प्रारथना ललाम ।,
खाते देख श्याम भोजन को गई पालने अभिराम ।
तह देखे सोवत सुतकाहा अचरज की भरवाम ॥
फिर देगा नैवैद्य अशन वृत पाकयली मे जाम ।
कांपत तन भ्रम मे भरमागी सुधि न रही ते याम ॥
माता की असगति देखवर प्रेम की पूरण काम ।
एक रूप होतहां तिराजे "हरि" जसुमति हिय धाम ॥

नटवर नागर सर्वैया श्याम छवि

नटवर नागर नद उजागर शोभा मागर काल सगी ।
यसुमति गाद देवि मन मोद हिय हर्षोद है हान सगी ॥
ओर छवि तजि वृष्ण छवि भजि रति तजि मुदर गात्र गर्भी
"हरि" देखी मन हरय विशेषी वज्जन रति गुभात्र गर्भी ॥

शीघ्र जटनि केशन की मटनि लट वत मोहि रिभावत है ॥
 मार मुकुट द्विग वनी मेढि सक्चि नागिनसी रिसानत है ॥
 रम्य तिलक हसि दतिया धमके समन नयन मटवावन है ।
 करनि रेलना अनुपम घावन 'हरि' घनश्याम दृ भावत है ॥
 तोतरी थोली सुन जसुमति मन भ्रमर पुष्प ज्यो हृषित है ।
 श्याम सलोन पवज भुग पर हाति जाति भावपित है ॥
 तिस बलिहारी नयन सुधारि भुग वपाल धन्य गर्वित है ।
 ऐसे मृदु मोहन की 'हरि' छवि निरस हृदय मन दर्बिन है ॥

सुंदरता वश दोहा

सुंदरता वश नयन हैं तो किन देखहु लेहि ।
 शोभा की घनश्याम की निममागम कह जेहि ॥
 नीनाम्बु छवि मोहिनी जग की मोहन हार ।
 कही सुनी देखी नहीं देखी नयन पसार ॥
 वेणु वादन लग रहे नाचन की मटवान ।
 नयन शिव शोभा श्याम की आज वनी अघरान ॥

श्याम की सजी कृष्ण भाकी

श्याम की सजी सुघट भाकी ।टेर
 दिव्यमणि रतनारे मुक्ता लटकन लट जांवी ।
 जातरूपमणि भरे मुकुट घरे चितवन है बाकी ॥
 मृदु मुस्कान भरी मोहिनी पे ठरसी आल मा की ।
 मजुतिलक भ्रू कपोल नासा बहती नदी सुधा की ॥
 बशीघरी अघरान-पीत कटि वृषटि कथ वा की ।
 पद पवज धुनि नूपुर सुन म हरपी का ह लता की ॥
 मन्द हास्य जिमि कुसुम कमल के तिले है फिर मुग्धा की ।
 वंद हरि ने लुक छिप देखी युवती मध्य शरमा की ॥

सरिा नन नीद नहीं आवे श्याम विनोद
 सखि नन नीद नहीं आवे-भुट मुट खडा श्याम हसावे ।
 मधु सूदन की छवि निराली-मोहित सब नर नारी आली ।
 हिरद म गुद गुदी छावे-भुरमुट खडा श्याम हसावे ॥
 मेरे मन मदिर उजियारे-भक्तन दु ख टारन हारे ।
 भाखें प्रेम नीर भर जावे -भुर मुट खडा श्याम हसावे ॥
 उपजा मन म हृष है भारी-दख के कज मजु बनवारी ।

बो तिरछे नयन मटबावे भुट मुट छडा श्याम हसावे ॥
 रजित मधु रक्त चरण मे— 'हरि' भ्रान पडा है शरण मे ।
 मोहे मृदु मुस्कान रिभावे—भुरमुट छडा श्याम हसावे ॥

नदलाल कृष्ण छवि गजल ताल दादरा

नदलाल प्रापनी छवि मन बसा गयो ।
 शीश भोर पछ की घर मुकुट कू डली ।
 नयन बाण ध्रु घनु हिये चला गयो ॥
 सुन्दर तिलक धा मस्तके बाणी अघर मधुर ।
 बशी बी लय को गाय के मन मट फसा गयो ॥
 सटके सटो—रत्नावली गल-बीच साहति ।
 ठूमबु चाल नाच कूद हम हसा गयो ॥
 साहनी बनी चिबुक कटि पट चमक रहे ।
 'हरि' वच हस मोद स ज्योति जगा गयो ॥

दोहा

गाय जीम घनश्याम को जे हैं तारन हार ।
 यदि चाहे कल्याण तू तो रट कृष्ण मुरार ॥
 बिगडी नागो जम की प्रभु सुधारन हार ।
 मन मधुकर बन पद कमल पी रस सुधा सुसार ॥
 जो भव रत्ना घर तिरल चाहत भव । मुजीव ।
 तो बरगा निधि पद गह्र भ्रमृत रस को पीव ॥

मेने सगी श्याम की जोरा श्याम शोभा युगल जोडो

मन कौमुदी श्याम शोभा गजल ताल

मन कौमुदी क चदा है नद का दुलारा ।
 छवि शबरी के स्वामी जमुदा हिय का प्यारा ॥
 सब लोर के घनी हैं हिन हार की मनो है ।
 गुणिया म निरतुनी हैं पनश्याम का-सा-बारा ॥
 नटशिर मुकुट की शोभा मन बन चरोर लोभा ।
 तम पाप की कुशोभा हरी अ घरी ज्यो तारा ॥
 मगमद सुगणि भाये भक्तो कर मनाये ।
 चिबुकि मडे हैं साये अरजुन के दु ख टारा ॥
 दतिया की कान्ति दम के बटि धु धर सुपट के ।
 है रूप शांति शम के 'हरि' का सदा सहारा ॥

मेथ्या भै मोटा कब होउ श्याम का बालपन श्रीडा

मेथ्या भै मोटा कब होउ । टर
 दूध दही माखन खा बेटेदिन रजनी नित सोउ ॥
 सखा सग के हलधर घ्राता पूछत किस का कोउ ।
 हमतो काम करावन हारे तुम सब काम को छोउ ॥
 सोच रैन दिन काम बिनहि मन भै क्या घघा जोउ ।
 धूलि धूसरित अ ग हाय तब स्नान बेला नित घाउ ॥
 साच कहू म दुबलता हित छाडु क्या अचना रोउ ।
 दूध दही माखन रोटी खा नित हस कह नही तोउ ॥
 देख भगीरी दुबलता तब पीन छवि हुई मोह ।
 श्याम मनहि सतोप बँध हरि जमुदा बाणी होउ ॥

सदा नद दात्री लक्ष्मी प्राथना छ द शिख रणी

सदा न द दात्री समुद कमले । हो अबतो मा ।
 बडे पडित योगी तब सुपद मोहिन रति सदा ॥
 कलियुग मे पोषण भरण करती त्रिष्णु प्रिया ।
 तबावे लेकर के वसतु मम घर म नित मुदा ॥

कु ज विहारी । तजप निहारी कृष्ण शोभा

कु ज विहारी की चिनवन प्यारी लागी मोहे देवहु मलिया ।
 मोर परत मन भावन श्याम की जी चाहे करन बतिया ॥

नदजी को छावो भ्रानददाता सजनी उस दिन न ही गतिया ।
 कलभापण जसुमति को भावे श्रवत पयस वा की छतिया ॥
 ठुमक ठुमक वही चले मदगति हसी हसत चमके दतिया ।
 ठगी रही शोभा कमन नयन की निरख प्रेम सनी मो मतिया ॥
 कोटि काम छवि हारी श्याम धन लख स्वप्ने बीती रतिया ।
 'बँध हरि' के सदा पियारे लिख लिख भेजी नित पतिया ॥

शोभा आजु (नन्दलाल शोभा)

शोभा आजु मनोहर धनी है जसुमति सुत नदलाल की ।
 ले बगु तिरछे चरणन रख ठुमक चाल गोपाल की ॥
 मद हास्य धु घराली बेणी चद्र रेख लख भाल की ।
 कोटि काम शर्मावन हारे मजु माहिनी गाल की ॥
 कु डल कणु दिव्यमणि नासा चमकत धेनु पाल की ।
 रास रग गोपी सग खेले चाल चजे ज्यो मराल की ॥
 गाय चरावे वेगु ब्रजावे नाची रागिनी ताल की ।
 छवि कदम्ब तर बहू सतीरी ! देर भुकी उस डाल की ॥
 मोहित हुए महामुद मन म गाथा शिवजी दयाल की ।
 'बँध हरि' अ ग अ ग बलिहारी वैभ्या चरणन घाल की ॥

वेणु बाज उठी (गोपाल वेणु वादन)

वेणु बाज उठी मधुवन मे जसुमति नन्द गोपाल की ।
 धेनु ग्वाल सभी उठ धाये सुन मुन मधुरी रसाल सी ॥
 नानत गावत वनहि कहैया पकडे डाल तमान की ।
 माथ छवि बिदु त्रय रेखा रोचन तिलकह लाल की ॥
 एक हाथ अ गुली रख वेणु दूजी गल मे ग्वाल की ।
 शोभा कर्ण मणि पद धु घर नासा बिच गलमाल की ॥
 धनश्याम बदन म पीत दुपटिया उरभुज बाहु विशाल की ।
 बलिहारी श्याम मनोहर ये 'हरि बँध' पितु और बाल की ॥

अबके दीजे (ईश प्रार्थना)

अब के दीजे वास बहा प्रभु चित जहा भी प्रसन रह ।
 इसी जम गा गीत तुम्हारे नामावली मम अमर रह ॥
 घर के चाल न लायक प्रभु निधि की निपिदिन ही धार बहे ।
 'बँध हरि' हिरदे उपजा के प्रभु आज्ञा स पद ये कह ॥
 सोरठा मन बुद्धि अम मे पडे कि कत व्य विमूढ हा ।
 सोचत भवसागर सडे ईश सत्य या भोग है ॥

देख युगल छवि (राधा कृष्ण युगल छवि)

देख युगल छवि राधेश्याम की हिय आनन्द समामा ।
 कामरति शत लाजन हारे वेद नति कह गायी ॥
 महा महिमा शालिनी यह शोभा देगन का चित्त चाया ।
 नख शिख शोभा रोम रोम की मन्द हास्य मुख भाया ॥
 कृष्ण गौर साकार रूप की एमानी मैं पाया ।
 एक हाथ हृदयालम्बन है एक मुरली स्वर लाया ॥
 दोउ हाथ राधे विनयावली मन हु आनन्द की छाया ।
 नील पीत पट धरे सुतन म ज्या हिमकर धर आया ॥
 पद नूतुर भनकार निराली चालत धीरे भाया ।
 कण माथ गल हार विराजे वाजू बन्द चमकाया ॥
 कम्बु ग्रीव नर कटि सिंह सी लघुटि दुपटि हिय बाया ।
 चिबुक कपोल भात गण्डस्थल गोरोचन है लगाया ॥
 कमल नयन सग चन्द्रमुखी तन बेशर अंगर रमाया ।
 अघराघर की मधुर माधुरी देखन को जग घाया ॥
 मोर पख घु घराली लटकी अनकावली उलभाया ।
 भक्त हृदय का मानसरोवर हस बन मोती छाया ॥
 जग जननी माया की मो पर आज हुई है दाया ।
 हृदय बुद्धि मम भात भाव से छवि का भाव कहाया ॥
 जग दगुरु और जगत मातु पितु चरण प्रेम हुलसाया ।
 हृदय कुसुमकी माल बनाके प्रभुजी को हार पहनाया ॥
 राधा कृष्ण उर मन बुद्धि का हीरा मोती धराया ।
 'बैद्य हरि का चरण कमल मे नित नित प्रेम सवाया ॥

जसोदा प्यारे (श्याम की माधुरी)

जसोदा प्यारे नन्दकिशोर । टेर
 देख माधुरी मुनि मन भावनी हू आनन्द विभोर ॥
 जनबाणी सुनन म आती है वो नित चित्तचोर ।
 लटि लटकाये मुकुट सजाये फिरत चपल गति जोर ॥
 कुंकुम रोचन माथ तिलक है मैं देखे कर गौर ।
 ग्वाल बाल सग दधि लपटाय खींचत है मन मोर ।
 तोतरी माधुरी रीस भरी हसी हसत-हसत चहु और ।
 रास सचारी कु जविहारी गिरवर धारा घोर ॥
 येनु पालक प्रतना घाल दलन पाप धनु घोर ।

जग रखवारे नद दुलारे यशुदा देवकी हृदय किशोर ॥
 'बैद्य हरि' मन मन्दिर वासा करहु दिवस निशी भीर ।

मैने श्याम नाचते पाये (कण्ण बाल क्रीडा)

मैने श्याम नाचते पाये । टेर
 मोद भरे यशुदा रानी ढिग मुखहु दधि लपटाये ।
 कर मोदक अ ग अ ग मनोहर कोटिक काम लजाये ॥
 तिलक भाल गोरोचन केशर मातु पितु मन भाये ।
 एण कुहर नासाणे मोती गजमुक्ता गल छाये ॥
 तडित् प्रभावत् दतिया चमके मोर मुकुट हुलसाये ।
 मन भावन देवकी नदन को हूत् आसन बैठाये ।
 नैन पेटी मे मन ताले से बन्द किये मै पाये ।
 बैद्य हरि की उरभूमि मे सीचत सुधा सदा ये ॥

चाकरी करतहु घनश्याम (सेवा कवित)

चाकरी करतहू तोरी घनश्याम मै ।
 और नाही काम मेरी एक यही ड्यूटी है ॥
 हाजिरी लगाना मोरी महिने की पूरी पूरी ।
 एक तेरी आश मोहे और आश खटी है ॥
 तकवान कटे दिन एक की मेरी हू स्वामी ।
 कलि कालिमा भी मेरी नित जाय छूटी है ॥
 तोरी कृपागरि से सेवक का बाना बना ।
 देख जीऊ मुख बशी गले मे दुपटटी है ॥
 मुरली बजाने हारे गैय्या को चराने वारे ।
 अह्या को हराने हारे हाथ मे लकूटी है ॥
 गिर पे मुकुट मोर हाथ मे है पाचजय ।
 अजु न घोर बाषा मनसा जो टूटी है ॥
 चीर को बघाने वारे द्रुपद सुताहू के ।
 भरी सभा औरवो में लाज जब लूटी है ॥
 हार धके नर नारी प्रासरा न रहे दूजा ।
 बैद्य हरि तरा नाम सजीवनी बू टी है ॥

कर वमन पद मुख कमल में प्रलय दृश्य प्रवेशित ।
 बट पत्र पुट आसीन बाल मुकुट नौमि नित करम् ॥
 वैद्य हरि हृदये सुदायण दु स हर भानद करम् ।
 दीजिए वरदान पातक लोव रक्षक गिरिधरम् ॥

जय राधा कृष्ण श्रीराधा कृष्ण प्राथना

जय राधा कृष्ण दयाल हरि—कुट अगुम्पा कलि तन नगरी ।
 बनवर कलि वलुप सहारण मे—गुण ज्ञान शशि भवतारणम् ॥
 धापित सुकृत भू-भार हरा—रक्षित साधु मुनिजन सगरा ।
 हो अभ्युत्तान धम भानु—वसुधा सुर दहतम कर जानु ॥
 अवलम्ब सदा प्राणी नागर—उपदेश कर्म का भर गागर ।
 प्रिय भक्त पाथ पथ सागर हा—गीता के मज्जु उजागर हो ।
 अघतम रजनी व नाशक हा—रवि सभति पदम विक्रमक हो ।
 सुख सरिता की अमल धारा—भव भेषज हो अपरम्पारा ॥
 लख चोरासी टारत दु ख से—मोदित हो जानाम्बुज सुख से ।
 आत्मा मन जान दिवाकर मे—व्यापक हो सदा चराचर म ॥
 वेदो मे सामकृत्वा सुदर—ज्योतिमय सबके तन मंदिर ।
 रमणीय ऋतुषु वसुमाकर—सर पृ हो रूप महासागर ॥
 नदियो मे निमल गंगा हो—देवों मे पूजित रग हो ।
 छलछिद्र कपट नाशक दानव—आशा हो अमर सदा मानव ॥
 द्रोपदी के धीर सभा वधन—दु शासन कौरव मद मदन ।
 शिशुपाल जरासाक हिय वदन—रु ख काम नोभ बैरी प्रदन ॥
 हरि वैद्य रति चरणे दाता—मुद सम्पति वधक सुरशातम् ।
 मुनिमानस रजन मदुगाता—सोवना पालक पितु माता ॥

कमनीय कोमल (श्री राधा कृष्ण छवि वणन)

कमनीय कोमल चाह तर छवि कृष्ण राधा की बनी ।
 मुपुट कु डल विश्व मोहनी पश्यतु शोभा घनी ।
 ।सर मृदु लटि रग अलीसी बेणी शोभा पा रही ।
 भाथ मृगमद लेप रेखा बिन्दु सुख वर्षा रही ॥
 एक कर बणी लगी मुख एक राधा के गले ।
 भृकुटी नयन मुख माधुरी नाचत कदम्ब तह तले ॥

हरि हर भक्ति रसामत गीत ग्यारवा विधाम)

तन गीत नीलछटा वसन की गल सुमाल बिराजती ।
 मजुपद नूपर ध्वनि की मधुरिमा हिय वाजती ॥
 एक कर राधा कुसुम हैं एक प्रभु हिय सोहता ।
 युगन मजुन जोटी राधा श्याम लस मन मोहता ॥
 नील अम्बुज काति मुखकर नयन को हुलसावती ।
 त्रिशिनायमुखी राधा सुबोमन पद रति मन भावती ॥
 त्रिकुली-केयूर कर करुण करानुलि राजती ।
 दिव्यमणि नामा बिबुक् मे-दीनता दु ख भाजती ॥
 मजु कचुकी उर दुकूल मुपट्टी पन्ली लटकती ।
 भजतु हिय प्रिय शुद्ध मनसा पाप तम रुज भटकती ॥
 युगन छवि मदाकिनी मे बढ़ती अमृत घाग है ।
 'बैद्य हरि' पीने उदर भर तत्व सब का सार है ॥
 रक्त कण रजित सुस्नायु रोम हिय मन भार ही ।
 प्रेम प्रभु की सधुण गाथा मोद नित वर्षा रही ॥

मजुल कोमल (श्री कृष्ण प्रेम कलभाषण)

मजुल कोम गात सखि नयनो मे वजल रेख लगामे ।
 भाजत आगण मन मोहन मुख सतानिका अधि की लपटामे ॥
 पाण्डु रग धूलितन नगरे मोग पख सिर मुकुट सजाये ।
 मागत मानन मधुर डली नित नूतन छवि मरे मन भाये ॥
 ने गोद सखि मुख चुम्बन कर छाती मे मैने लपटाये ।
 विकमीकली हृदय कमल कीरा ! तन रोम रोम नर हुलसाये ॥
 कभी हसत कभी रुदन भाव से गीक भृकटी की टेढ चढाये ।
 श्याम करत बल्लोल रम्य नित 'बैद्य हरि' मन मन्दिर आये ॥
 अरुणार्द्र पद-श्यामलता-हिय कज कलेवर- ओठ लगामे ।
 मृग माल बाल दिव्यमणि कु डल गल गजमुक्ता की छवि छाये ॥
 मृदुकटि चरण घुघरु वाधे कनक रजत धातु के जाये ।
 कर पहु ची तन भगुली पहिरे हस कपोल मुखनि मुलकाये ॥
 भव दु ख मोचन श्याम सखि सरा देख करत स्तुति मनकाये ।
 मिर नटनि बध प्रेम पाषा म उपवन ध्यान अमर फल खाये ॥
 प्रेमानन्द विभोर भोर ही बैद्य हरि ने सुद गाये ।
 सखि लाभ लूटा जिन लोदन सफल जम

भजु बालमुकुन्द (श्री कृष्णप्रायना)

भजु बाल मुकुन्द यगुमति नन्द आनन्द क द प्रह्ला परम
शिर जटा विशाल मृगमद भाव श्रीहा ग्वाल सगकरम ॥

मस्तक मुकुटि मुन्दर भगुटी ग्राम बधुटी चित्तहरम् ।
भजु बालमुकुन्द ॥

कुल बालन शोभित आनन अपिबर ध्यान नित्य वरम ।
शतदल मुख नाशन मान विमोहन मस्तक राचन धेनु चरम ॥

रम्य गण्ड स्वनी धिक्सी हृदयकी दयत मा अली दु, छ टरम ।

भजु बालमुकुन्द ॥

मुन्दर श्याम लज्जित काम शोभापाम बलेशजरस ।
गता वनमाना नयन विशाला कालहृकाला दत्यपरम् ॥

मुत्र वशीघर मुन्दर पदकर टारत भव डर रटहु नरम् ।
भजु बालमुकुन्द ॥

श्यामलगाता बलि पितु माता जग के प्राता सदा डरम् ।
नयन प्रेम भरि देख 'बछ हरि' दनुज दु ल टरी विश्वभरम् ॥

राधा कान कलि अघशात हरति नितान्त-लोभ शरम् ।
भजु बालमुकुन्द ॥

गिरवर धारी कुजविहारी कृष्णमुरारी मोद भरम ।
दीनदयाल परम कृपाल स्मर गोपाल मोक्षधरम् ॥

नित्यानन्द परमानन्द सच्चिदानन्द मधुर स्वरम ।
भजु बालमुकुन्द ॥

गोविन्द मेरे मन (कृष्ण प्रेम)

गोविन्द मेरे मन पाय सगि हिय कमल मूल जल सींच गये ।
तज पुज प्रतिभा मनहारी भर गगरी के उत्तीच गये ॥

छत्रि बहा कू श्यामल मुख श्री गोपाल यशोदा नन्दन की ।
मोहन मन उर धर रोम रोम रग प्रेम सुधा से खीच गये ॥

दुपटि कध पात पट कटि मे पद नपुर की ध्वनि वाज ।
गल रत्ना की माल भाल म मृगमद मलय मुदीख गये ॥

नील पद्म कान्ति मुख-कर पद अरुणाई शोभा पाई ।
मुन सागैता की धार बहा मन्दर मोद मधु नीप गये ॥

भ्रुकुटि की तिरठी दृष्टि से हिय मंदिर स्थान किया उनने ।
मृत्नाशा मजु कपोन हरि लज्जित कर ममथ चीत गये ॥

बशीघर भाधुरी स्वर लहरी बाजत नाचत अरु गावत है ।
हरि वैद्य कलेवर चेतन मे ज्योति से अपनी जीत गये ॥
रम्य शिखा बद्धिन बेगी तन शोभित ग्रीवा शय सङ्ग ।
दनिया चमराय भृष्ट अधरन अखिया मटकाय घसीट गये ।
डालतले तरु ठाढे कदम्बरी धेनु चराव न दलाला ।
भूरजी के वादन म गय्या कर सचय श्याम महीप गये ॥
बोल चाल दृष्टि हसना सब गति निराली मन मोह ।
हिय कज कलेवर भत्र मुग्धनी नैन छवि से पीच गये ॥

ब्रह्मविष्णुमहेश्वर प्रणायाम पूर्वक त्रिदेव प्रार्थना

ब्रह्म विष्णु महेश्वर जगकारण भरण हरम् (माग्यतीत्यथ)
ब्रह्माण्ड कीटि रक्षक अतिस नामक भृजु परम् ।
ब्रह्मकृत अखिनोत्पति रचनापु ध्यान निरन्तरम् ॥
विश्व पथ प्रदर्शक निज शास्त्र दशन सुन्दरम् ।
विविध भाति स्वयम् हो सप्तपि घाता विधि भवम् ॥
सष्टि रचने ऋषि सुदार कृत पितामह निज जवम् ।
मुख चतुर ब्रह्मसासनस्थ वेद हस्ते धारणम् ॥
रक्त वरा हृदय घर सासार सागर वारणम् ॥
विश्व पति लोकेश विष्णु पानन जग पोषणम् ।
अगम शक्ति तेजसा निजकारक अधशोषणम् ॥
शख चक्र गदा सुदशन धारिण पीताम्बरम् ।
भजतु शोभन श्याम कोमल मनहृदि तमला वरम् ॥
कुडला सकिरीट धारी पदमनाभ सुरेश्वरम् ॥
पदम लाचन पद्म भुखवर पद्मपद परमेश्वरम् ।
कोटि भानु सम प्रकाश विश्व मोहन पदरजम् ॥
शिरसि धारय वैद्य हरि तल्लीन नाभि रट अजम् ।
श्वतवर्ण शिव नितयन कुरु ललाट नितस्थिरम् ॥
साहारक प्रलयोत्क घक शुद्ध मनसा अरु गिरम् ॥
घाता विष्णु शिव सनातन स्तुति कुरु निजमादिरम् ।
धार प्राणायाम मित नाभि हृदयमस्तक चिरम् ॥
स्तान पान प्रकाशक स्मर भक्ति भुक्ति कलिप्रदम् ।
बुद्धिनेत्र हृदिभन एवाग्र कृत्वा त्यज हृदम ॥

इन्द्रशची सुरलोक गीती (अमरेश्वर प्रार्थना)

इन्द्रशची सुरलोक वासी स्वागत परमादरम् ।
 धर्म गुण आदशक तित नोमि सुरगण मादरम् ॥
 नाश ह ता दनुज ग्राधा ईश्वर पथ गामिनम् ।
 कल्याण कारण निज जगत क ध्यानगत श्री स्वाभिनम् ॥
 विश्वपति शरतार कारण भार भू पुग प्रार्थिनम् ।
 टारणे सान्मन्विता परण शरणाथिनम् ॥
 अमल चरित पान युक्त ऋषि जनेषु महापनम् ।
 त्याग तप भूति ममुज्ज्वल शोभित नित कायकम् ॥
 तदन शरण्य सुचारिण शुभ काय नित चिन्तन परम् ।
 वैद्य हरि नोमिपद हे धय माय सुरवरम् ॥
 गन्धर्व किन्नर अप्सर मागध सुचारण वष्टितम् ।
 मोद मुद धानद दान सर्वा प्राणिषु चेष्टितम् ॥
 साकृत शुभयत्नभागादान सुन्दर कारणम् ॥
 दुःख अघतम क्लेशभवभय आधि मूलज टारणम् ॥
 यत्र पुष्टित मानस शुभ अग मजु क्लेवरम् ।
 वर्षा सुभिक्ष सुकारण ईश्वर विभूतिषु सुन्दरम् ॥
 कलिकल्मष साहारणे भव दोष कर्म विपाजनम् ॥
 मज्जल हिय सुमति प्रदाता प्रभु गुणावली राचनम् ॥
 क्रोध काम अहृष्टि छत्र दरिद्र मोह विनाशकम् ।
 जगत पोत सुदाहण काटत यमज भय पाशकम् ॥

ज्यतिघन्वन्तरी (प्रार्थना)

जयतिघन्वन्तरि प्रभु सुरास्वाय्य दायक सुन्दरम् ।
 दोष वातु मल समान्नि कारक तय दुःख हरम् ॥
 माद इन्द्रिय आत्ममन दाता सुखाशा अतिवरम् ।
 स्वास्थ्यलक्षण ऋषि प्रणीत गायु समासत सुखकरम् ॥
 विषय क्लेश हर मुहृष्ट्या माग दश क्लेवरम् ।
 हिन विहार आहार पूरित शान्तिशम सुमनोहरम् ॥
 सत्य सुमति प्रकाशक धी शुद्ध मन धति स्मृतिकरम् ।
 कलिज पाप विनाशक सुविनाशक धर्म परम् ॥
 धर्म अथ सुकाम मोक्ष प्रदायक सव मुनिवरम् ॥

दोषजागतुक हर श्री रोग राज महाज्वरम् ॥
 सुधामयन समय प्रकटे अमृत कुम्भमृदुकरम् ॥
 अमरता सुरदायकन्यज त्वरित हाला हल डरम् ॥
 मदहर मगल प्रद औषधलतापु रसभरम् ।
 अमृतपणि सुकोमलाग हर तु रोग निशाचरम् ॥
 वैद्य हरि धवतरि स्तुति कथयति मधुरम्बरम् ॥
 उभय लोक सुखावह आरोग्य दाता नितनरम् ॥

श्रीधवन्तरी प्रार्थना

श्रीधवन्तरि आदि देवने अखित विश्व कल्याण किया ।
 चक्रसुदशनसुधाकुम्भले रोग हरण अवतार लिया ॥
 जो पाले उपदेश दहों वे वह प्राणीशतवप जिया ।
 जितेद्वियो को नहीं रोग हो चरक लिखास्मर शुद्ध धिया ।
 इन्द्र देव पीडा जनमन की धवतरि से बोले राज ।
 नरपति काशी के सुत होकर आयुर्वेद का करना काज ॥
 दिवोदास आयुर्विद्या पढ हूए घरा में सबके ताज ।
 अमर बना वैद्यक विद्या को अष्टागो म रचदी आज ॥
 श्रीधवतरि के आगे हम ले सुमनाजलि खडे हुए ॥
 'उन्नति पथ मे' द्रुगतर गति मे-आयुर्वेद मे अडे हुए ॥
 दोषों को दो दूर भगा-घोर घुरी भावना पडे हुए ।
 छोड विचारा को-मत्पथ मे दृढप्रतिन हो जडे हुए ॥

भ्रिपग्वरो से

सौम पिपासा बशीभूत हो स्वगुण छिपाना भारी भूल ॥
 निधि ले कोई प्राया गया नहीं मिथ्या मन को कर निर्मूल ।
 समुद्र भ्रिपग्वरो के गुण को रख ज्यो कमल नदी के बूल ।
 साम जगत मे प्राणि मात्र का हो तब बरपे तूम पर फूल ॥
 कहन स नहीं काय चलेगा बर दिखलाना सब बुद्ध आज ।
 अपि मुनि घोर आयुर्वेद श्री पहले या सबका सिरताज ॥
 समय विवशता बस पिछडा यह रवनी हाथ तुम्हार ताज ।
 धवतरि न सुधा मदद ले जीव दया वा करदो काज ॥

सामकल्प की अमर जड़ी जो तिरती चरक म बबल आज ।
 अघमवश गीं दिग्गताती है चकित हुआ सब गेद्य समाज ॥
 कर्मवीर बन घमवीर गोज भिषग्वर । सब बूछ त्वाज ।
 अमर अरटक नाम तुम्हारा हा जग म गेद्या का राज ॥
 श्री घवन्तरि हम सुमति दो वुमति अविद्या कर दो दूर ।
 भारत क सत्र भिषक सदा हा कमवीर अम य भरपूर ॥
 जागत कर आयुर्विद्या को स्वस्य बना वसुधा को धूर ।
 "हरि" गिरादो सब स्थानन म जड़ी सजीवन क षण् चूर ॥
 राम वृष्ण शिव नाम ती महिमा हिय मा धार ।
 रसना नित गाती रही यही जग का सार ॥

एकादशो विमल

श्री घवन्तरि भगवान की जय

श्री घवन्तरि जय हो । आरती घवन्तरि भगवानकी

ॐ श्री घवन्तरि जय हो । टेर

मू भारत जन सबका मदा स्वाम्य्य चय हो ॥

सुधा कलश ले मृदु करनति मे रत्नाकर निवसे ।

सौम्य रूप लय वैद्य के हृदय कमल विवसे । ॐ घव

श्री वत्साङ्गु मणि उर शोभित आयुर्वेद प्रभा- ।

यज्ञ भाग ले प्ररटे अमरेश्वर की सभा ॥ ॐ घव

गद हर आयुर्वेद प्रवक्तक शल्य शास्त्र ग्याता ।

कम योग सत कीरति जग म विख्याता ॥

पर उपकार सुमन बुद्धिमन मम नित नव फूले ।

अमृत रस बुर सीचन सर्वोपधि मूा ॥ ...

तप प्रसाद आरोग्य सुरम्बरि बहे सदा स्वामी ॥

हृद दरिद्रतम व्याधि दुख अतर्कामी । ...

शल्य शास्त्र की लुप्त पनाका आकर तहराग्रा ॥

अमृत पाणी 'मुषार' की धी मानय आओ । ..

स्वर्ण राशि त्यज मृत दया का हो मन मे सचार ॥

कमभ्यास शस्त्र का आओ करो प्रचार । ..

यज्ञ रूप अघतम क नाशक भिषन् हृदय के दिनेश ॥

अष्टागायु सुक्रीमदी खिने स्वास्थ्य राके ।
 आत्मेन्द्रिय मन स्वस्थ बगचर जग मण्डल सारा ॥
 सत्य सुमति सद्भावना चले सुधा धारा ।
 धूप दीप कपूर अगर अह पुष्पाञ्जली माला ॥
 है नैवेद्य समपण सेवा सब काला ।
 दो बरदान प्राणपति सब तो व्यापे अखितानन्द ॥
 "दीध हरि" तव स्तुति (भारती) गाई मन स्वच्छन्द ।

जय माहति हनुमान्जी की प्राथना

जय माहति बुद्धिमत्तावर वार्यवाहक राम के ।
 तप तेज मूर्ति ब्रह्मचर्य की हैं जितेन्द्रिय काम के ॥
 राम पायक बाल लीला मेलिमुख मह दिन मणि ।
 अरुण पीताम्बा समरु फणवद मुख भ्रम भ्राम के ॥
 माहति रकी सब प्राण वायु जग अधेरा छा गया ।
 इन्द्र वज्रघात टेढी हनुमई बलधाम के ॥
 राम वानर राज मंत्री कारक धीरज प्रदम् ।
 बालि बध हनु ही-सीतावेपणे-पुज माम के ॥
 मार अक्षय मुद्रिका दे मातु सीता सुख वरम् ।
 जार लका मार दानव मृत्यु हर कपि जाम के ॥
 राम लक्ष्मण भक्तिका देवि पठा पाताल मे ।
 मार अहिरावण हृष्य कर अमर शोभा धाम के ॥
 शक्ति लक्ष्मण के वीर तव लायकर सजीवनी ।
 बाधा लक्ष्मण की हरि रघुराज पूरण काम के ॥
 सुग्रीव के सेनापति बन हृष्य रघुवर विजय के ।
 'दीधहरि' छाया करि शिर ओट अघतम धाम के ॥
 अजनी प्रिय सुत वृषा से मिलता ओजह आत्म बल ।
 बल मनीषा सुमति सम्पत्ति दाता यश शुभ नाम के ॥
 उपकार मानो राम ने धनवाद कपि की देदिया ।
 सुर नर मुनि नही कोई ऐसा प्रिय कपि सब याम के ॥

हनुमान पियारे — भजन लक्ष्मण शक्ति पर

हनुमान पियारे लक्ष्मण के लाग्यो शक्ति बाण । डेर
 राम दुःखा हनुमत से बोले त्यागो दीध सुपेन ॥

व्याकुल जी मेरा होता है भाई हृदय की देन । हनुमान
 गढ़ लवा स घर समेत वपि साथ बौध मुमान ॥
 प्राणो के स्वामी ह बौधवर । बटे राम भगवान । हनुमा
 बोधराज बोध पर्वत स बूटी सजीवन त्यागो ॥
 सूर्योदय स पहले घोटो श्री निरुमण को पिलावो । हनु
 चन्द्रकान्ति सम बूटी चमकत मही सरल पहिचान ॥
 वपि दक्षि चमकति बहु बूटी साथे द्रोण महान । हनु
 गर्वा बुर कुछ हनुमत्पुत्र म गिरि लान से आया ॥
 नभ से देख निशाचर भ्रम स भरत १ बाण चलाया । हनु
 विन पर शर लगा पैर म गिरत बहत वपि राम ॥
 भाग भरत आय हनुमन पह कथा सुनो दु य याम । हनु
 बोने शर पर बठ जाय प्रिय पर्वत सह हनुमान ।
 अभी पदु चोमे पल भर म दिग रामचन्द्र भावा ॥ हनु
 कपिवर बोले राम वृषा-तव-विना बाण मै आज ।
 अरण्योदय से पहले पदु चू राम लगन के का ॥ हनु
 घोट सजीवनी पाई लखन को उठ बैठे तत्काल ।
 मोदराम आनन्द सवन को घन २ हनुमत बाल ॥ हनु
 जो हरि गाया गाव लखन की रामचन्द्र परताप ।
 मोदा "नद" रोग्यता पाये छूट मन सन्ताप ॥ हनुमान

कवित्त-शाति कहा है खोज करनु लगारी मन सर्वाहि सुपथमध्य चक्कर लगान के
 ऊची नाची तह म सदा ही पँठकर के खोजी ना मिलीरी जब
 हरपाय के ॥

राम के दुनारे के स्वामी की शरण में हार थर बैठ गया मन ललचाम के
 प्रिये मैने पाया वहा शाति सुराज शुभ 'हरि' बहु गाती जिह्वा वपि
 सुनायके ॥

हनुमान बलि (भारुति प्रार्थना)

हनुमान बली अजना के नदन सुन लीजो विनती मेरी ।
 राम स, सेवक वेशरी न दन वृषा करहु नित नित केरी ॥
 लभण राम धूमत यन मे खोजन थ सीता प्यारी ।
 तुम आयक भैत्री करा सुग्रीव से सुखी बना मुद तन हरी ॥
 बरधि साथ गये लका मे सीता की सुधि लाने को ।
 मुद्रिका पर सिया घोरज द लक जार की नही देरी ॥

वानर दल न प्राण बचाय सुधिला सीता राणी बी ।
 चढामणि का दी सहनाणी राम के सोच मिटे डेरी ॥
 महावीरता दिसावै जब राक्षस दल को मार गिया ।
 काम किया मनापति का श्री राम वृषा थी नित नरी ॥
 नक्षमण का जत्र शक्ति लगी तब ला मजीवनी रात्रि मे ।
 लखन उठे मन भाद राम-सिप सो कहति त्रिजटा चरी ॥
 सकट टारे थे सब दल के मारट मंचन हार तुम्ही ।
 वद्य हरि सकट टारो पूज्य चरग कर नही दरी ॥

जग जननी (श्री महाकाली लक्ष्मी सरस्वती वन्दना)

जग जननी जय जगदम्बे श्री तुमका प्रणाम ।
 विश्व भरणी जग ताण्य तरणी तुमको प्रणाम ॥
 जग सुख कारणी सकट टारिणी तुमका प्रणाम ।
 कविमल हारिणी पाप विदारिणी तुमको प्रणाम ॥
 बुद्धि विधाता भव दुःख नाता तुमको प्रणाम ।
 अन्न प्रदाता तू जगमाता तुम को प्रणाम ॥
 तू जगज्योति अखिल विभूति तुमको प्रणाम ।
 भगल मूला जग अनुकूला तुम को प्रणाम ॥
 कालि दह धरि दानव क्षय करि तुमको प्रणाम ।
 चापित प डरत सुरेज तुमको प्रणाम ॥
 रूप कराल लख तप भाल तुमको प्रणाम ।
 पूज्य मुग्धवरि अखिल विघ्न हरि तुमको प्रणाम ॥
 लग्नी रूपा भाद म्वरुपा त्म को प्रणाम ।
 रम्या भरणा रजित चरणा तुम को प्रणाम ॥
 मुखडि कारति कर भक्त तिमिर हर तुमको प्रणाम ।
 आन शाभा लख मन लोभा तुमको प्रणाम ॥
 शारद रूप धरि मद मति हरि तुमका प्रणाम ।
 दव अभयदा नरपु सम्पदा तुमको प्रणाम ॥
 दया सदा कर दे प्रसन्न वर तुमको प्रणाम ।
 वरत 'वैद्य हरि बिनति जोर करि तुम का प्रणाम ॥

श्रीजगदम्बा महा काली प्राथना

श्री जगदम्बा माता का यह उत्सव आज बड़ा भारी ।
 नये षप के नवरानो म वरत सब जग नर नारी ॥

ऋद्धि सिद्धि की दाना धन्व करती गवकी रखवारी ।
 धनदे । हर दारिद्र्य रोग को करती सब सुख महतारी ॥
 विश्व विमाहिनी जगदम्बे में करता आज प्रणाम तुम्हे ।
 ज्ञानदवारिणी भव भय हारिणी शान्तर प्यारा सदा तुम्हे ।
 कनिमल हारिणी दुःख वि हारिणी सुख वारिणी म सदा तुम्हे ।
 माक्ष प्रदायिनी हरि मन भायिनी विश्वप्रभूता सदा तुम्हे ॥
 मधुसूतभ दासव न जग मे आस महा फलाया था ।
 कणत्र मोद तपस्या से अदभुत उसन वर पाया था ॥
 वर अनुत्प रूप घर नेवो न परनाक पठामा था ।
 रक्षा की सब देवतरो की ब्रतोकी यश छाया था ॥
 फिर उत्पात रचा महिषासुर न देवो को दुःख भारी ।
 दिया रात दिन गय शरण म देवी की अनुत्पारी ॥
 हो प्रस न श्रीनधमी बोली कर दय वध म भारी ।
 क्षण म नाश महिषासुर का वर नेवो को सुखकारी ॥
 अपने गुण म गु भ निशु भ भी बल और मद म थे भरपूर ।
 दूत के द्वारा कहताया मम रानी हा मैं सबका शूर ॥
 उतर म था शान्द बोली, रण म दप करे जा चूर ।
 मरे से बलवान लोक मे हा भर्ता मेरा वह शूर ॥
 कह कर शु भ निशु भ का रण म मार गिराया जब तत्काल ।
 देव दजुन सब धार्मिक प्राणी उसी वक्त हो दुःखी निहाल ॥
 रूप प्रचण्ड दख शारद का गये मनावन सब बहाल ।
 ब्रह्म मुरारि शिव इन्द्रा दक कर पमन गा स्तुति रमाल ॥
 तब स सबने सवही मनोरथ करती देवी महारानी ।
 ऋद्धि सिद्धि र धन सम्प त द कहलाती है सुख रानी ॥
 नवरानो क न्य वष म करे स्तुति मीठी रानी ।
 मन वाछिन पाव तर नारी "वच हरि" अनुभव जानी ॥

एमन तू पापी बडा (ज्ञान दोहा)

एमन ! तू पापी बडा तभी त बूडा होग ।

मदा एम रम मुन नी ज्या बहता वय शात ॥

तू ध्याननि है नही दता तू ध्यान तुम्हे मगभन जो नही व पूरे मतिमत ॥

योगवही हा काम वा मिलके तन्मरूप जमी जिनकी भावना वमा तेरा रूप ।

वृष्णाजु न सवाद मे मन वषकर का ज्ञान-ही मृग लोचनि ।
जब कभी तभी मिले भगवान् ॥

दृढ मानव का वन मदा नेता मन मटाराज-दृढ मानव ।
अदृढ करे दशोद्वयन सि ताज ॥

जय महाकाली (श्रीमहाकाली प्रार्थना)

जय महाकाली मुसविन सर गण अनरेश्वरम् ।
दानधोरिथत क्लेश सब युग हृति दु ख सुद दुनिवरम् ॥
जब महा विकराल तेरा रूप मारक होत है ।
देव व्याकुलता असुर हृदि नागमनि षडता परम ॥
सहार शक्ति शिव स्वरूपा देह कज्जल वृष्ण सा ।
डाह मुख फाडे नयन गिह्वा मुतज भयकरम् ॥
मिर जटा विपरी भयानक भ्रुकुटी ओज समा रहा ।
नर मुण्डमाल गले नटकती कर कृपाण र स्रप्परम् ॥
काली सरदशती लक्ष्मी हो शिर दाट शुम्भनिशुम्भ का ।
रक्तविन्दु सप्परे मधु कौटभ महिषासुरम् ॥
दारादि सब धन सम्पत्ता अद्वि विभव और वित्तभी ।
शत्री सुख वरदान अम्बा मुग्धर मत सुदग्म् ॥
प्राय मनागन दह्य शिव वद्राशि सब वर जोड कर ।
पूजित विनय सदा काली सुकामल आदग्म् ॥
जन भ्रमर लोक स्वराज्य म जब फलती दारण व्यथा ।
रूपपर श्रवोक्य पावन करति नित क्षय आसुरम् ॥
भजतु विश्व विनादिनी "हरि वध" श्रद्धा प्रेम से ।
मक्ष मगत दाविनी उदार करति चराचरम् ॥

जय जय दुर्गे (श्री दुर्गा ती की प्रार्थना)

जय जय दुर्गे दुर्गति नाशिनी मगत राशि माद महा ।
दु ग विचारिणी मवट हारिणी सुग्र सचारिणी नित्य अहा ॥
जयति भरानी गौरा गिरिजा सुरगण मन्त्र मादप्रदा ।
दानव वाधा टा गी अम्बा कर अग्निमदन मुवग्रददा ॥
जयतु उमा मद्राणी काली दात्र शवानन वन कर ॥
भ्रमर वर श्रवोक्य मुदरि गान - डे मुग्धर युग कर ।
जय जय हैमवती वात्यायनी मुख श्रोता की मधुमय धार
मात भ म् नून जन मन म र्णा बहाधा धपरम्पार ॥

शिवा ईश्वरी शर्वांगी ह्य मय तया जय वाच २१ ।
 जग जनाल ग्रथित बाधन यो तव अनुग्रहा गान २१ ॥
 पावनी दुर्गा दाक्षायणी इत नामा यो अततवार ।
 वत् कनकर ह्य मयव मा मत्य माग वा मुख सवार ॥
 अम्बा त्रिगिरा आर्या मानु सत्र मगना नाम तर ।
 नि य ह्य ह्य कमल त्रिगिरा त्र्युद्धि धति स्मृत मन भर ॥
 गामुख पटमुख मातु मृडाना शिव शकर यो सदा प्रिया ।
 राम राम वस मानस मर तत्र जीभ मुम्भ नाम प्रिया ॥
 वीर्य हरि दुर्गा माता क नाम प्रेम मजुन गाय ।
 मया मुह्यत जय जय उच्चारो जगदम्बा क मन भाय ॥
 त्रियया कलवर काल जनिन त्र्युग जाय सरावर सक्ुचाई ।
 मानु प्रभाव दिनश उदय हा नूद नूद म विक्माई ॥

महाकाली जय (महा काली प्राथना)

महाकाली जय असुर पराजय तृप्त निश्चय महिम्प धरम ।
 असुर विदारिणी सुर मुदकारिणी जन दु ग्रहारिणी मातु वरम् ।
 रूप भयकर मधु कैटभ उर छाडत करशर प्रलय करम् ॥
 महाकाली जय ॥
 वर धर खप्पर रक्त बीज उर भय महिपासुर प्राण हरम ।
 स्वलित कलाप जनिन साताप दैत्य प्रलाप महा ज्वरम् ॥
 शोध नयन मुख हरति दैत्य सुख मुनि सुरनर दु ख सजा टरम ।
 महाकाली जय ॥
 अति विकराल भकुटी रु भाल गल मुडमाल खडग धरम ।
 जघान शुभ शूल निशुभ निमल अम्भ नदी करम् ॥
 अमल दिवाकर उदित सुधाकर पाप शाक्तिकर मोद भरम ॥
 महाकाली जय ॥
 अतुल तेज लख दत्य वश भय रत्त चूस खल नाश करम ।
 महाभयकर जनु प्रलयकर कोप वषधर रजनी चरम ॥
 दनुज कृतक्षय हर सुर नर भय वहत अमिय पय जगत तरम ।
 महाकाली जय ॥
 कृ स्तव अमर दवी प्रवर मुद नित समर हरति डरम् ।
 हरि वद्य मन बधित ह्य तन रक्ष दीन जन चराचरम ॥

जय मा काली हरहु रुजानी नित प्रति पाली आधि हरम् ।

महानापी जय ॥

श्री जगमुद कारिणी (लक्ष्मी स्तुति)

जग मुद कारिणी जय मा कमला-रूप माधुरी सदा निमला ।

रमापति राकेश विहारी-तुमहि चन्द्रिका सदा विपारी ॥

मन पकज कनी सदा गिलावनी-हरि प्रिया सब जग मन भावनी ।

सिधु सुता पद्मासन राजति-जानरूप बटि किन्दिणी वाजती ॥

मणिगण दिव्य माधुरा रूपा-कमल नयन कर पदम अनूपा ।

कनी कामधुक सुख की दाता-जग अलि मन तव चरण रमाता ॥

तोरी कृपा सुख पकज फूले-दल मुदित सब हिय दु ख भूने ।

सुमुखी छवि लख तव जग मोहा-अधुना तव दिन नर नहीं सोहा ॥

तज पुज वश तारी चमक म-हिय मन वश कामिनी बनक म ।

विनय भाव चाहत है वैद्य हरि-पद पकज दे जगह कृपा करि ॥

ॐ श्री लक्ष्मी प्राणपति (आरतो सत्यनारायण जी की)

ॐ श्री लक्ष्मी प्राणपति स्वामी पद्मा प्राणपति डेर ।

सत्यनारायण स्वामी हरा पाप कुमति ॥

रत्न हीर सिंहासन शाभित सग कमला रानी ।

नारद बीणा स्तुति प्रभु महिमा जानी ॥ श्री

वद्व विप्र का रूप कतिपर द दशन द्विजराज ।

कचन भाया दाही सन बन विधि के राज ॥ श्री

भोल महिपति चन्द्रचड न की पूजा यारी ।

विपति भय हरनीहा श्री कृपा टागे ॥ श्री

वश्य प्रतिना करन यारी वन वा छात्र लिया ।

कर धनदान दण द फिर स्तुति जा दिया ॥ श्री

प्रेम भक्ति श्रद्धा स्ति प्रमुख जग य स्यपरा ।

अपनी रात निमाइ उनक वाज गग ॥ श्री

स्वान शिगु मम मूर भक्ति म प्रभु पद द करि ।

दुष्ट तारिदर मित्र न मनगा पुण करी ॥ श्री

मवा मर अ पात्र मराना तय पदा प्रगा ॥

धूप नीर तुामी कत म प्रभु मत्त प्राणा ॥ श्री

मकर शिखर प्रमदर त्र माया न पाव ।

उनरी कृपा नाराय पलय मदा री ॥ श्री

कदली फल मेवा सुप्रेम ले चरणन शीश तवाय ।
घण्टा वीणा पगावज माधुरी वीनी बजाय ॥ श्री
मन्थनारायण मधुर आरती प्रेम भक्ति गाव ।
सुत दाग धन सम्पति बँध हरि पाव ॥ श्री लक्ष्मी

जयति जयति पद्मा (लक्ष्मी प्राथना)

जयति जयति जयति पद्मा विश्व के मानव करें ।
मोद पा तव आकृति स पद कमल म चित धरें ॥
इस कलि म सत मुनि गरु दव नानव मनुज भी ।
सब तुम्हारी वामना म लीन हा अथ म लरें ॥
विश्व मोहिनी विश्व मोहन की प्रिया कहनाती हा ।
महत मन मुदान धन ता द के गह सागर तरें ॥
सत्यना मसार म नित भान तरी हा रही ।
आश्रमा की रम्य सेवा ह्य भर नर नित चरें ॥
सुनभ सत्र मभार कलियुग तवादान प्रदान म ।
दृढ दया तेरी हो रह यह सोच तव पद सब परें ॥
वैकुण्ठ अरु सरलोक म भी दा रही तव रम्यता ।
यह साच युद्धि कठिन तप धम ब्रत सुबोमल म डरे ॥
लक्ष्मी मय सब विश्व देखा इन नयन के नहने ।
हो रति तव पद प्रभु म प्रेम युत जीवन गरे ॥
मृत्यु तक तज आश लतिका नर हिये लहरा रही ।
नर फसा तव प्रेम माया बहु विवशता से मरे ॥
बध हरि मन हा भमर श्रीविष्णु प्रिया पद पूजता ।
मानधन की प्रचलित तव रूप सागर स भरे ॥

जगदीश्वरी विष्णु प्रिया (लक्ष्मी गीत)

जगदीश्वरी विष्णु प्रिया आर्द्रा आनन्दा ।
इह ज म नित्य सुभाग्य मे नर भजतु देती मन्दा ॥
सिर मुकुट कु डल मणि माथे मे माग सिद्धर है ।
माधुरी मुख नील पट तन मजु वष है सुखदा ॥
पद्म हस्ता मौम्यता मुख तेज प्रतिभा मोहती ।
गज युगल ले मू म मण्ड पद्म पूजित सबदा ॥
पदमालया श्री हरि प्रिया कमलादि सुन्दर नाम है ।

हरि हर भक्ति रमाश्रम नील वारवा विश्राम)

लोक माता नित्य हरति मानवी की आपदा ॥
पद अग्रगता इन्द्र वधु मी छवि सुकोमल लाजती ।
मन श्रुती पद कमल अमृत पिवनु सहविधि मुक्तिदा ॥
कमल नम्र मुखी सुता जलधि श्री मंगल दायिनी ।
प्रेम से भज नम से रट मोद कामा नित्यदा ॥
पद सुकोमल घर हृदय म माद हृषित मान से ।
सब पदारथ को प्रदात्री लक्ष्मी माता है सदा ॥
पाताल सुर नर लोक अह वैकुण्ठ वासी चाहते ।
वैद्य हरि स्मर प्रेम प्रमुपुन तमय श्री पद मुदा ॥
तेज पुंज प्रभाव शक्ति विद्यमान जो जीव म ।
घ्न सुकामनता तेरी है भूति की प्रत्यक्षदा ॥

लक्ष्मी जय जय
(श्री महालक्ष्मी स्तुति गान)

लक्ष्मी जय जय सदा सुगन्ध हरति पराजय जग गारी ।
आनन्द वादे नित पद वादे गावन अद्भे गुण भारी ॥
श्याम मुकुश मत्त हर वप शिव सुर शेष बलिहारी । तदना
पद आराम कथ गुण ग्राम नर हिय धाम दुःख टारी ।
वैद्य हरि घर ध्यान मानु वर पदरति मति वर भद्र दारी ।
नम रत्न शिखर नर बलिमलहर पूजित मुनिरर पद धारी । लक्ष्मी
मुष्ट भीष्म धरि भीति भयज हरि तेज पुंज हरि मुष्टनारी ।
मृगमद रोरी माय विदु धरि भन्टी नटपति प्रभु नारी ॥
बनर करण अघनम जरण तूफुन रग्ग पट धारी ॥ लक्ष्मी
मग निन तपन आभा अघन मृष्ट अघन महनारी ।
अग्ग आळ पद अ गुळ नित नम मुळु छवि प्यारी ॥
मुग्गिण गी पुग्ग मुग्गिणी अग्ग विरग्ग भनहारी । अ भी
अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग ॥
तेम अग्गिणी अग्गिणनगी तव अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग ॥
मुग्ग अग्गिणी अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग ॥
अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग ॥
अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग ॥
अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग ॥
अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग अग्ग ॥

जयति भवानी (प्राथना पावतीजी)

जयति भवानी सब सुग गानि अचटरानी शिव प्यारी ।
जय मा गौरी बलिगन घारी विपदा मोरी अघ टारी ॥
रम्य सुवाल मगमद भाल बिन्दु सुनान शिर घारी ।

जयति भवानी ॥

मुटुट सुसज्जित रति भुग लज्जित शम्भु तिमज्जित मनहारी ।
भकुटी नयन शिव पद शयन भक्ति नयन धय सारी ।
कर्णो बनव मणि गण भनव रदानि दमक पुज नारा ॥

जयति भवानी ॥

ओष्ठ अम्ण नामा रमण हीरा भरण जय मा रो ।
गन हिय हार अनि मुटुमार त्रिविणी भार कटि घारी ॥
काग छवि बर कचुकी उरघर माहिय पद चर त्रिपुरारि ।

जयति भवानी ॥

अ गद शुभ भुज अगिल लाज पुज हरति क्लेश रज गजारी ।
शिर पीताम्बर कटि नीताम्बर पदरव नूपुर भयहारी ॥
सती शिरामणि सुभग नारी घनी परम माद जनी भवतारी ।

जयति भवानी ॥

युग युग दानव भय हरी मानव धरहि महाजब दु छ दारी ।
वैद्य हरि मन अदित चरणन हिय मति नित तन पद चारी ॥
जय हो माता बुद्धि विवाता सब सुखदाना गिरिगारी ।

जयति भवानी ॥

शिवजी दोहा

शिव जो करते विश्व का सदा सुमगल काम-

यमो हृदय गिरिजा सहित गणपति आठा याम ॥

तुलसी मूर को ना त हू जिनकी कविता पु ज-

शङ्खावनी क अनित पद सदा हरि हिय गु ज ॥

अथ भक्त भगवान के उनसे पूरा नह-

जावा सुख सहाय से हा कविता मुत देह ॥

मधुर गू जत कुसुम म त्यो मन हृपित आज-

ईश गुगन पुष्पावला म लवलानन बाज ॥

ज्योति ही सार श्री दुर्गा ज्योति वर्णन

ज्योति ही सार जगत म ज्यातिमय जग सारा है ।

ज्योतिहीन मनुज का जग म कोई नहीं सहारा है ॥
 सग परस्पर कहत मिलकर आज देह में शक्ति नहीं ।
 दुबलता में युक्त मिह का जग में कोई मूल्य नहीं ॥
 जगत व छ श्री कृष्ण चंद्र न ज्योति गीता की गाथा ।
 उमी शक्ति के श्रवण पठन से मानव ने स्वभाग्य सराया ॥

त्रिनये अदर घुमन में नर ज्योतिमय बन जाता है ।
 रात बड़ी वैगानिक है अभ्यास योग म पाना है ॥

ए युज जो ग्रथ जगत म ज्योति नाम से गाये हैं ।
 यथा भागवत गीता दुर्गा रामामण मनभाये हैं ॥
 नरा सार ग्रहण करन से अ भुत ज्योति आती है ।
 श्री लोक और अय लाव म उभयात्मक बन जाती है ॥
 ज्योतिमयी जगदम्बा न भी दुर्गा का अवतार धरा ।
 बानी रूप मधुर्कटम भजिनी बन वमुधा का भार हरा ॥

सभी रूप श्री जगदम्बा ने महिपासुर सहारा था ।
 गति रूप श्री शारद बनत गुभ निगु भ पछारा था ॥
 बड़े बड़े अमुरा का विधि ने तप के बल वरदान दिया ।
 मन्त्रिमानी दैत्य बण न रात्र जग को हैरान किया ॥

जग पता नहीं ऋषि देवा का शक्ति से प्रार्थना की ।
 यथा रूप श्री महेश्वरी न अवतरनन की निश्चय की ॥
 नरा जग म लम्बा माया और शक्ति भी कहत है ।
 मानव मुन प-प्रतिभा-शक्ति-तन म इसको कहत हैं ॥
 तत्र प्रभाव का पुज जगत म सब त यही निराला है ।
 नरा म्याभिमानी नररत्न भी अत्भूत ज्योति वाला है ॥

ईश्वर म प्रार्थना मेरी सधका ज्योतिवर्नि करे ।
 मान मय धार मन्त्रिहार स सगना मन परिपूर्ण करे ॥
 मया माय सब जग म पाव माया मय कहनात है ।
 'ह' मय मय ज्योति न मय मानदित हो जाने है ।

जय मा सीता (सीता प्रार्थना

कच मृदु वणी पतिव्रत श्रेणा दीप्न मुट्ट मणि व्याधि हरम् ।

कुडल तानि हर मम भाति दात्री शानि आज्ञा करम् ॥

मस्वन त्रिदु शामा सि दु मुत्र-मम-इदु—रारि-भरम् ।

जय मा सीता ॥

भाते देवा मृगमद रेखा मारम वषा मातुवरम् ।

मजुल भवुटी शीश पीत पटी नील वसन कटि शामा गरम ॥

मृग शिगु तोचनि भव भय माचिनि पाप मञ्जोचिनी प्रतिहिडरम् ।

जय मा सीता ॥

सुन्दर नाशा मणि प्रमाशा मुत्र मृदु हासा अवर वरम् ।

मुक्ता हार वाचोभार बलमाकार वनत भरम् ॥

वर शुभ कवण वेयूर मुतला नपुर पद ववण अमृत स्वरम् ।

जय मा सीता ॥

नख शिख मौम्य गुण गण रम्य प्रभन्द गम्य सदा करम् ।

नयन 'वैद्य हरि' मातु चरण घरि माति हय भरि नित्य चरम् ॥

सत्र सुख तामा सम्पति धामा रामटि रामा सदा करम् ।

जय मा सीता ॥

जय जय राधा (श्री राधा प्रार्थना)

जय जय राधा हर मम वाधा गति अगाधा तेज अति ।

कीमल कण मजुन वष टरति अशेष कलि कुमति ॥

मुट्ट वाति हगति भ्राति तदनि शानि पदट्ट रति ।

जय जय राधा ॥

वर्णाभूषण दुःख अघ चुषण जगमल दूषण वरत क्षति ।

त्रिदु सि दूर मृग मद तूर भुज वेयूर भजहु सती ॥

प्राजित आनन अरविदासन सदा हास्य तन तरट्ट रति ।

जय जय राधा ॥

अरुण अवर वाणी मधुर पद नत्र नुपर मद गति ।

सुखवत नाशा तज प्रकाशा सदा सुवाशा च द्र द्युति ॥

अमर गुणावली मृदु अनावनी ताम पटावली वस-मुमति ।

जय जय राधा ॥

न हिन हार अतिसुन्दार मत्र मुखमार कृष्ण पति ।

नयन वगोन सुन्दर चोन करति वनाल ईश प्रति ॥

रम्य माधुरी सब सुन्द भागरि शोभा सागरि प्रेम नति ।

जय जय राधा

षक्क वनक वमन सुमास भक्ति जनक मदा यति ।

वैद्य हरि मन हृत्तमित गा गुन तन मन घा बनि-प्रहृति ॥

नग शिवा भाज अनुगत तज विस्तत सेज दु प्र पचति ।

जय जय राधा ॥

जाह्नवी समार तारिणी श्री गंगा प्राथना

जाह्नवी ममार तारिणी जयति जय जय मुग करो ।

गुरसरि भागीरथी सब विश्व भाव अय हरो ॥

सौरिणी प्रैलोक्य ऋषे पद अरुण आधा हृ मी ।

शिव जटा मचारिणी विमनाम्नु अमृत हिय धरो ॥

अवित्र जीव तूपा हरो निजवारि मजुत स्तह स ।

चित्त धी धुनि उर स्मृति म अतुत आज सदा भरो ॥

निग भागमे महिमा गुभापिन नित्य मुपठतरिणी ।

भगवत सुपाद विहारिणी गात रम्य सागर-मुत तरो ॥

गसाद वे सब जीव भम्मीभूत हा तव नीर म ।

नीन हो पाते मुगति अर इन्द्रन नन्दत तरो ॥

हीन मति अल्पानु प्राणी अय पागर जीव ज ।

अन्वाल वनवर राज सुभगत मुन पा धरा ॥

मुन मुनि नर गुरदा अर मजु माक्ष प्रशायिनी ।

भजनु नित्य भगणये मत्र दु न वनन र तम जरो ।

दिव्य स्था वदिता गुर सम्पति मुमति प्रा ।

वैद्य हरि धर नीन पाद नयन मु अम्भू तरो ॥

वाम त्रौष र वाम ईर्ष्या मात एत पाग मी- ।

विश्व म भंग विय अय मान क्षमरा अय टरो ॥

जयति गगे भगवति श्री मार वाहिनी वातर ।

बु कृपा मा पार जग न विषय पचति म परो ॥

विपन्न विष्णु पत्नी गुर विमला भा ।

भीष्मपू अर मुगता रगत वरिण नर ॥

भगवान्—दशानो मे छटता प्र शन— न

भगवान् दया कर बध हन न हन - ह

शानी मपरा हरिणार वन वन ह - न

उत्तित नियम तत्र पालन करना गही धम का मत भेरा ।
 बोध हरि भगवान लक्ष्मी का घास बट नितनिन नरा ॥
 मन चाहत शहर निवामन ता मति कहति है रजजा रजजा ।
 इन त्रिपयन म कछुमार नती पिय १ मोचहिय हटजा हटजा ॥
 यह धार सतोप भरी दूधन री पीन को बटजा हटजा ।
 प्रसा बाहर गाय म वद्य हरि मन सागर है बटजा हटजा ॥

(कवित्त)

शहर की चमर देय विपदा का नग्न नाच मत फगहरि अन्तकाल पत्तापता
 ईश व गुणा को गा जीव को टिकान प्यार सदाधिर हाज नाम उच्च पत् पाव
 मुर तुलसी का गुण देख देय बलचल वचन न पाव सबराय मिल जाय
 बडे बडे राजा सठ हुए एम जग मे सूर तुलसी का नाम अमर कहायतः

जयति शालिग्रामप्यारी (श्री तुलसी महाराणी की प्रार्थना)

जयति शालिग्रामप्यारी तुलसी महाराणी तारी ।
 मजरी मधु हरित पत् पी-मधुवरी हा मति भोरी ॥
 सौभाग्य हिन तारी करें पूजा मुक्तित्तन मास म ।
 व्याहृत्तर आनंद मनावें शीश नमनि कर जारी ॥
 पद ईशरत हो विष्णुप्यारी चरण अमृत पायिनी ।
 विष्णु पादादकसदा ला नारी नर बट अघ डारी ॥
 दुष्काल मृत्यु हारिणी अरु सब व्याधि विनाशिनी ।
 आयु तान सुत्रुद्धि दानी माग की रक्ता-रोरी ॥
 भोजनांतर शाधिनीमुख रुचिर अग्नि प्रदायिनी ।
 सतिनपात रजाहरी गुण गरिमा महिमा नही थोरी ॥
 लक्ष्माणाथ तिकतने तुम नाशिनी भवभय रुजा ।
 आयुपति गह दहदापा गुण बहू कहा मति भोरी ॥
 जगम्जा रजना की चादनी तेज पूज प्रसाश स ।
 हरति व्याधि जनित कलिमल पाव पूजू में गौरी ॥
 उभय लोक सदा बही तव अतुल गुण गाथा सही ।
 वद्यहरि मा पद शरण म मैभी आयो बन घोरी ॥
 कल्याणकारिणी दायिनी धन सम्पति अरु मोक्ष की ।
 अटिवा-की तदावार की मन म गिने कलिया कारी ॥
 वि-वास है सब फन का हाता शाश्वत कहत है सदा ।
 वृत्तमा तत्र गुण अमरधारा बहती हे पत्ता पोगी ॥

ज्ञान और माया (कवित्त)

ज्ञान और माया दोनों व्यापक हैं तन तन,
 कौन विजयी हो यह जाने भगवान है ।
 कभी मन जाय देहली की राजधानी में,
 कभी जाव हरिद्वार काशी पुण्य धाम है ।

कभी टिक गेहानों के जगली मैदान में,
 कभी सोच उभयत होवे हैरान है ।
 अत मे विचारे-गुण परम्वत गुणीजन,
 'हरि' चलचित जहा गुणिया का मान है ।

रचना बनी है अद्भुत इस विश्व की, (विश्व की अद्भुत ॥)
 कोई रोम कोई हसे देगत समाज का ।

कोई चाह प्रेम रस शांति पीयूष धारा,
 कोई चाह रात दिन कलह के काज को ।

कोई चाह दाग सुत प्रिय । नये भोगों को,
 कोई सत पा मुद मुटठी ही अनाज को ।
 उयल पुयल यही रात दिन होव जा म,
 विश्व कहनाये "हरि" ईशमहाराज को ।

श्रम ऋषिकुल (ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम चूरु के उत्सव पर)

आश्रम ऋषिकुल ब्रह्मचर्य का उत्सव आज यहा प है ।

सुमनव स्वागत वेद ब्रह्म का मजुल स्थान जहा प है ॥

अनुकम्पा यह वृष्णचन्द्र की है जिसका शुभ रूप बना ।

स्नेह भरी वद ध्वनि मुन मुन भक्त हृदय है प्रेमसना ॥

शताब्दियों का वध छुड़ाएर भारत सब स्वतंत्र हुआ ।

नव वमत की ले सुमनाजलि आश्रम बटुक प्रसन्न हुआ ॥

पहना विश्वम्भर ग्रीवा में आज प्रार्थना करता है ।

रक्षित रखना चतुराश्रम जा आज समय स टरता है ॥

नप अशोक मा घम राज्य हो सुखी सदा ही सभी समाज ।

श्रुतिधुन मुन ब्रह्म चारिन की माता का हो ऊँचा ताज ॥

मस्त्रुत वेद सनातन हिंदी भाषा इसकी अमर रहे ।

सदा मत्य हा जगदगुरु क वाक्य जो श्री गीता में कहे ॥

हो म हरेभरे भारत में उन ऋषियों का घम

मय अहिंसा ब्रह्मचर्य व्रत-से न डिगें नर यश बदा

उचित नियम तब पालन करना तूही धम का मत मरा ।
 दीछ हरि भगवान लक्ष्मी का वास चहू नितनित नरा ॥
 मन पातुत शहर निचामन ना मति कहति है रक्ज रक्ज ।
 इन विषयन म कछुमार नही पिय । मोचहिप हटजा हटजा ॥
 यह धार सत्पाप भरी दूषन की पीन का उटजा छटजा ।
 रसा बाहर गाथ म वैद्य हरि मन सागर है पटजा छटजा ॥

(कवित्त)

शहर की चमक देख विषया का नग्न नाच मन फगहरि अन्तकाल पञ्चतयगा ।
 ईश के गुणा को गा जीव को टिक्वाये प्यार सदापिर हाय नाम उच्च पद पायगा ॥
 मुर तुनमी का गुण देख तेज चलचन वचन न पाव सवराय मिल जायगा ।
 बडे बडे राजा मठ हुए एम जग म सूर तुलमी का नाम अमर कहायगा ॥

जयति शालिग्रामप्यारी (श्री तुनमी महाराणी की प्रार्थना)

जयति शालिग्रामप्यारी तुनसी महाराणी तारी ।
 मजरी मधु हरित पद पी मधुक्करी हा मति मारी ॥
 सौभाग्य हित नारी करे पूजा मुक्तिर माम म ।
 व्याहनर आनन्द मनावे शीश नमनि कर जारी ॥
 पद ईशरत हो विष्णुप्यारी चरण अमृत पायिनी ।
 विष्णु पादादसदा ला नारी नर कट अघ डोरी ॥
 दुष्काल मृत्यु हारिणी अरु सब व्याधि विनाशिनी ।
 आयु नान सुखुद्धि दात्री माग की रक्ता-रोरी ॥
 भाजनातर शाधिनीमुख रचिर अग्नि प्रदायिनी ।
 सतिपात रुजाहरी गुण गरिमा महिमा नही धारी ॥
 लक्षमानाथ निवतने तुम नाशिनी भवभय रजा ।
 आयुपति गहू रहदापा-गुण बहू कहा मति मारी ॥
 जगन्ना रजनी की चादनी तेज पूज प्रकाश स ।
 हरति व्याधि जनित रत्नमल पाव पूजू में गौरी ॥
 उभय तोक सदा बही तब अतुन गुण गाथा सही ।
 वलहरि मा पद शरण म मैभी आयो बन घोरी ॥
 कल्याणकारिणी दायिनी धन सम्पति अरु मोक्ष की ।
 अट्टिवा-नी-सदावार की मन म विन कलिया कोरी ॥
 विश्वास है सब पत्र का दाता शास्त्र कहते हैं सदा ।
 तुनसी तन गुण अमरधारा बहती है पता पागी ॥

ज्ञान और माया (कवित्त)

ज्ञान और माया दोनो व्यापरहे तन तन,
कौन विजयी हो यह जाने भगवान है ।
कभी मन जावे देहली की राजधानी मे,
कभी जावे हरिद्वार काशी पुण्य थान है ।

कभी टिके देहातो के जगली मैदान मे,
कभी सोच उभयत होवे हैरान है ।
अत मे विचारे-गुण परखत गुणीजन,
“हरि” चलचित जहा गुणियो का मान है ।

रचना बनी है अदभुत इस विश्व की, (विश्व की अदभुत ॥)
कोई रोवे कोई हसे देखत समाज को ।

कोई चाहे प्रेम रस शांति पीयूष धारा,
कोई चाह रात दिन कलह के काज को ।

कोई चाहे दारा सुत प्रिये ! नये भोगो को,
कोई सत पा मुद मुटठी ही अनाज का ।
उथल पुथल यही रात दिन होव जा मे
विश्व कहलाये “हरि” ईशमहाराज को ।

श्रम ऋषिकुल (ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम चरू के उत्सव पर)

आश्रम ऋषिकुल ब्रह्मचर्य का उत्सव आज यहा प है ।

सुम्नव स्वागत वेद ब्रह्म का मजुल स्थान जहा पे है ॥

अनुकम्पा यह वृष्णचन्द्र की है जिसका शुभ रूप बना ।

स्नेह भरी वेद ध्वनि सुन सुन भक्त हृदय है प्रेममना ॥

शताब्दिया का बध छुटाफर भारत सब स्वतन्त्र हुआ ।

नव वसत की ल सुमनाजलि आश्रम बटुक प्रमन हुआ ॥

पहना विश्वम्भर ग्रीवा म आज प्राथना करता है ।

रक्षित रखना चतुराश्रम जो आज समय स टरता है ॥

नप अशोक मा धम राज्य हो मुषी सदा ही सभी समाज ।

श्रुतिधुन मुन ब्रह्म चारिन की माता का हो ऊ चा ताज ॥

मन्वृत वेद सनातन हि दी माया इसकी अमर रहे ।

सदा सत्य हो उगदगुरु क वाक्य नी श्री गीता म बहे ॥

हो न्न हरेभरे भारत म उन ऋषियो का धम सना ।

मय अहिंसा ब्रह्मचर्य ब्रत-से न डिगें नर यदा कदा ॥

मातृपिता गृह सवक बनक वासुदेव का ध्यान करें ।
सतिशिक्षा घर्मोपदेश स अखिल विश्व बर्याण करें ॥

शस्य श्यामला भारत भू हो दीर्घायु नर नारी हा ।
जन्मभूमि की उन्नति करके अमिट कीर्ति अधिकारी हो ॥
वसें विश्व म वैररहित हो जसे सिंह भरत के सग ।
बैद्य हरि की विनय ईश से भारत मे हो नई उमग ॥

श्री गणपति—दाहा

श्री गणपति के ध्यान से जग मे हो आनन्द ।
सुभिरहु नित्य हरिमुदा प्रेम मना स्नच्छन्द ॥
नयन माग मे ले चनो हृदय सिंहासन राम ।
नेह ध्यान स ले विठा उन्ने न शोभाधाम ॥
रामकृष्ण को हृत्पटल बैठा के निज देख ॥
स्नेह सुधा से ओत प्रोत हा सुभाग्य निज पक्ष ।
जिह्वास्मर री राम जा जा म अमृत पार ।
जन्म मनुज क वश म हा-या वेडा पार ॥

चुनमी के जो इष्ट हैं अमर कीर्ति कर नाम ।
निजभक्तन की दे सुधा मुद होव श्रीराम ॥
लकडी म दीमक लगी ज्यो शरीर म कान ।
ईश्वर के गुण गाईये साच समझ क चाल ॥
सब दिन चुन तण खण्ड के चटना रचनी गेह ।
गृहपति गृह शोभा रच नाश काल ना नह ॥
तैमे ही ससार मे मानव का री देह ।
कालदेव शोभाथ निज नाशकरत यह गेह ॥
चकले पर केशर गिरी लगा रगड का दोय ।
चन्दन का-जब तान तन क्या न हिय म हाय ॥

सध्या करते विप्र की दम्बत हमे कुलाग ।
अथ ऋण कुमाग म लाग विषय का रोग ॥
धूप सुगन्धि देय के फिर हो जावे राख ।
तस साधु जन प्रिय । परमारथ मे भाल ॥

भारत के जन (ईश भजन)

भारत के जन इस मे लग जा ।
शानि नही दुनिया मे तूभ की मठे भ्रमट से दिन रात ।
तरह तरह के जान रचाकर खोता क्या जीवन घन गात ॥

र्ण ध्यान घर भाति के मगजा । (भारत के जन)
 कहता हूँ उन मानव वृद्ध को नई पार टो रचना आज ।
 समल मकीना पहली श्रेणी क्या करना अनरथ के बाज ॥
 समय देख तू सोत में जगजा । (भारत के जन)
 स्वतंत्र भारत की जो नीति चनती है पहले से आज ।
 मन बाधा बन मंद भाग्यनर समता में तही चलाना राज ॥
 पापिन उर्वी को मत ठग जा । (भारत के जन)
 नीति मत्रीगण घर्ष विषय की राज इद्र बल चलने दे ।
 धन नूठे क्या के मन राडे डाल तू पलने दे ॥
 नापा चनके ऊँचा बगजा । (भारत के जन)
 एक पिता के पाँच पुत्र है काई अभागा सोई भाग ।
 कोई गारा कोई बाला कोई पडिन का मिर पाग ॥
 चलो विषमता प्रवृत्ति की डग जा, । (भारत के जन)
 भारत का परिणाम सुधारर हागा धीरज हिरदे धार ।
 बंद-ध्यान में अरानी करल भामक बाणी की तनवार ॥
 बनी बनाई में तू दगजा । (भारत के जन)
 काम नहीं दुनिया में तुझको बटून पडाई से बेकार ।
 गात हेतु "हरि" जन्म जगत में तत्त्वममित्रा का पकड सुमार ॥
 मिते अमरता हरि में पगजा । (भारत के जन)

उपरि देव--दोहा

उपरि देव सुरम्यता अंतर में विषधार ।
 मत कम मानव सोच के अ न है हाहा कार ॥
 दरण मुख देव के प्रतिभा से आनंद ।
 जभीमनाद्या ए प्रिया । हिए सच्चिदानंद ॥
 मुंदरता के रग में मतलल चाव वित्त ।
 क्षण भगुर यौवन प्रिया आयु दिन निज वित्त ॥
 मृग नयनी के नयनशर वेधत हृदय नरन्त ।
 जा के यह शर ना लगे उच्च कोटि - मन ॥
 नगर गाव में वासकर अनुभव किये अनेक ।
 बहु खोजे-पर ना मिले-जा आनंद विषक ॥

वही नगरा म दुःख स यादुलता बढ जाय ।
 वही दहानी दुःख से शांतिमन ना भाय ॥
 राम बडा माया बडी इसका कर मुत्रिचार ।
 दृढ निश्चय कर हृदय को तत्र हो बडा पार ॥
 कमलनयन मुग्य मावरे की मदी मुम्मान ।
 दयत सजनी आज में प्रम विवश अनान ।

भरा नही पेट (भजन खाली पेट पर)

भरा नही अनादन से पेट । (टग)
 रिस्तादर को रामामत से भग्ने हिय समट ।
 तप्यानद क रम्यपयसभी टूटी भरी है छेट ॥
 तब भी प्यास बुभी नही नर ह । अत्र तो हृदय सचट ।
 अन भरा है असनाप का सब छत्रट घोर सेट ॥
 नही नख है या या क भी क्या हा मटिया मट ।
 अजित करत राजा रक "हरि" या गय जाल थपट ॥
 अबतो हरिगुण स भर पटू हाकर प्रभु की भेट ।

ज्ञानामृत की दाता (बुद्धिमती प्रिया महत्व)

ज्ञानामृत की दाता तुम प्रिय ! माग दर्शिका सुमति हो ।
 तब ध्यान सुमति से विहरे ता तुम उच्चकाटि बतरणी हो ॥
 जब तुलसी राग अनग से था तत्र तुमने माग दिखाया था ।
 बभक्त बन प्रिय राम के क्षण म प्रेरक तुमसी सुमति हा ॥
 उदभट प्रेम देह भरे स सीसा नह राम से हा ।
 भवसागर पार नगी नीता की बतान वाली तुम्ही तो हा ॥
 चित्तामणि न भक्त मूर को ज्ञानामृत का प्याला पा ।
 किया दूर हृदय बुद्धि का तम दे जान-पुराणी तुम्ही तो हा ॥
 मूर तुलसी का जान नयन जब खोल दिया इम सुमुखिने ।
 हरि कहन म क्या अत्युक्ति अथि । जान माबुरा तुम्ही तो हो ॥

नर तू कर ले (भजन)

नर तू करले भुट विचार ।
 क्या अच्छा क्या बुरा जगत म मोचमति गई हार ।
 पचतरव की मृधमता की कहत जीव हजार ॥
 पालन करते एक न देखे फस मोह मभधार ।
 बहुत मोचत इसी तथ्य का मिला हरि' आधार ॥
 धम नीति गह पाला करत भोगे इश बहवार ॥

परम चतुर (जान दोहा)

परम चतुर श्रीराम हैं परम भक्त की लेत ।
गलती सब मुघराय क करते सदा सचेत ॥
विरसमति श्रीराम मे-अन्य काम आनन्द ।
शिवकह गिरिजा मुन-हरि-ते नर अतिमतिमन्द ॥

रामौपधि की घूट ले मरण रोग को छोप ।
कीर्ति जिमकी जीवती अमर कहाय सोम ॥
मान धनन को प्राप्त कर अन्य द्रव्य का त्याग ।
करते मन से जो सदा नर नारी बड भाग ॥

तन म व्याधि अनेक है मन मे बहुत विकार ।
सोच समझ क नर मरे बहुत इमी मसार ॥
करना शीघ्र सुकामनर जल्दी जल्दी सोच ।
समय एक पछनायगा क्या न समझ तू पोच ॥

अमर कीर्ति जिम काम से वही कमाई कर ।
धरा द्रव्य मत्र यही रह प्रिया मित्र और धर ॥
बहुत सुरक्षित वस्तु भी होती नाश सदा ।
वही मनुज पर जाचिये चलनी काल गदा ॥

श्याम विहारी रूप के देखत उप जे सुवत्त ।
य खिपा पलक कपाट म धरा-जाय सब दु ख ॥

श्याम रूप शोभा धनी मुख उपजावन हार ।
हुत नी म ने बिठा क्या ढाँता जग भार ॥

बहुत नरा के चिन्त म बहुत बार सुविचार ।
आने जाते है सदा स्वप्ने की भरमार ॥

जब मन म आव प्रिया सुष्टुवाम की रत्न ।
तवही टिकट कटाय के चढजा टेनम टेन ॥

मीठी बाली बोलने जग मे पुण्य शनक । (जान्मीकी रामायणे)
कडवी पय बानी रुह-मुन सहसा एव ॥

रात दिवस के दु ख का सुधिरण बरता रह ।
तभी जान ही जायगा मुख स विष्णु कह ॥

मोहमाया गर्दन पकड चलती है नितस,
यचजा सवट स अभी इस खड गले

मन को ईश टिफाय के जो मानन आनन्द ।

उन ही तृष्ण नाश है मग्न जे परमानन्द ॥

श्वासगति जब जीव मे तत्र तरु शुद्ध शरीर ।

त्रिधा मीत गुन त्याग दें निरसे प्राण समीर ॥

मानव मत भूने सदा धरना लव समान ।

स्वाथ व वष सब जगत काम रहित अपमान ॥

(अकमद्वृत नहीं रहे)

हरिहर रसामृत गीत

धन की ममता बहु जग पाई ।

बड़े-बड़े धनवान लोग भी रुपया खरच सकुचाई । (टेर)

बट बटाव गही घटत धन जिनो नित्य बढाई ॥

फिर मन हिय हुई जान चेतना तब भी भरम न जाई ।

स्वणमयी रावण की लका माथ न गई निवाई ॥

तब तुम धाटत क्या सकुचाया यह अवरज मम भाई ।

पूव ज म के पाप पुण्य की बुद्धि ही ता म समाई ॥

जानत भी अजान मनु की मति मदा भरमाई ।

सोचत है सुत यनिता ब धु रिन धन कष्ट उठाई ॥

अ तबाल तेरी सवा को करत सबहि हरपाई ।

हृग्भरोसो करो नारो नर जीव ईशमय पाई ॥

विधि ललाट व लिपे लेख जा कमगति न नशाई ।

सब साधन के रहते देखे जीव सदा अकुलाई ॥

महाभयार व्यापि व्यापीतन द्र य काम नहीं आई ।

प्रभु की माया प्रभु ही रक्षक प्रभुहि देवत पाई ॥

वैद्यहरि प्रत्यक्ष देव के करता ईश बडाई ।

मानुष जन्म पाय प्रभु कृपया करहु जीव भलाई ।

तुम्हे मिलेगी प्रव जन्म की दी हई दूध मलाई ॥

एक श्वान को मिलत न रोटी दूजा पट भराई ।

प्रभु पत्थर म बैठे षीटको भेजत दाना माई ॥

वाणी गुणगा ज्ञान दोहावली

वाणी गुण गा राम के उपजे सत्य मिठास ।
 मार धरमर इस जन्म का देह का हीय जिनाश ॥
 मृत्यु विभागी दुःख से जब अकुलाते प्राण ।
 पन कनत्र सुन प्रिय मूढ़न नहीं कर सकते प्राण ॥
 प्राणों का भय जब बने रोगी की आवाज ।
 प्राल द्रव्य के स्वामी हो प्राणा चाय महाराज ॥
 राम राज्य जानी उसे जिसमें हो यह ज्ञान ।
 मान जात जो आत्मवत् देने परम मुजा ॥
 सुधी तन म नित बसे प्रेम मृत्यु एक सग ।
 अधिप प्रेम से मृत्यु है-स्वल्प प्रेम रस भग ॥
 स्वन्त्यायम्वा की हृद विधवा को हरि देन ।
 दया न हिन जिनके हुई ते पामर नर भेल ॥
 ज्यो मूगे जन भूमि का घट जीव का श्वास ।
 चेन घेन निधा मिली-हृषा न पर विश्राम ॥
 बदा यन्त्रा वष्टिता ज्यो प घट का मुस्य ।
 दिन दगे मुग भान हो दग्ध उपजे दुःख ॥
 एन ही भार का दाना वेष्टित देख ।
 दिन दगे भम मुग का दु ग की बनी है रेन ॥
 मुग्ध नारी दग्ध के चित्त म हुआ विचार ।
 मय पूरित मुग नामिका दुर्गधित आभार ॥
 धरा अपन मनन के मय चलते है गैव ।
 पार न बाद पारिया ज्यो पाणी का बीव ॥
 -वों बहवी प्रीयप विन पहने दुःख फिर मुस्य ।
 बरी प्यास तप जानिय मरपनाति कर मर ॥
 भाषन म पीना जई तब पवेष्टिय ज्ञान ।
 'हरि देव को जान कर बयो न कर बन्ध्याग ॥
 'गद दूट दु ग हाय है भाह दगे मुग्ध भान ।
 दु गी दुग्ध होय है बड़े दुःख ध्यान ॥
 गोर मया मय को लद नर मू हाजियार ।
 धर धर मुग भान । नर नरिप्रपुनार ॥

मानव प्रकृति स्वभाव से दीडन विषयन लग ।
 घोरज व अम्पाम से तरनर इम को भग ॥
 फिरत चक्कर दय के गाडी क में घ्राज ।
 मन म यो सोनन लगा इन जीवा के काज ॥
 वात निरनर याद रग जीवन की यह यास ।
 काल चक्र के घूमन-पहिय देय उदाम ॥

जगत म मिथ्या का यह खेल (ज्ञान भजन)

जगत म मिथ्या का यह रान । टर
 यायानय म हमने दयी भूड की बटनी जेन ॥
 हर नर हर बालक स्वदोष को डरत मिथ्या भेल ।
 बडे माधु व्यापारी पडित इससे करत भेल ।
 तीष दाप अरराधी दखे बच निकले इस हल ।
 अस्फुट बोल युधिष्ठिर ने दी द्रोण गुरु को सल ॥
 अभिमयु विश्वान घात से मरा-महारथी ठेल ।
 'हरि' आगिर म इनको मिलती घमराज की जेल ॥

पहले मन को (ज्ञान दोहावली)

पहने थी मन की दशा चाहू जग मे मान ।
 अब ईश्वर के रूप की मगन भया पहचान ॥
 ए मन ! हृषित दल ज्या सुन्दर युवनी गात ।
 त्या देखत छवि राम की भव म छटे तात ॥
 जानत मन सब तान की फिर विचर अनान ।
 काम लाभ की प्रबलता से बुद्धि हैरान ॥
 बश म होत अनग के जो मन सटा सचत ।
 जीतो योगाभ्यास म कर म-गीता लेत ॥
 मदनानन्द समाप्ति पर जब होना है ज्ञान ।
 देहात्मा की ग्लानि से-स्थिर मन तरे पयान ॥
 रम्पाकृति मुलाचनी सुमुखी सुस्तनी नार ।
 तखह मन बश होत नर गुपमा के आगार ॥
 बाणा मुन बोचन सटा आकृति बनी कुरूप ।
 एमी नागी तानर मौन रहन अनुभू ॥

सुदरता बहुमुखी बनी परख करत मन माहि ।
 भिन भिन रुचिनर प्रिय । पारहि पाया नाही ॥
 गूढ मति से सोच तू ईश्वर का ससार ।
 माया यवनिका नन के आगे दई पसार ॥
 भिनाकृति सबकी बनी माया का ससार ।
 हेर फेर सूच्याग्रसम देखत सब नर नार ॥
 पानी पडित होत है वेही रतन मुजान ।
 जो अनय मा ईश पद सदा भक्ति हिय ठान ॥
 विप्र जे विद्या विनययुक्त श्वपच हाथी श्वा गाय ।
 समदर्शी पडित लखे सब को एक सी काय ॥
 ऐसे समदर्शी प्रिये । कबहु न मानत भेद ।
 रम्य असुदर एक से जानत माया छेद ॥

हर प्राणी (ज्ञान दोहावली)

हर प्राणी के स्वाथ को जो देखत मन माहि ।
 गूढ मति विचरे सदा तो भय बाधा नाहि ॥
 रहित स्वाथ जो प्यार है वह ईश्वर मे जान ।
 तू भी वंसा होय के कर मन मे अनुमान ॥
 राम-कृष्ण गुण गान से नित हिय होत उजास ।
 सत्य सफल जन होहि हैं अज्ञाना बता नाश ॥
 हृदय महल की सुखवरी कोमल शय्या भाहि ।
 लक्ष्मीपति कमला सहित रहतु निरंतर आहि ॥
 गृह बधन की रस्ती ने चिन्ता दई लगाय ।
 जो निधि का छोटा लगे तो कुछ कुछ बुझ जाय ॥
 नारी केपनि एक वर रम्मी दई बटाय ।
 जीवित नर बाघे कई-मृत बली पगु बघाय ॥
 मैं पूछू ह बड जन ईश प्रेम म बाध ।
 रस्ती म जा श्रम किया वही प्रभु मे साध ॥
 बूढे न रम्मी बटी एक भास के वक्त ।
 ईस ध्यात म एक पल लागन मे अशक्त ॥
 पाना जान परिन्विति गही रहती दिन रन ।
 मन गजानक है सदा कबहु दु त कहु धन ॥

सुघरे मन महाराज के सब पथ मंगल भूल ।
 भव डगरी का आसरा डूबते को नदी कूल ॥
 स्वमा मातृ भाया लगे मन नित विधि अनेक ।
 भिन प्रेम की विधि तह रहता पान विनव ॥
 मृग नैनी क नयन शर धरे हृदय न जाहि ।
 योगी तापस जानिये उच्च कोटि क ताहि ॥
 मृग मद मृग नैनी लगा बुचबिच श्रीर लिलार ।
 स घ सुगणितवश हुए त डूबे मभ्रार ॥
 दुबलता दिन दिा धडे योपित के सहवास ।
 आज वीथ प्रतिभा घट निशिदिन आयु विनास ॥
 माधुरी वाक् सुलाजनी सुमुखी गुस्तनी नार ।
 सुमति मयम पालिका वह घर स्वर्गागार ॥
 मधुर भाषिणी योपिता प्यारी प्रवृत्ति दैन ।
 ताके दिन सुप्त स कटे निशिदिन रहती घन ॥
 गुण की पूजा हात है नारी हो या नर ॥
 मल भक्षण करता सदा शबुन वाम शुभ खर ॥
 नारी गुण की खान है जो कोई बरत जान ।
 उदर ताहि के ऊपजे जगगुरु शकर मान ॥

मन विषयन भजन

मन विषयन अगनि जरो है । डेर
 बहुरि जान से स्वय बुझावे पर नही जात टरो है ॥
 सोचत हू परिणाम भयकर तो भी हृदय अपरा है ।
 हाथ कछु नहीं आवे—कल्पना भूठी म विगरो है ॥
 सत्सगति से होत विजय कहू तापस मुनि करो है ।
 विषयातसी मति रहती धिर हू जह तह जीवन सुधरो है ॥
 परदारा परघन ब्रुमगति पर फल फलनि गरा है ।
 नही अघात सेवन ते प्राणी काल डरनि न डरो है ॥
 जात रूप जारित सान-वय बान्ति ओज तिखरो है ।
 विषय तपनि जर मन सुवण खा कोई न हरो भरो है ॥
 विषय कीट जग राज रोम म नित नर जात मरो है ।
 अवहू 'बैद्य हरि' सजग मुमानसबत प्रभु गुण सू खरो ॥

सखा मोहे आश्चय क्या ह

सखा मोह अचरज है भारी । टेर
 काल गाल मे जाते देखे निशिदिन नर नारी ॥
 अचरज मोहे शेष जीव का रहनिधिर जो विचारी ।
 त्रिया मित्र सुत द्रव्य जगित दु ख देखत रहत अनारी ॥
 तदपि समझ मन माहि सुखी है टरे न विधि गति टारी ।
 मास वसा की शोभा से मुख चमकत कोमल नारी ॥
 मुख कुरूप पिडिका से होकर जब विकृत छवि धारी ।
 देखत नर नित नही सोचता डूब रहा मभधारी ॥
 'बध हरि मन हिय विचार कर प्रभु गल बहिषा डारी ।'

वैठा जग मुख फाडे काल भजन

वैठा जग मुख फाडे काल ।
 पडती जब कभी मोह यवनिका ढाक देती तत्काल ॥
 कवहु हटति तब दशन होते रूप भयज विकराल ।
 एक करनि मासास्थि भक्षण दूजे मे मुडमाल ॥
 पापी नर विषयासक्तन को मेलत देखा गाल ।
 नभ उर्वी की चक्की चलाता पीस देही की खाल ॥
 सुवृत्त [घम की कल्पलता टकराती वनके ढाल ।
 मोह नीद म कयो सोया नर जो कुट्ट करना हाल ॥
 करदे अरण ईश पदनि निज रम्य कनेवर भाल ।
 काल जनित दु ख पाचन को जडी ईश चूण कर डाल ॥
 एक दिवस 'हरि' निकल जायगा जीवन मजु मराल ।

ज्ञान दोहा

सत्र कामा मे नारी को नीची रहती जान ।
 तप फन-मानू पदहु का पितु से बना महान ॥
 नारी प्रेम में अटपटे तुलसी सूर विशेष ।
 रमणी न सब कुछ दिया और जान का वेप ॥
 रमणी न कृमती करी तुलसी सूर की दूर ।
 राम वृष्ण गुण प्रेम मे तब से रहते चूर ॥
 मन को राकू म सदा वश नही पाया जान ।
 अन्तमति गहरी गई हेतु सग पहिचान ॥

पशु पक्षी सब कीट भी विषयन मे लपटान ।
 मदन राज की अधिकता कलियुग व्यापी भ्रान ॥
 स त शास्त्र के सग स सुमन सुसगत मूल ।
 सीच ज्ञान वारी सदा काम रति प्रति कूल ॥
 कामरति की नाव से डूबा सब जग जीव ।
 ईश तिरन का पोत है चढो जोड के सीव ॥
 जग मे नित नर बहु तरे सिंधु नदी पाखान ।
 काचन कामिनी जो तरे तेहि तरे भवयान ॥
 कामिनी नित मनहु वसे कचन जाके द्वार ।
 किंचित हरि चरचा करे सच्ची तो हो पार ॥
 हरि को कभी न भूलिय सब म रह विराज ।
 भूलत तम धाव हिय मृत्यु ध्यापरही आज ॥
 हरि चरचा नियमित करे त बड भागी लोग ।
 किसी दिा चर्चा पुण्य से छूटत यम के भोग ॥
 मायावी ससार का क्या हैं सच्चा सार ।
 पार न पाया नाहि का गये काल प्रागार ॥
 कहा जाऊ और क्या करु क्या चाह करना ।
 मति कीर्ति को चाहती और पाप डरना ॥
 मुख सब घटते जात है नही मान सुख नाश ।
 मानाश्रित जीवन मुदा नित नूतन उद्लास ॥

भजन मनपर

मन निजन मे नही लागा । डेर
 कोनाहल मे नही ठहरता फिरत है सदा अभागा ॥
 रसको चाहिए समय-समय के सर्वाह साज समाजा ।
 नही एक रस एक रग म थिर नही रहता भागा ॥
 इमका ममता मोह हतु है जा हिरदे नित जागा ।
 ऋषि मुनि सब जाल छाडकर पालत जीव सुभागा ॥
 समय समय की नित नवीनता म बन मन वा घागा ।
 हरि फिरन यह चकरुर डोरी देखत पीछा न आगा ॥

प्रियाया सगणावस्था वणन (ज्ञान) कपिल क्षेत्रे

आज प्रिय । मन मंदिर म मोरे तोरी स्थिति समाई ।
 ज्वर का वग भयकर आकर तुम का ध्यान दवाया ॥

सनिपात और वात प्रकोप ने बहुत प्रलाप बढ़ाया ।
 मेरी बुद्धि बु ठित होकर सदन करन को घाई ॥
 मोह उमड़ा छोटा बच्चा का देख अवस्था तारी ।
 मृत्युभय उपजा मन मेरे रोटी करे को भोरी ॥
 चौतरफ़ी स्वारथ दृष्टि ने मन म छाई काई ।
 दामादर (रमेश) को शीघ्र पढावे शारद का व्याह कर स्यू ॥
 मन मे भठी उठे कल्पना सुंदर वर से परस्यू ।
 मुत पुत्री वे मात प्रेम की हिय कनक भनवाई ॥
 बरकर तोरी मृत्यु कल्पना जग विराग है छाया ।
 प्रोढावस्था की नैय्या को तुमने पार लगाया ॥
 जवन रही तुम-साधु बनक फिर हू भस्म नगई ।
 नर नारी के जोडे दिन जग गह आश्रम है भूठा ॥
 सब सुख सब साधन है वसम सबसे यही अनूठा ।
 ईश्वर भजन साधु सेवा से कर कल्याण हुताई ।
 वैद्य हरि अनुभव अपने ती मनहि दशा तिर दीही ।
 बर्माधीन जगत सब प्राणी यही ईश ने कीही ॥
 भजुमन जगदीश्वर नित हिय से उमने लाज रखाई ।

गृह मनोरथ वणन (ज्ञान) देहात निवास

खेवन को गह की नैय्या में बधा फास मे भ्राज ।
 विद्या पढते मन मे आया खूब कमाऊ स्पय्या ॥
 चिता पास परीक्षा की थी और नाहि कोउ मैय्या ।
 पढ वर्षों बवार फिरा-वही लगी नौरुगी भाज ॥
 धन के स्वप्ने रपफूचककर हा गये मन के मेरे ।
 दिन ईच्छा कुग्राम वास मे रहते दिवम घनेरे ॥
 बीते-सकल मनोरथ मेरे हो अनरथ के काज ।
 रुपया लेकर जीवन बेचा करता निष्क्रिय वास ॥
 विद्या जितनी नाही उ नति ती ही मैंने खास ।
 भाग्य चक्र का नही भरोसा देव गति का साज ॥
 ईश्वर जो कुछ अच्छा करता धीरज मन मे धार ।
 परमानंद मगन चरणो म करता ईश विचार ॥
 वच हरि के इसी जन्म की मिट गई सारी खाज ।

मिने मरतता मनिमास वा-वपा पति के यागे,
छा नमागुण—सतागुणा वा सार शास्त्र न गाया ।
तम ग्रान धाडु—कुर पान सतो गुणी सत्र चाया,
ईश टूपा ती सदा तिडरता पाई मत जो जागे ।
व्यापा मर रग सत्र ही जहा म यह ही एव अंधेरा,
ईश ताम वा र प्रमाश टिय जो हो सदा संधेरा ।
“बैद्य हरि” ग्रान्त अन्त है निशिदिन अस्मिन रामे,
ज्ञान श्री कोलावत मेले का दिग्दशन

गालावत पूनम के मन स्नान करन को प्राय,
भिन-2 मति वाते यात्री शतउत फिरत भ्रमाय ।
मोडा ने टेरा हाता है जो साधु कहलाते,
नगा भस्मतन मृग तण्णा म मागन को ह घाते ।
अपमान भरी आवाज गृहम्धी करत सदा लजाये,
असनी स्नान ध्यान करन को प्राय कडु नर नारी ।
बाकी मभी तमाशा देखन फिरते नयन उघारी,
दल मनहि मन अचरज उपजा भक्ति कए नही छाये ।
व्यापारी व्यापार करन को-रूप माधुरी वाते,
दादू पथी की सजी मदिरिया देवे फन में काते ।
विलासिता व्यापीजह रग रग मुनियन मन त्रितसाये,
राजस्था क मत्रीगण न अपना जाल विद्याया ।
वशीभूत भाली जनता को भापण स भरमाया,
रही विपमना राम राज्य म टनती नही टलाये ।
सब ही तरह के ठग मेले म फिरते आठो याम,
चतुर नार नर इनसे बचते धर ईश्वर का नाम ।
दृश्य नील का दल तपस्या कग्ने को मन चाये,
मन का पाप कलि म नाहि होता तुनसी गाई ।
एसा नत्र सतोप चित्तकर म हिरदे हूलमाई,
कविल देव नक्षमीपति मेरी रक्षा करने घाये ।
नोप न्ना श्रद्धाभक्ति का केनव रहा निखावा,
मिट मर्याद धम की साधो ! समझ हिय पछतावा ।
कलिधम की महिमा छमी त्रिशको दोष लगाये,
मय मेनो म सब ही तरह क दृश्य नजर जो आत ।

अच्छे घुरे वम जो करने फन भी वैसे पाते,
 वैद्य हरि प्रत्यक्ष देखकर पद्य पठन को गाये ।
 तीर्थ ध्यान मे किया पाप जो वञ्चलेप हो जाता,
 एसा समझ 2 मन अयाग । ईश प्रेम जो च्हाता ।
 उसकी नैय्या जगदीश्वर भी गित उठ पार लगाये,

ज्ञान लेखक को अनिच्छा से एकान्त वासानुभव

भय मोह ममता का छाया,
 मृत्यु आज चाह सौ वर्षों मे होती शास्त्र म गाया ।
 प्राणी को यह आश वधी ह रक्षक घर के मेरे,
 दहज टुग आयु नही बटती भोग कर्महु केरे ।
 अतवाल जब होय नान तर दीखे ईश्वर माया,
 नही मानत मन मम समभाये फसा मोह ममता म ।
 घीरे स अम्यास करहु-रख ध्यान ईश समता म,
 टूतत घीरे पास यही अनुभव ये मेरे आया ।
 दो घण्ट एकान्त वासरर नही किमी से बोलो,
 ईश्वर भजन नान सरणी से इस श्रिथि को सोलो ।
 वैद्य हरि जीवन अपने मे कइ वार अकुलाया,

ज्ञान जयपुर दर्शन वणन

जयपुर के बाजार म मै देय स्वर्ग की छाया,
 घम भूमि यह रामराज्य की है रहत कुछ लोग ।
 मैंने भी फिर-2 कुछ देखा भक्तिभाव का जोग,
 कुछ बुद्ध रेखा ईश भजन की हिय विच खीची राया ।
 गोविन्द नेव का मन्दिर धारी बहुजन देवन आते,
 राधा गोविन्द हरिगुण गावे सफन मनारथ पाते ।
 राज्य व्यवस्था बहुत श्रैण्ट है नित रहन मन भाया ।
 बडे बडे मन्दिर गृहलो विच भगवत मूर्ति विराजी,
 धर्म मजातन यश लहरी की पहने गगती बाजी ।
 अब ना पूजक और द्रव को एकाकी मै पाया,
 सब ही तरफ की सुनभ वस्तुये सोना माती हीरा ।
 वणिग्या हाट मजाये बँठे देखडिगे मन घोरा,
 मीमित बही रूप रोशनी की भिल मिन करती काया,
 अय शहर मे घम अदिकता इम युग मे भी पाई ।
 वही कही है पापराशिवे डेर डेर ह भाई,

नरकयातना यम भगवन् की करे नाच है चाया ।
 मन ललचाया रहन को लल शोभा छणी वहा की,
 अ दर से देखी नाही म यातना गरब तहा की ।
 उपर की जजाल यवतिवा दग हिय भरमाया,
 ग घभभवती गली गली दिच मूत्र पुरीष की धारा ।
 ग-वेदिय का नाश पाव दिा म हो अनुभव म्हारा ।
 स्वग नरक प्रत्यक्ष दग मै इन पछा म गाया ॥
 स्वग नरक क भोग यहा भी हैं दगन को भात ।
 रूप विराट प्रभु नगरी म वर्माधीन सब पात ॥
 'बौद्ध हरि' न सब विध दगी विश्वम्भर की माया ।

राधा कृष्ण की जय

पद्मादशो विश्राम

श्री पूरण काम रामाय नम

ज्ञान भजन

कामना मन मे जागी मान ।

वित्त विभव धन त्यज के भी मैं चाह ईश महान् ॥

जीव-मुक्त होत जब हसा तब छूटत अभिमान ।

बिन मानन के इश सुपथ म आलस नरतन जान ॥

भरे तो मन प्रथमारभे मान भया समान ।

इस भव भेषज साथ 2 म किया प्रभु गुण गान ॥

मान अश्वरथ उपर चढ मै पाई हरि गुण स्नान ।

अब तो मानमयी प्रभु स्तुति भर मन बन तान ॥

बँध हरि युत विनय प्रेम स नित नव होती मान ।

ज्ञान भजन

है सब के मन मे ज्ञान ।

गाते गीत भरे गुण गौरव मन की नही पहिचान ॥

मधुर गिरा से मन मुद करने दूजा मोदा कान ।

एड तम त्रिपणा सत्य दय से बुद्ध हृक्षण सोच सुजान ॥

जा नोहन कल्याणकारी है उनका कर स मान ।
 कुछ फल मिलता चित्त टिकाये ऐसा मन मे जान ॥
 नौका भव की पार भजु त्यज मोह माया अभिमान ।
 कथनी मीठी त्वाड सी लागे करणी विष की खान ॥
 ऐसा तम हिय छाडु बावरे जो चाहत जगमान ।
 तो कुछ क्षण 'हरि वैद्य' याद कर सत मन से भगवान ॥

ज्ञान दोहा

राम नाम गुण मजरी विकसी नर तन हाल ।
 पाया जम अमोल त् अत्र तो सीचन चाल ॥
 खा रोटी कपडा पहर फिर तो हरि गुण गाय ।
 रोटी वसतर जब मिलता तब कयो पाप भ्रमाय ॥
 इन्द्रिय विषयन दौडती इनकी रीति स्वभाव ।
 भव जग म नर दु ख घरो अत्र हरि गुण गाय ॥
 आदि मध्य सत्र अत्र मे गर्भावस्था काल ।
 हरि की महिमा जानते तो भी फसे जजाल ॥
 काम लोभ ममता घिरा ना सोचा तू सार ।
 अत्रकाल पछनायगा सुख दु ख मय ससार ॥
 आत्मा मन के ज्ञान की नौका भजु बनाय ।
 बैठ कलेवर ममुद नर भव सागर तर जाय ॥
 शिशु मन गया क्लोल मे बाल बाल सग खेल ।
 यौवन युवती सग मे बूढा पन दु ख जेल ॥
 दूर दृष्टि से सोच नर जग जीवन का बाल ।
 क्या करना है किस समय निमल बुद्धि सभाल ॥

ज्ञान भजन

ह प्रभु नही मान मन नीच ।
 विषय मोह माया के शरण सुख पडा लोभ भव कीच ॥
 शोध बैर पाखण्ड आधिडिग निन जाता है खीच ।
 प्राण क ठ आकर घबरावो जब दु ब सरिता धीच ॥
 तब पछतावा वैद्य हरि हो प्रभु पद पहले सीच ।
 गुद हृदय निमल मन भजले नयन खोल मन भीच ॥
 कुछ क्षण जग जजाल छाडकर ममता मोह उतीच ।

नित नियमित अभ्यास योग से चेतन हिय से पीच ॥
क्षण एकांत यास प्रभु सेवा त्यजो कामा ढीच ।

कवित्त (शान)

काल की सी बात लागेबीत गया बात पन ।
आई जो जवानी प्यारे निया मग बीन गई ॥
काम लोभ मोह ममता की यदनिका पडी ।
मूत्यवान तर तन तेरी आयु जान गई ॥

अचरज दु ख अब होता हिय पछतावा
तेज पु ज ओज शक्ति आज मेरी रीत गई ॥
आनंद उमग विषया म लागे बहुकाल ।
भान हान भोडा "हरि" ईश बुद्धि चीत गई ॥

जोश जो जवानी अर लाभ का आता है तन ।
दखता नहीं है प्राणी बद्धत्व छा जायगा ॥
पाला नही ब्रह्मचय त्यागी नही ममता ।
बात फिर कोई नही पूछे पछतायगा ॥

दिवसो गई हुई पीछे की प्रभाव शक्ति ।
पाछी नाही आवे जब मन दु ख भायगा ॥
अब तो सहारा एव विश्वपति प्रभु वा ।
बैच हरि प्रेम से परम पद पायगा ॥

ज्ञान (दोहावलि)

इस कलियुग में बठिन है बानप्रस्थ स पास ।

ईश्वर का नित ध्यान घर कर कटती यम पास ॥

मेरे मन मे यह जचा लोभ काम को त्याग ।

भोजन घर से पाय के गाथा प्रभुवर राग ॥

यह शरीर विन अन्न जल कलियुग म नही काम ।

देता निश्चय जानिए भज ईश्वर श्री राम ॥

राग त्याग अभ्यास से घर को तप बन जान ।

अलग बुट्या पास म नियमित प्रभु का ध्यान ॥

(दोहावलि)

हरिद्वार वाणी बसो जो मन पूर्णान्न ।

तो निश्चय ही जानिए मुद है अन्निलान्न ॥

बिन भानहि जीता नही नर इम कलि ससार ।
 ईश्वर का धन मान धन सोच सोच भव पार ॥
 दारा मुन जब योग्य हो ईश्वर का अभ्यास- ।
 आरभ निश्चय कीजिए त्यज जग झूठी आस ॥
 बूढ़े भित्तक देप मे ना सुभिरण हो ईश ।
 हतु इन्द्रिय शिथिलता स उपजे मन रीस ॥
 यदि भित्तुव व सग म होनी है पहिचान ।
 विद्वत्ता साधु गुणा माया रत तू जान ॥
 सव म अन्दा माग यह घर मे कर तप ध्यान ।
 बयो ना स्थिरता से करे सब व्यापक भगवान ॥

(दोहा)

सब से उत्तम अमर धनमिलता है कर त्याग ।
 तुलसी सूर को इह कनी मिला प्रभु अनुराग ॥

(दोहा)

मान द्रव्य सब जीव नर । चाहत इस ससार ।
 कम झुंझट मे यह मिले प्रभु गुण के आधार ॥
 ईच्छा मत्र ही जीत ली नही कामना मान ।
 मोक्ष साधना करत जो हिय बनी यह आन ॥
 परम हम का ध्यान भी मोक्ष कामना माय ।
 आत्मा जीव सुजार न ईश्वर के डिग जाय ॥
 ईश्वर के गुण गान स अपने आप मिली- ।
 मान निधि की पटिका हृषित हृदय कली ॥
 अहमार युन सत्व गुण करा प्रभु गुण गान ।
 हमके बिन नहीं तरत है दृढ अनुभव म जान ॥
 गुस्वर कोई ना मिला धन म सभी ममाय ।
 सच्चा गुण परमग का सत्य हृदय से गाय ॥
 राटी कपडे का नहीं घाटा साच मुजान ।
 विश्वम्भर सबकी भरे उदर गुहा बलवान ॥
 चेत चेत नर ध्यान से बुद्धि अमन विवेक ।
 जो मच्चे हिरदे जचे बही माग है नेक ॥

विश्वपति विराट् भगवान की आरती

प्रभु विराट् की कर नित सेवा-मिलत मंगल मोदह मेवा ।
 गीता मे अजु न ने देखा-प्रभु विराट् का लखा जोखा ॥
 वही देव दशन कलि जानो- जनता प्रभु को सदा पिछानो ।
 भूवर पृथ्वी सागर भारी प्रभु विराट् की शक्ति प्यारी ॥
 विश्वगम मैं थिर है चनाचल अदभुत तेज श्रोज मगा जल ।
 यही विराट् का मजु रूप है । धम सनातन स्तम्भ स्तूप है ॥
 जो कृद्ध नभ उर्वी म छाया-है विराट् जग विशाल काया ।
 इनकी सेवा सत्य हृदय कर धून दीप नैवेद्य फूलधर ॥
 सब मानव सुख सम्पत्ति दाता चतुर युगा के गही विधाता ।
 गैद्य हरि नित विनय जोर कर-नत मस्तक है चरण शीश धर ॥

सालवा विश्राम समाप्तम्

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव ।
 त्वमेव विद्या द्रविण त्वमेव त्वमेव सर्व मम देव देव ॥



ग्रन्थकर्ता का सविनय परिचय

सवया

पावन मजुन गोन वशिष्ठ म विप्र जू चद्र निशार कहायो ।
जात चुलेट-शाख-माया दिनी-प्रवर यजुर्वेद नी मन भाया ॥
सात्विक बुद्धि निश्चल ब्राह्मण डू गरराम तिरु सुत जायो ।
पीन सुधी हो रामलाल नित मनन भागवत जनम गमाया ॥
पूर्व कम तप फल म सुत हो ता क जम “वद्य हरि पाया ।
सतिशिक्षा पितु सदुपदेश स इश चरण म नित मन लायो ॥
जम भूमि श्री रतननगर हे भारत श्रीकानर म गायो ।
राज्याश्रय मे भद्रभू आकर प्रभुवर पद म चित्त सवाया ॥
द्वि सहस्र दश अधिक वष के नवगजपवारभ कराया ।
रुग्ण सुसेवा लेखन सचय साथ साथ म सदा सुहायो ॥
सम्बत दो हजार एकादश उपर भास्कर दिन जब धायो ।
ऋतु वसत प्रिय मधु मुभास म प्यारी पूरणमा दिन छायो ॥
हरि रमामृत ईश प्राथना गाकर अत्यानंद समाया ।
मन बाद्धित सुगम सम्पत्तिदाता लक्ष्मी वधक कलिसदा-यो ॥
सध्या दिवस शांत बला म गाकर प्रभु पद शोश नवायो ।
मनु ज म का सार ‘वद्य हरि’ समभहृदय म अति हुलसायो ॥

टिप्पणी स्पष्टीकरण—लेखक क परदादा—प किशोर चंद्र शर्मा लेखक के दादा प डू गरराम शर्मा—लेखक के पूज्यचरणपिताजी प श्री रामलालजी शास्त्री (श्री हरिहरानंद सरस्वती श्री करपात्री जी महाराज चारणसी द्वारा प्रदत्त भागवताचार्य उपाधि से विभूषित थे) लेखक वद्य हरिप्रसाद शर्मा आयुर्वेदाचार्य की जम भूमि श्रीकानर राज्यातगत रतन नगर ह । राज्य सदाकाल म (भद्रभू) कोनायत तीर्थ के पास एक ग्राम म वास करत हुए हरि गुण रचना की और लिपी । आत्म सतोष आनन्द-यश सभी अभीष्टो की उपलब्धि हुई । अत पढकर आप सभी आत्मानंद प्राप्त करत हुए तथा नुटियो को छेन्त हुए अर्च्छ समाग का सुभाव दे ताकि आगे क सस्करण म गुद एव वृद्धि की जाय ।

शुभ भूयात्

ॐ शानि शानि शुभशान्तिभवतु ।

ॐ नमोभगवते वासुदेवाय

श्री हरिशरणम्

श्री राम-कृष्ण-रति-दाता-आरती माला

[उत्तरार्द्ध]

जय सीता राम

जय सीता राम

जय सीता राम

जय सीता राम

जय सीता राम

जय सीता राम



—जय सीता राम।—

श्री करपात्री महाभाग द्वारा दी हुई भागवताचार्य उपाधि से विभूषित
प रामलाल शर्मा के सुपुत्र वैद्य हरि प्रसाद शर्मा ने
नई आरतीमाला की रचना की, जिसको उनके सुपुत्रों
आचार्य कृष्णदत्त शर्मा, रमेश चन्द्र शर्मा
एम ए ने सम्पादन किया।

राम नाम मणि अमृत धारी
शिव कह गिरिजा मुनहु पियारी
राम-नाम ही महिमा भारी
रटते अखिल जगत नर-नारी ॥१॥
श्री राम जय राम जय जय राम
जयति रमा पति राधेश्याम ॥
पार्वती शकर जप नित नाम
सीतापति सब पूरण काम ॥२॥

चन मुद्रि १५
विक्रम सं २०११

रचयिता —
वैद्य हरिप्रसाद शर्मा
रतन नगर (चूल्ह) राज

शुद्ध जलपान (आचमन विधि)

“माघवाय नम स्वाहा” मुख से उच्चारण करना ।
एक झ जली जल पीकर के ध्यान प्रभु रा निन धरना ॥1॥

“कशवाय नम स्वाहा” द्वितीय बार पाणी बोलो ।
एक बार फिर मधुर चारिको पीयो ईश्वर यश घोरो ॥2॥

‘नारायणाय नम स्वाहा’ तीसरी बार गिरगमन धार ।
मधुर आचमन करो सुजल से गुद्ध हात है मन समार ॥3॥

स्थिरता बलशक्ति की गरिमा आचमनहि से आती है ।
मस्तक हिय म पुष्टि प्राति घरु ' शीतलता लहरानी है ॥4॥

प्राणायाम से पहले करना शुद्ध आचमन मनुज महान ।
गुणगरिमा यह जल की जाना प्रखिलविश्व का जीवनदान ॥5॥

ईश्वर जल का महायोग यह नितनय प्राति प्रदाता है ॥
आवि व्यापि को दूर भगाकर आयुष्मान बनाता है ॥6॥



प्राणायाम मन्त्र :

तीन बार जल का आचमन करने कीजिए—

ॐ भू ॐ भुव ॐ स्व ॐ मह ॐ जन
ॐ तप ॐ सत्य ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि
धियो योन—प्रचोदयात् ॐ आपो ज्योति रसोमृत
ब्रह्म भूभुव स्वरोम् ॥इति॥

विशेष—बद का अभ्यास जिसे न हो वह केवल नाम से विष्णु ब्रह्मा शिव का
ही ध्यान थडा भक्ति प्रेम पूवक करें ।



✽ शांतिदाता मंगल पाठ ✽

विश्वपति की मंगल स्मृति से सब सुख मंगल शांति अपार ।
 दिवस सुशांति रात्रि म शांति नभ पृथ्वी जल शांति ही सार ॥
 औषध वनस्पति म शांति अन वस्त्र म कर्मण गार ।
 विश्वाङ्गण म सदा सुशांति मंगल मोद सदा विस्तार ॥
 जग विराट प्रभु के दशन म मंगल शांति हा सदा हजार ।
 सब दवा की सुप्रसन्नता विश्वेश्वर का प्रीति उदार ॥
 आनन्द मंगल मुख शान्ति धन-धाय की वृद्धि सभी प्रकार ।
 'हरि कृपा श्री जगदीश्वर की मंगलदाता तारन हार ॥

सकल्प [दृढ निश्चय का स्मरण करना]

पूजा का सकल्प सुजल से-या-मन-से-जिसकी करना ।
 सम्बत मास पक्ष तिथिवार की गोत्र सहित वाणी भरना ॥
 ईच्छा हो जिस काम की मन म ईष्ट निवेदन है करना ।
 इच्छता स होती सिद्धि 'हरि' हिय विचार अपन करना ॥

पौडशोपचार पूजा विधि [सोलह तरह से पूजन]

पहले-आवाहन कर प्रभु का दूजा-कर आसन सत्कार ।
 तीजा-पाद्यचरण ओकर वे चौपा-घघ्य सुगन्धि अपार ॥
 पचम-आचमनीय सुजल "हरि" छठा-सविधि स्नान सुधार ।
 सप्तम-मुन्दर कपडे पहना । अष्टम-चन्दन गंध सुसार ॥
 नवमा-चावल फूल सुगन्धित । दशवा-धूप करो हर बार ॥
 एकादश-म दीप समपण । द्वादश-म नवद्य प्रकार ॥
 तरह-म कर मगुर मजुजल । चौदह-एला लोण उदार ॥
 पन्द्रह-म कर स्वण दक्षिणा । सोलह-प्रारती तारन हार ॥

(विस्तृत षोडशोपचार शिव पूजा विधि)

विस्तृत शिव पूजा विधि हितकर सबलाक मंगलकारी ।
 विष्णु ध्यान म हा पवित्र कर प्राचमनीय-मधुरवारि ॥
 प्राणायाम-र म ग-यास फिर प्राण प्रतिष्ठा करो महान ।
 पाद्य मध्य प्राचमन सहित-श्री शंकर प्रविकारी का ध्यान ॥
 दानदय मधुकर प्राचमन सुन्दर वारि-स्नान कराय ।
 दूध स्नान फिर उदक स्नान न भोले शंभु चर महाय ॥
 दधिलपन कर-भात्र भक्ति मे सुन्दर जन मे माफ करा ।
 घृत मानिस कर प्रेम मुमन स मजुल नीर सुप्र ग धरो ॥
 सहत चढा शिव शंकर को निकर जल स स्नान मदा ।
 मधुर शंकरा म ग रगड कर स्वच्छादक से-स्नान सदा ॥
 पचामृत घारा का लपन-कर गगानल से-सुस्नान ।
 अभिषेचन-कर शिव शूली का शतवमन-कापीन-सुदान ॥
 मधुराचमन करापद्मपति को प्रिय आभरण-सदा पहराय ।
 यनापवीत मत्रयज चन्दन-चावल फूल-सुहार चढाय ।
 बिल्प पत्र प्रिय है शिव शंभु अपण दुर्वा महिन करो ।
 धूप दीप नवद्य प्राचमन-उमापति के भेंट धरो ॥
 मुख-द्विद्विताम्बूल-दक्षिणा-महादव के सदा चढे ।
 ऋतुज फली-मरु फूलमाल म-सुख समझि सदा बढे ॥
 ऋषू राति कर- पुष्पाज्जली-दक्षिणा-शिव की करनी ।
 क्षमा प्राथना-पादनमन-से-हृदिबैद्य-बाधा टरनी ॥

द्वितीय विस्तृत षोडशोपचार पूजा विधि

कुछ विस्तृत विधि ऋषि देवा की पूजा की रहलाती है ।
 पहल प्रावाहन कर सबका-द्वितीय प्रतिष्ठा-भाती है ॥
 ध्यान लगाओ जिसकी पूजा करनी-मरु आसन समान ।
 पाद्य-द्वैय फिर मध्य-दान कर मधुराचमन-र सुन्दर स्नान ॥
 पचामत-से स्नान करा फिर ग बोदक का-स्नान कराय ।
 रुचिर वस्त्र-यनोपवीत से ममरा का दा म ग मजाय ॥
 चन्दन-चावन-पुष्प-धूप-सग करो दीप-का मजु प्रकाश ।
 नाना विधिन बैद्य-प्राचमन सुन्दर फल-ताम्बूल-मुवास ॥
 हेम रजत की-सविधि दक्षिणा-सहित मत्र अपन करा ।

कपूर राति तदा मुमगत-ध्यान श्री प्रभुर का धरना ॥
पाप नाशनी कर प्रदक्षिणा-पुष्पाञ्जली दा प्रेम तदाय ।
करो प्रायता-मपुर तट ति-नमस्कार "हरि" जान नयाय ॥

(पनापचार पूजा विधि) सक्षिप्त

पहले स्नान करा ईश्वर को-दूज ग पाक्षत दीज ।
तीज पुण सहित कर भूप मुगिषत प्रणय निज कीर ॥
नौव म कपूर दीप घर तर नीराजन जग बीज ।
पाप म -नवच पदाय तत्र हरि, प्रपन सं रीक ॥

(ध्यान शक्ति सहित प्रभु का)

जिस शक्ति का गुप्त वगन मुन्दर मत्र उद शास्त्र नित गाठ है ।
जिस माया पति न मजु रूप सब बंद शास्त्र बतलात है ॥
जिस प्रादि प्रनत प्रनामय का तत्र ध्यान सभी मुग पात है ।
जिस रूप मनोहर को हिरद घर ध्यानदिन हा जात है ॥
वसा मुन्दर ध्यान श्री प्रभु ता स्थिर नित सं मन हिय म धार ।
कान काया मुग्मय हागा मुग्मय हागा सब परिवार ॥
प्रपन सग उधार सभी का करना एसा सदा विचार ।
'दीप हरि' प्रभु शक्ति-चरण म सगजा करदें बेडा पार ॥

(कपूर दीप की आरती विश्वपति की)

दीप कपूर कनक दल-पीतल-ताम्र रजत म पूय प्रभो ।
कदलीदल सज्जित मनसा वा नीराजन स्वीकृत करो विभो ॥
मत्र किया विधि हीन विश्वपति पूजापुण मु प्रारती से ।
एरण कमल 'हरि' शीत भूषाळ मपुर चित्त प्रिय भारती सं ॥

(कपूर दीप की आरती विश्वेश्वरी)

दीप-कपूर कनक दल पीतल ताम्र रजत म ह भाता ।
रक्त वसुम सज्जित मनसा वा नीराजन प्रिय नव-भाता ॥
तेरे पद मे शीत भुका विधि हीन किया प्रपन करता ।
वरद हस्त रख मेरे सिर पर तेरा ध्यान "हरि" धरता ॥

(प्रदक्षिणा विधि)

जो कृद्ध पाप निये मने प्रभु पूवज ज-म-इत-ज-म सुधार ।
तेरे शरणागत हो फेरी देता हू स्वीकृत कर-चार ॥
प्रदक्षिणा विश्वेश्वरी ईश्वर-की-कर मन म मान हजार ॥
जो पत्त तीर्थों रे मिलता, 'हरि' विश्वपति पद हाथ पसार ।

पुष्पाजली (सब देवताओं की)

कमल कुसुम-शतदल-सयती-मद्य प्रसन्न चपक मजु सभार ।
विल्व पत्र तुलसीदल-मञ्जरी-मञ्जली मधुर सुगन्ध मपार ।
जाति-बबुल-प्रवाल पाटला आम्र पुष्प करवीर सुसार ॥
विश्वम्भरी विरभ्रवर मपण हा प्रसन्न 'हरि' सदा उदार ॥

आरतो पश्चात् विराट ईश्वर (की प्रार्थना) राग सोहिनी

उस विराट-मनन्त ईश्वर-ईश्वरी हू प्रणाम है ॥
पद गिर हजार सुमूर्ति बाहु आय पूरण काम है ॥1॥
नित्य शाश्वत पुष्पनाम हार जिनक गाइये ॥
युग धारन वाले प्रभु क चरण "हरि" गिर लाइये ॥1॥
शिव विष्णु ब्रह्मा नाम से जो विश्वपालत ह सदा ॥
उत्पत्ति पोषण नाश से सत्तार चालक मवदा ॥
उस दीनव-धु दु ख विनाशक पूज्य करुणाधाम को ।
नितपाद बदन है मरा "हरि" तेज पुज ललाम को ॥2॥

क्षमा प्रार्थना

जो पद अष्ट हीन मात्रा स अक्षर रहित उपचारा है ॥
हो प्रसन्न सब क्षमा करो प्रभु तारा एक सहारा है ॥
मत्र प्रिया विधिहीन महेश्वर और जनादन क्षमा करो ॥
जय विश्वेश्वर जय विश्वेश्वरी पूजन पूर्ण सदा सुधरो ॥
अनजाने जाने मने जो भक्ति हीन करी पूजा ॥
देवी देव क्षमा अपराध करो रू । सहाय नहीं दूजा ॥
आवाहन नहीं जानत हू पितु और विसजन नहीं माता ॥
पूजा और गति तेरी को हे परमेश्वर जग जाता ॥
जगदीश्वर जगदीश्वरी स्वामी अपने सदा कहाये है ॥
नाम लेत अपराध सैकड़ो क्षमा करन को धाये है ॥
जयति सुरेश्वर । जयति अग्निेश्वर । जयति महेश्वर । मंगलकाम ॥
जय अशिलेश्वरी । जयति महेश्वरी । करता हू मैं अब विनाम ॥

(योगक्षेम) सत्र के हित के लिए

ब्राह्मण हो भूमण्डल म तेजस्वी तपस्वी व्रतधारी ॥
शम दम शीघ्र सरलता शांति सत्य श्रोज के अधिकारी ॥

ब्रह्मचर्य युत वेदा व पाता हा जग क हितकारी ॥
 दया क्षमा प्रिय नित्य अहिसक उपदेशक ह सदाचारी ॥
 क्षत्रिय वीर महारथी जग के रक्षक हा ममरागण गीत ॥
 ऋषि गोरक्षक वैश्य सदा व्यवसायी हा हरो पर की पीर ॥
 शूद्र सुमरर धेनु पयस्विनी तुरग वपन हा प्रति प्लपीर ॥
 गुणयुक्ता सु दर नारी हा जमे भरत सत्स गृह हीर ॥
 वादन वर्ण मन ईच्छा जन श्रौपयिया पत्र वाती हा ॥
 धाय प्रसविनी स्तामयी वमुधा पर नित हरियाली हा ॥
 जलधि हिमावय मीमा म हो प्रकृति नही मतत्रात्री हा ।
 ज्वालामुखी की ज्वाला स जग रक्षक व वनमाली हा ॥

शान्त उमग सदा पृथ्वी पर भगलमय जगदीश करो ॥
 सत्य सदाचारी प्राणी की हृदयवती न नित विचरो ॥
 सत तुद्ध सत्सगति देवा विगरी भेरी सदा सुचरो ॥
 ' वच हरि ' शुभ योगक्षेम यह विश्वेश्वर पद जाय परो ॥

आशीर्वाद (सबके लिए)

सुवी निरामय प्राणी हा देखहु जग म जगदाधार ॥
 सबका नित कल्याण दक्षिहा दु ख न किसी का करुणागार ।
 मानव आश्रम कम सुरत हो ईश्वर पर विश्वास करे ॥
 कमयोग का पालन करता निज पापों का नाश करे ॥
 जगदीश्वरमय सबका देखे आत्मा जता सब सत्तार ॥
 धन अथ अरु काम माक्ष का होव प्राप्त मन्, फल चार ॥
 फूने फने मिले सुन सम्मति सुनदारा वभव परिवार ॥
 आशीर्वाद ' हरि ' विश्वेश्वर का नित वन्दन करो हजार ॥

आशीर्वाद (यजमान के लिए) राग सोहिनी

तजस्वी लक्ष्मीयुत सदा हो कामना यह ईश से ॥
 आरोग्यता तरी रह स्थिर प्राथना जगदीश स ॥
 आयु हो सौ वष की कीर्ति बढे समार म ॥
 धाय धन वद्धि सदा हो मन लगे उपकार म ॥
 दूव वाली गाय पशु दो नित्य सेवा के लिए ॥
 प्राप्ति हा बहु पुत्र की हिय ईश सेवा क लिए ॥

भारत काय हो मुझे रद देने हानो का ॥
 मन्द पर नै लिक हो भाती हो मजिसेव का ॥

भारती पचाह पा (भारती विधि)

पात्र उह करनी है भारती पद दारु की पत्रे ॥
 दूरी कना नन के पुति तव कुनाकर ननु मुते ॥
 वन पुत्र वनन उ नीवा देव देवरी नानकन ॥
 चापी पतिन मानन वनरादिक व नुन ननपिन ॥
 पवन पूजा म द उवन मष्टा गों नह दन प्रान ॥
 हरि पचाप भाती कर रद रते हो जोमावान ॥
 नान मुख ननपति निपनी ह हरि नौ पूजा नरा हवार ॥
 पन मुददार मजोकिर मुव का निप नना हो निप नवार ॥

चतुर्दश सन्धा आनी उनाले की विधि

हिम चा बार पद उन न विष्णु भारती नरा उजार ॥
 गामि दन न नीराजन फिर करनी है सन्धा वा बार ॥
 कनन नवन क मुख नहन पर एक भारती फिर करना ॥
 सब म गों पर सात वा 'हरि' मन्त्र प्रभु बावद हरनी ॥
 सात बार मुख नान तक फिर नात बार सब म गों पर ॥
 सब सन्धा है चतुदश कानी प्रेम भारती उन नन भर ॥
 मानकाम उदा मुखवान रनपति पर हा बनिहारी ॥
 श्री नगनीनारायण पद न्यादावर भापु नै चारी ॥

भारती सम्बधी ज्ञान

(भारतियों की बति सन्धा)

दोमतिका पात्र सात या एक प्रभु क करनी है ॥
 पत चन्दन कपूर भार कु कुम म सल्लत करनी है ॥
 मयवा कवल घृत पूरित ही म जुन्ई की बतों बनाम ॥
 नाराजन ईश्वर ईश्वरी का करना मक्ति प्रेम चगाय ॥
 विपमवर्ती से पूजा करनी सबिधि यहा बताती है ॥
 महावाद्या जयघापा स यह सब के मन की भाती है ॥
 गल नगार प्रज टालिया मधुर ध्वनि के बाय बजाय ॥
 उच्च गन्द वा पटा नानर नान्द मजीर सभी हवाय ॥

समय समय व सुलभ वाद्य स प्रभु को हम रिभाना है ॥
 'बद्य हरि' सगीत कला स नृत्य मनोहर गाना है ॥

भारती फल (उपसहार)

जगदीश की यह भारती जो प्रेम से गाये सदा ॥
 धन धाय सुतदारा विभव की नित्य बढ़ती सम्पदा ॥
 भाव हिय मन भक्ति का हा और श्रद्धा चाहिए ॥
 भारोग्यता चारः पदारथ विश्वपति स पाइय ॥
 आदर सदा हा जगत म विश्वास कर के मानिए ॥
 निज आत्म म नित एक घडा भर ईश को पहचानिए ॥
 लाकमाता लाकपितु करते सदा बल्याण है ॥
 इह लाक म सुख भोगकर परलोक पावत मान है ॥
 दृच्छा सभी परिपूर्ण होती धर्म गाथा गाइये ॥
 जब वक्त शांति का मिले परमेश को हिय ध्याइए ॥
 सुलभ जितनी वस्तु हो शुभ भारती उससे करो ॥
 अथवा सुमन से सुमनसा गायन मधुरता पद धरो ॥
 मानसिः या सविधि भारती नित्य ध्यान द जग वरे ॥
 सब लोक रूप विराट प्रभु का भावना मन म धरे ॥
 ह भाग्यशाली नारी नर करत प्रभु गुण गान हैं ॥
 उनका सदा होता "हरिमत" सवविध कल्याण है ॥

गजानन भूत गणादि सेवित कपित्थ जम्बू पल चारु भक्षणम्
 उमासुत शाक विनाश कारक नमामि विघ्नश्वर पादपकजम्

शांताकार भुजगशयन पद्मनाभ सुरेश ॥

विश्वाधार गगन सद्यः शेषवण शुभागम् ॥

लक्ष्मीकांत कमलनयन योगिमिर्धनिगम्य ॥

व दविष्णु भवभय हर सकलोरु न्नाथम् ॥

नीलाम्बुज श्यामल कीमलाग सीता समारोपित वामभागम् ॥

पाणौ महाशायक चारु चाप नमामि राम रघुनाथ नाथम् ॥

(रामायण)

नाम सकीर्तन यस्य सर्वापाप प्रणाशनम् ॥

प्रणामो दु ख शमन स्तनमामि हरि परम् ॥

(भागवत)

आत्मारामस्यकृष्णस्य ध्रुवमात्मास्ति राधिवा ॥

तस्य दास्य प्रभावेण_विरहोऽस्मान् न बाधते ॥

(भागवते कालिन्दी)

आरती सामग्री

सक्षिप्त पंचोपचार सामग्री—

जन, चन्दन, चावल, धूप, दीप, नैवेद्य (प्रसाद), सब देवताओं के लिए सक्षिप्त षोडशोपचार सामग्री, जल, दूर्वा, चावल, मौली (वस्त्र) चन्दन (केशर), रोली, फन, धूप, दीप, नवेद्य (मिथ्री) पेडा हविष्यान्, इलायची, चोग, सुपारी, कपूर, दक्षिणा, सक्षिप्त षोडशापचार सामग्री, जल, चावल, मधुमक, दूध, दही घत, सहत खाड (चीनी), पचामृत, गगजल, श्वेत वस्त्र, अन्न फल, यनोपवीत, मलय-चन्दन, बिल्वपत्र, दूर्वा, धूप, दीप, रुई, दियासलाई, नैवेद्य, एला, लौग, सुपारी, दक्षिणा, ऋतु फल, फूलमाला, कपूर ।

यह सब देवताओं की पूजा सामग्री है । पूजा में पहले सकल्प करे जिस देवता से जो कामना इच्छा रहती है उसी का ध्यान सकल्प में करना चाहिये जिससे देवता प्रसन्न होकर उसी कामना को पूरी करत है जो पूरी भक्ति श्रद्धा से करता है उस फल जल्दी मिलता है जो सामान्य करता है उसे सामान्य फल मिलता है । यह पूजा मन्त्रविधि कल्याणकारी एक शुभ मंगल करने वाली है । सबको धरने-अपन ईष्टदेव की करनी चाहिए ।

विष्णु के तुलसी, शिव के बिल्वपत्र, मूय के अन्न फल, देवी के लालनगर चणाना चाहिए ।

उदये ब्रह्मणो रूप मध्याह्ने तु महेश्वर ॥

अस्तमाने स्वयं विष्णु स्त्रिमूर्तिश्च दिवाकर ॥

सबमंगल भागल्य शिव सर्वाथ साधिके ॥

शरथ्य श्यम्बक गौरिनारायणी नमोस्तुते ॥

—रमापतिभवन पहला विश्राम—



जय राम

जय राम

श्रीराम

श्रीराम

जय जय राम

जय जय राम



जय राम श्रीराम जय जय राम

समर्पण

विश्वपति के चरण कमलो मे यह तुच्छभेंट
प्रार्थना

ह विश्वेश्वर ! कमला-वर ! प्रभु ! पद पकज तव बलितारी
अपण शब्द रचित सुमनों की यह माला है गिरधारो ॥
प्रेम सुगन्ध मदा सज्जित है कर लेना स्वामी स्वीकार ।
पद नतमस्तक सदा चढाऊ चिर सेवक हां करुणागार ॥
जो गाँवे नारीनर इसको सुख सम्पत्ति उनको देना ।
भव सागर की नौका के बन नाविक प्रभु वर तुम सेना ॥
दीन दयालु नाम आपका प्रार्थना स्वीकृत कीजे ।
“हरि” गद गद प्रेमाश्रु नयन स पादपदमतव नित भीजे ॥

-- सादर सप्रेम --

सदानन्त मस्तक हो प्रफुल्लित मन स

चढाता हू

स्वीकार कीजिए

सेवक पदारविन्दानुरागी

वैद्य हरिप्रसाद शर्मा आयुर्वेदाचार्य

पो० रतननगर जिला बीकानेर,

(राजस्थान)

• मिति ज्येष्ठ कृष्ण 13 बुधवार, स वि 2033

श्री परमात्मने नम

गणपति स्तुति मगलाचरणम्
रिद्धि सिद्धि सदापार्श्वे स्थितोचामर सयुते ।
पाद पद्ममहवदे गणेश विघ्ननाशकम् ॥

शिव स्तुति

शम्भु कल्याण कर्तार देवी दाक्षायणी युतम् ।
नभामि मे मनो यु ज्यात् हरिपाद निषेवणे ॥

सरस्वती स्तुति

सरस्वती जगदवद्या बुद्धि सिद्धि प्रदायिनी ।
निमज्ज कुरु मे चित्त तद हरिगुण भाजनम् ॥

राम स्तुति

सिद्धि भक्ति सदा दाता कृष्णारूप मोदम् ।
मेघवण शुभाय च हरि पादौ मातिमम् ॥

हनुमत् स्तुति

विद्या बुद्धि निधान च हनुमत् अजनि सुतम् ।
वशरी प्रिय रामस्य कुरु चरणयोमति ॥

मानस प्रसन्नता

कवीना गुण बद्धाना इष्टा कीर्तिर्मेयाहृदि ।
अमरत्व प्रदातार रामाकुर प्रजायते ॥

सज्जन से विनय

श्री हरि पद पुष्पेभ्य कवित्व न प्रधानता ।
मनोहारी सुगधि च सदा गह्वरु सज्जना ॥

सूरतुलसी स्तुति

सूर तुलसी गुरु नत्वा रचामि भक्त बत्सलम् ।
राम कृष्ण गुण हृद्य सबवाधा निवारणम् ॥
तुलसीश पद चित कृत्वा नित्य निरन्तरम् ।
शिव हरि गणेशच गुण गाथा प्रगीयते ॥

परमात्मा महिमा

यस्य स्मरण मात्रेण इह पर लोक मगलम् ।
प्राप्नोति नर नारीच रामान्त सत्य जानतु ॥
राम कृष्ण शिवा दुर्गा विनती नित्य मानवी ।
सीता राधामपर्णा च सदा सिद्धि प्रदायिनी ॥

तम सकट के तुम भानु हो विघ्न निशा चदा ।
 मम मन कमल खिला है बुमुदिनी मुखकंदा ॥ जय
 सभी देव समान युक्त हैं कर पूजा धारो ।
 पाया सकल मनोरथ सम्पति सचारी ॥ जय
 धूपदीप कपूर आरती ले आयो आगे ।
 अब तो करो मोद मन नूतन नवरागे ॥ जय
 श्री गणपति महाराज आरती जो गाव मन ना
 "बैद्य हरि" सुख पावे घर सम्पति विरसे ॥ जय

आरती नव ग्रहो की

जयति जयति जय नव ग्रह देवा-सब सकट कटते तव गवा ।
 जय मंगल शनि राहु केतु निजमुख सागर क सेतु ॥
 जय बुध चंद्र शुक्र गुरु राजा जय मुखर रवि सकल समागा ।
 दया तुम्हारा सब सुख फूल गल शोभित बहुरंग दूकूले ॥
 सब वस्तु सब विधि अणुकर देते दान सदा जो मन भर ।
 मुख सम्पति घर उनके आती दुःख दरिद्रता रोगनशाती ॥
 धूप दीप नैवेद्य फलानि रजत स्वर्ण सब धाय जलानि ।
 ले पुष्पाञ्जली पादप दमम घरे बैद्य हरि रहित छत्रमम ॥
 जगजीवन मुख ईच्छा भरती शक्ति ग्रह की रक्षा करती ।
 पूजा उभयलाक सुखकारी प्रेम आरती भवभय हारी ॥

आरती षोडश मातृकाको

षोडशमातृका मंगल रूपा सर्वा अथ साधक है अनूपा ।
 लाल वस्त्र म सदा विराज नित्य प्राथना दारिद्र भाजे ॥
 देवी रूप य सत्र कहनाती पूजा से आनन्द ददाति ।
 सावित्री गौरी मेघादिक देत सदा सुख अरु अणिमादिक ॥
 शरणागत दीना की रक्षक आति दु ख अमंगल भक्षक ।
 जय नारायणी जय नारायणी लक्ष्मीरूप सुमंगल लायिनी ॥
 धूप दीप नैवेद्य आरती नित्य सुमंगल जय सचारती ।
 'बैद्य हरि' तव चरण सरोवर-हावे नित आनन्दित होकर ॥

—श्री रामभवन द्वितीय विधाम

आरती वरुण देव की

जय जय वरुण देव जग पालक-मुजलामृत प्राणि सब चालक ।
लोको के जीवन कहलाते सप्त लोक वष स्थपिन पाते ॥
सब सृष्टि के मजु प्राण हो-चतुर्विधा योनि के त्राण हो ।
गंगा जमुना वारिधितेरे है प्रत्यक्ष ह रूप । घनेरे ॥

पूजा विधिजो तुझे मनाते नर नारी मगल व पाते ।
काम विश्व के मव करते है हिय तव नाम सदा धरते है ॥
प्रलय काल मे रूप तुम्हारा होत भयकर अपरम्पारा ।
पृथ्वी नभ म व्याक होकर सोते हो युग कल्मष धोर ॥

जय प्राणेश अखिल जग स्वामी सदा सनातन अ-तर्यामी ।
बीज रूप जय अ त्रलदाता हरित वण सब विश्व सजाता ॥
धूप दीप कपूर आरती फल नवैष अखिल जग तारती ।
रोम रोम म रमत, हरि है जय जिवशध्यान नित धरि है ॥

सरस्वती वदना

जय जय शारद बुद्धि विधाता जग की तुम महतारी हो ॥
सुमतिदायिनी हस याहिनी जन रक्षक कर तारी हो ॥
शुल्क वस्त्र धारण करके तुम अघ जगत की स्रष्टा हो ॥
वीराधारिणी कुमति विदारिणी सब शास्त्रन की द्रष्टा हो ॥

अभयदान दे हरति अघ को करती हो जडता को दूर ॥
विमल कृपा तव जा पर होती वह प्राणी सब गुणभरपूर ॥
हाथ स्फटिक पद्मासन राजति ऋषि मुनि देव मनाने है ।
ब्रह्मध्यान मे तत्पर हो वे निशिदिन तव गुण गाते है ॥

उर मे ध्यान प्रेम से तेरा उहे अमरता मिलती है ।
मन उपवन मे बुद्धि मजरी हरित नाल हो हिलती है ॥
ब्रह्माच्युत शकर भीतेरा निशिदिन वन्दन करते हैं ।
हरि कुम्बगन सुमनाजलिने पाद पदम मे धरते ह ॥

आरती श्री सरस्वती जी

ॐ जय शारद जननी ।

कुमति निशा की नाशक हो तुम दिव्य मनी । टर १४
रुद्र पियारी सब सुख कारी रूप धरा गौरी ॥
सुर नर पाश लक्ष की काट दई डारी ॥—

परम कृपा बैक ठाविप की हुए पूज्य जग कारज सारे ।
 ऋद्धि सिद्धि खडी चमर डोलावती कर त्रिशूल मुद मोदक धारे ॥
 शरर सुत सब जगवदन है मूपक वाहन परम पियारे ।
 एक दत्त लम्बादर सोहे चन्द्रभान कर परशु सुगारे ॥
 मंगल दाता-वुद्धि विधाता-महाभारत के हुए लिखारे ।
 विद्यादाता-नुमतिनशाता-सकटदाता-सख दुख जारे ॥
 कलियुग सिद्धि सर्वाहि के दाता मुख सम्पत्ति जग के रखवारे ।
 "बैद्य हरि" की सुनह प्रार्थना निश्चिदिन करत खडा तब द्वारे ॥

गणेश स्तुति व भारती

गज मुय विघ्न हरण तुम देवा-मुद मन करे तुम्हारी सेवा ।
 उनके कारज पकज फूले-तुमहि दिवाकर पा धनुकूले ॥
 भेंट बढावे मोदक भीठे-उनके सफल मनोरथ दीठे ।
 सिद्धि सिद्धि खडी चमर डोलानी-भक्त हृदय नित नह उपजाती ॥
 कर मोदक परशु तिरछूना-दास शरण-लख-सकट भूला ।
 मंगल कौमुदी क तुम चन्दा-मन अलिगनूके तुम मकरदा ॥
 कलियुग सब सुख देन हारे-गिरिजाशकर विघ्न पियारे ।
 कर जोडे रूप भारती-करे बैद्य हरि मधुर भारती ॥

श्री गणपति जी की भारती

ॐ जय गणति देवा ।
 कटत दारिद सकट करते जो सेवा ॥ ॐ जय ॥
 हाथ विराजे फरसा और मादक शोभा ।
 मम मन मधुकर बनकर दशन को लोभा ॥ जय
 एक दत्त-गज मूड-भाल म बाल चन्द्र चमके ।
 रिद्धि सिद्धि चमर डोला व मुक्तामणि दमक ॥ जय
 सुन्दर ग्रीव कठ म शोभित जय माला ।
 दूर करत भक्तन के सकट तत्काला ॥ जय
 लंबोदर मूपक वाहन है चारों मन्दगति ।
 गाने को गुण हुलसी मन मन अर्थ मुमति ॥ जय
 गौरी शरर सदा पियारे किये काज बनक ।
 प्रथम मनाव नुमका विघ्न नही छनक ॥ जय
 मंगलदाता सब प्राणी के तुम हो बुद्धिपति ।
 विशाक रत्नाकर हो तब चरण रति ॥ जय

"वच हरि पद पाइ गा रति
हिय नरनारी दिव्य छटा सी ॥ जय जय

शिवजी की आरती

ॐ जय गिव जगत पिता ।
गोरीधर गगाधर प्रिय पति दक्षमुता ।
शभु ईश पगुपति शिव शूली शरर ईश्वर नाम ।
महादेव मृत्यु जय हर पूण वाम ॥ जय
वामदेव भव भीम त्रिलोचन शेखर चंद्र सटा ॥
भाग्यवान तुम जाना गाव नित्य मुदा ॥ जय
राम भक्ति परिपूण सरोवर रहन नित्य प्रति ।
अमल विवेकान द स्मर नर धार धति ॥ जय
पचानन बठे वपभानस प्रिय गिरिजा धीशा ॥
सूत्र चतुदश निकस डमरु, वागीशा ॥
भाल चंद्र रिपु मकरध्वज के हस्त महेश त्रिमूल ॥
पाप पुज तम पूरण कानन कर निमूल ॥

ले घनसार ज्वलित नीराजन धूप दीप के सग ॥
मुद हो शीश चढाव कनक अक्ष फल भग ॥

शक्तिमान हो सब सुखदाता बसन बाधवर का ॥
भूषण अहिगण मडल रूप दिावर का ॥

रत्नावर मधन वेसा म सुरहित कर विषपान ॥
हालाहल से रक्षित है त्रिलोकी की महान ॥

नीलकण्ठ विषभक्षण काल महामोद मन धार ॥
हृदयकमल म प्रभु का किया ध्यान साचार ॥

जगत पिता कामादि ईश की आरती हरि माई ॥
मानस सुमन नरण मे बलिहारी जाई ॥

विश्वनाथ शकर की आरती

शीशजटा नित सुरसरि बहती विश्वनाथजे अग्निाशी ॥
मुक्ति परम पद देत प्राणी बसत रहत जो नित काशी ॥

वामभाग श्रीगिरिजा वठी दक्षिण पडमुख और गणेश ॥
बाहन नदी सिंहा मोर है मूषक पण्डीधर गले महेश ॥

हाथ त्रिशूल और डमरु है भाल चंद्रमा राज रहे ॥
तीन नयन भृगुटी सुतेज स प्रभा रवि शशि लाज रहे ॥

कानारि रति वर प्रदावा नुत्ता नाव हितकारी ॥
तारकासुर के अन्तर नुज्ञा को सुकर भव नवहारी ॥

रामभक्ति लवलीन सदाशिव सीता वेप सती त्यागी ॥
दम्भयज्ञ यौगानि मन्म हा जना हिनालय अनुत्ता ॥

कठिन तपस्या करो अररना हित अपने शिव मनने जान ॥
अवहरदानी आशुतोष प्रभु किया उमा का शुभ कल्याण ॥

वषावर घर शम्भु उनापति अवतुन मेरे क्षमा करो ॥
सुख सम्पत्ति धन मगन दाता पदरत्र मन्त्रक सदा वरा ॥

नित कैलाश वास सौम्यानन दर्शन को नितचित्त चाहा ॥
मन मधुकर मरकन्द पानकर शिव गुण ता अवगाहा ॥

सुर किन्नर गधर्व अप्परा मोद भरे स्वच्छन्द निवान ॥
हरित भूमि नव कुसुम निर्करा करते गौरी शकर रास ॥

भाग घतूरा हालाहन पी अमृत रक्षा मयनकाल ॥
नीलकण्ठ हो सदा महेश्वर करो कृपा श्री दीनदयाल ॥

षपदीप मलयचल चन्दन धिम नैवेद्य कपूर सफूल ॥
बंश हरि शकर की सेवा त्रिविध ताप हरती सब शल ॥

शिव प्राथेना (तज राम चन्द्र कृपालु भजुभन)

शिव दयाल उगापति कर याद मन नित सादरम ।
पगुपति शकर जगत क सुख निधान र आगरम् ।

चन्द्रशेखर शम्भु शूला ध्यान नित हृदये धरम् ॥
श्रीश गगाधर महेश्वर भक्तजन अथयन ॥

प्रय नत्र भकुटी पचसर कर भस्म रतिशुभ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

श्रुति मडली वृत्त हास्य गिरिजा जाति ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

मन्त्री विबुक्धो की धरती ध्यानी ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

अरि तारकासुर नाश हित गुण ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

चन्द्रमाल त्रिशूल धारी ईर्ष्यामर ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

तल फली कर डमरु, शोमित का ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

राम भक्ति प्रदायन ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

गोकुल श्री कृष्ण दर्शन ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

ध्यान घरु कलाशपति ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सम्पत्ति मुखद निर ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सर्वा वाषा व्याधि नाशक मन धी हिय गालवरम ।
 रट मोक्षद गुवरानन 'हर काम भोध नाटरन् ॥
 कलिकलाप दु ग भयभय पद दीनता ररि हरम् ।
 निज चाप गुस्ता लपुहरी टरिराम जनसुता भवम् ॥
 "धैर्य हरि' हिय त्वन पटन वमनु निज छवि गुणकरम् ।
 मन हस्त वन पद वमन मुता नित्य लह भव दु ग हरम् ॥

(भारती नरय की) शिराप

जय भरव सब सिद्धि प्रदाता भक्तजन व दु घ छुटाना ।
 तीन नयन अष्टादन भुज है नाशक त्रिविध ताप ज्वर रज है ॥
 गुह्य वल पचानन साहा सिद्धि सुख म मुर नर मोहा ।
 सुन्दर भेषज मान चाप है सायन नित पद वरत आप है ॥
 गान मुमुद्राशास्त्र विराजे दानन से नित दारिद भात्र ।
 अमृत विष सोहत डमरु मसि मस्तक पर गाभित द्विताया शशी ॥
 मूलपारा घट्वाङ्ग हाथ म भृकुटि तेज सोहत सुमाप म ।
 गदावह्नि भाराग्य सुभाला श्री भरव छाल ह क काला ॥
 नुद्य सम्पति मन वाद्धित दन "धैर्य हरि' सकट हर लेत ।
 धूप दीप नैघेय भारती ल पुष्पाञ्जली गावो भारती ॥

--शिव पार्वती भवन तृतीय विद्या ।

उमा शकरायनम

भारती पावती शकर की

जयति जयति जय पार्वती शकर ।
 शक्तिशिर तीन नयन डमरु कर ॥ (टर)
 सुग सीभाग्य ददाति गोरी ।
 सती हिम मना परम किशोरी ॥
 नन्दी वाहन शकर घोरी ।
 मंगल दाता नित शिशूल घर ॥ जयति
 मस्तक बिन्दु इन्दु सम देहा ।
 गिरिजा करती शिव पद नेहा ॥
 कैलाशी वासी नित गेहा ।
 योग समाधि अनग दहन कर ॥ जयति

उमा जगत जननी कहलावे ।
महादेव जग पितु सब गावे ॥
गल अहिगगा शश सजावे ।
छवि अर्वा ग सुता प्रिय भूवर ॥

जयति

सिहवाहिनी पूज्य भवानी ।
हरति रुद्रा कलि कल्मष प्राणी ॥
सुख मम्पति दाता शिव दानी ।
सुर रक्षा कत कठ म विष घर ॥ जयति

धूप दीप कपूर आरती ।
विजयाफल नैवेद्य भारती ॥
'हरि' उमा शिव नाम-गारति ।
नित पद चन्दन करता किकर ॥

जयति

गौरी स्तुति

जय गिरिजा जय सती भवानी ।
भेटहु वनेश भक्त जिय जानी ॥

जय शकर मानस मरालिनी ।
दक्ष यत्र बनी महा करालिनी ॥

गणपति पडानन हु प्रिय माता ।
शिव सरोज पद मनहि सुहाता ॥

वाम अ ग शिव सदा सुहाती ।
भव-मन अलि मकरन्द सजाती ॥

सिंह वाहिनी आनन्द दाता ।
सुमति मजरी सदा विभाता ॥
शल सुता मैना की प्यारी ।
त्रिविध ताप अघ नाशनहारी ॥

मोह भमता वन दहन वृशानु ।
हिय पकज मुरभित तुम भानु ॥

शिवहित महा तपस्या कीही ।
कामजार अर्वा ग म लोही ॥

अबडर दानो शिव दिनेग री ।
वन पकज कली घिली सुरस की ॥

“वैद्य हरि” तव चरण कमल मे ।

अलियन मुद मकरन्द विमल म ॥

(आरती गौरी माता की)

ॐ जय गौरी माता ।

नति शिरामणि देती नारी अहिवाता ॥ टेर

चत्र मास म गौरी पूजा करती सब कया ।

स्यानी भयानी प्रेम मे कर होनी धया ॥ जय

सीता पूजन चती राम-वर इप्सित को पाने ।

मन बाछिन वर दीहा प्रेम को पहिचान ॥ जय

अचल सुहाग तेरी सेवा मे जग नारी पाया ।

सब सुख सद्दर दती और कचन काया ॥ जय

शिव प्यारी गजमुख षडमुख की अरु जग की माता ।

सफल मनोरथ सुर की रक्षक मदु गाता ॥ जय

मना गिरिवर राज सुता तुम नागद की शिक्षा

कठिन तपस्या पाई शिव वर की भिक्षा ॥ जय

ध्यान मन्त शिव शकर के जब छोडा जल पानी ।

गिरिजा हुई अपरना सुर ऋषि सब जानी ॥

तुम शिव मुख मुद चन्द्र चकोरी पति इच्छा से प्रान ।

दक्षपिता घर छोडे मख मे पति अपमान ॥

मम हृत्कमल खिलावन हारी हो पावन धारा ।

गति रति तव पद मेरी नित इस ससारा ॥

धूप दीप कपूर आरती वेला नित गावे ।

शुभ सुहाग धन सम्पति नारी प्रेम पावे ॥

सीभाग्यश्वरी पावती की आरती “हरि” गाई ।

सुमन माल हिय प्रेम की डाली गल माई ॥

(आरती मगला गौरी की)

जयति मगला गौरी माता ।

सुग सोभाग्य पुत्र की दाता ॥

नारी तव पद पूजा पावे ।

उभय लोक पति सुख हरपाव ॥

जयति शिवा जय गौरी भवानी ।
जय शिव शंकर की प्रिय रानी ॥

तेरी दया सिया बर पाया ।
प्रिय मन रामचंद्र हिय भाया ।

नारी जगत की तुमही कल्पतरु ।
माता भव बाधा मेरी हरु ॥

मैं मागती जननी सुंदर बर ।
तव पद भक्ति सुहाग सदा कर ॥

धूप दीप कपूर रु रोरी ।
फल नगैद्य सप्रेम भरोरी ॥
करू आरती "हरि" हर गौरी ।
जय हिम मना प्राण किशारी ॥

(आरती विष्णु की)

ॐ जय विश्वेश हरि ।
कलमल सकट हारी नरतन रूप धरी ।

शान्ताकृति प्रभु पदम नाभ हैं रहते नभला सम ।
स्वामी सुरेश्वर पाठे शय्या कृष्ण भुजग ॥ जय

लोको क आधार-गगन-से-मेघवण शुभ अग ।
लक्ष्मी कान्त कमल से-नयन-योगी मन रग ॥ जय

भव भय हारी पाप तमारि दाता मुख आनंद ।
सब लोको के स्वामी वंदी मन मुद चन्द ॥ जय

महन् रुद्र बरुणेद्र ब्रह्मनिता दिव्यस्तवन कारी ।
साम वेदी वेदी स गाते असुरारि ॥ जय

प्रभुरति मन स ध्यान मग्न हैं योगीराज सारे ।
देखत अन्तन पाव सब सुरगण हारे ॥ जय

करणा सागर सब सुख आगर धन सम्पति दाता ।
मन । रख शीश चरण मे हू जग के आता ॥

सनकादिक ध्रुव जेप शारदा तप गुण नित गा ।
नारी नर ब्रह्मानी गा नित हरपा ॥ ॥

धूप दीप कपूर आरती ले नवेच खडा ।
मम मन नातक बनके तव पद स्वाती मडा ।

रिद्धि सिद्धि आरोग्य रमा-सुत-दारा-मोक्ष सदा ।
 "हरि" दयालु हो देते पूर्णानन्द मुदा ॥ जय

(विश्वपति विराट् प्रभु की धारती)

प्रभु विराट् कर नित सेवा ।

मिलत मंगल मोदरु मेवा ॥

गीतो म अजु न ने देखा ।

प्रभु विराट् का लेखा जोखा ॥

वही देव दशन कलि जानो ।

जनता प्रभु को सदा पिछानो ॥

भूधर पृथ्वी सागर भारी ।

प्रभु विराट् की शक्ति प्यारी ॥

विश्वगभ म धिर जे चला चल ।

अदभुत तेज ओज गगाजल ॥

यही विराट् का मजु रूप है ।

धम सनातन सुदृढ स्तूप है ॥

जो कुछ नभ उर्वी म छाया ।

है विराट् जग विमाल काया ॥

इनकी सेवा सत्य हृदय कर ।

पूष दीप नवेदय फूल धर ॥

सब साधन सुख सम्पत्ति दाता ।

चतुर युगो के यही विधाता ॥

बंध हरि नित विनय जोर कर ।

नत मस्तक हैं चरण शीश धर ॥

(धारती सब देवताओं की राग सोहनी)

गणपति-शारद शिवा शिव चरण नित मम वन्दना ।

लक्ष्मी नारायण दिवाकर वद पद रज वन्दना ॥

श्रीमहाकाली सरस्वती हरिप्रिया श्री गार्गी ।

दुर्गा धम्बा गगा जमुना राधिका सिय ध्याये ॥

रामणि गोमात गौरी भगला तुलसी सदा ।

सत्यनारायण सहित मुन्य कारणी अरु हृपदा ॥

बद्रीनारायण नवगृह वरुण भैरव गान से ।
 धन्वन्तरि रु दशावतार की प्राथना कुछ मान से ॥
 चौबीस रूप प्रभुसनातन आदि देव नमोनम ।
 राम कृष्ण प्रभु पवन सुत पाद पद्म नमोनम ॥
 श्री राम सीता कृष्ण राधा विश्व प्राणाधार है ।
 कर प्राथना 'हरि' नमन गायन नृत्य सब सुख सार है ॥

भारती लक्ष्मीकांत की

भारती लक्ष्मीकान की कीज । टेर
 तन मन धन सब अपसु कीजै ॥
 गदा पद्म शुभ शम्भ धरे है । चक्र मुकुट कु डल निखरे है ।
 पदरज कुसुम कमल विखरे है-गदगद कठ नयन हो भोज ॥ आ
 वाम अग शोभित कमला ह ।
 रूप सुशोभित ज्यो चपला है ॥
 गुणगरिमा प्रभुकी अमला है ।
 ईश जिवाये नित ही जीजै ॥
 गावत सुर नर अरु सनकादिक करतल सिद्धि सभी अणिमादिक ।
 शेष मुनि शिव मन महिमादिक अब पद रज का अमृत पीज ॥ आ
 नारदेद्र ध्रुव तुलसी गाव ।
 सूर सुधासम सुयश सुनाव ॥
 मीरा मापुरी नाभ वजाव ।
 सुन्दर अब भक्ति वर दीजै ॥
 भृगुपद हृदय गने विर माला-रूप विराट कालहू काला ।
 कोशल्या त्वे वी क वाला-त्व नयन भर, अब नामी ज ॥ आ
 धूप दीप कपूर भारती ।
 लेकर 'हरि' गाई सुभारती ॥
 मति हिय मन विच प्रेम भारती ।
 लख सुन प्रभुवर सदा पसोज ॥ आ

प्रभु की मंगल आरती

मंगल आरती नित्य उतार । टर
 मंगल मुकुट प्रभु मुख मंगल मंगल जग व सर्वाधार ।
 मंगल भस्त्र मंगल भृकुटि मंगल नयन सदा हरवार ॥
 मंगल श्रवण नासिका मंगल मंगल गण्ड कपोल प्रकार ।
 मंगल हाठ चिबुट मंगल है मंगल भूपण सब मुख सार ॥
 मंगल ग्रीवा मंगल भाला मंगल हाथ बने दातार ।
 मंगल लकृटि मंगल दुपटी मंगल मुरली राग हजार ॥
 मंगल नख शिप मंगल नूपुर नाचत मंगल सदा उदार ।
 मंगल श्याम पीत पट माल मंगल दृष्टि प्रेम अपार ॥
 मंगल विष्णु चतुर्भुज मंगल मंगलामय है जगदाधार ।
 मंगल रूप विराट प्रभु वा मंगल की जा भ चौद्यार ॥
 मात शत्रु वमन फल मंगल धूप-दीप तबख रहार ।
 मंगलमय प्रभु की आरती 'हरि' सब सुखदाता मंगलचार ॥

आरती श्री सत्यनारायणजी की

ॐ जय लक्ष्मी स्वामी ।
 सत्यनारायण देवा तुम अंतर्यामी ॥ टेरे
 लोकरास जन दुख दीनता नारद मुनि जानी ।
 विष्णु लास विधि पूछन मन म अनुनानी ॥ जय
 रमाकांत श्री पति नारद की विधि सकट हारी ।
 लगे व्रतावन व्रत स जग मुख सचारी ॥ जय
 सत व्रत विधि आ मृत्यु लोक म नारद समझाई ।
 धन सम्पत्ति करन से सतानद पाई ॥ जय
 सतानद मुख सुन यह गाथा चंद्रचूड र निसाद ।
 लक्ष्मीकान्त के व्रत स पाया धन प्रासाद ॥ जय
 चंद्रचूड स सुनी वश्यवर पाई धन सतान ।
 सत्य सुबत नही कीहा आया कष्ट महान ॥ जय
 कलावती व्रत मुदित हुए प्रभु वश्य क्षमा का दान ।
 फिर मारग म परखा कलावती भगवान ॥ जय
 वश्य प्रतिना सत्यदेव की पूजा हित ठानी ।
 ले परसाद कलावती पाया पति मानी ॥ जय

शख चक्र गदा पद्मधारी की करो प्रेम पूजा ।
 धूप दीप मेवा फल तुलसीदल दूजा ॥ जय
 श्री सत्यनारायण प्रभाव से बँडे घाय स तान ।
 घन सौभाग्य विजय भी, मिटे टु च बलवान ॥ जय
 सुख सम्पत्ति दाता प्रभुवर की आरती नित गावे ।
 वद्य हरि घर ताके नित मगल छावे ॥ जय

आरती दशावतार की

आरती मुख कर दश-अवतार की क्षय कारिणी वर्धित भू भार का । टर

प्रलयकाल घर मीन सदेहा ।
 बंदोपधि रक्षित निज गेहा ॥
 अन्न सप्तऋषि नैय्या नेहा ।
 रक्षा की जग सब प्रकार की ॥ आरती
 कच्छपदेह पीठ घर धरती ।
 आपत म जब वसुधा परती ॥
 लोकाेश्वर पद वदन करती ।
 करत बुद्धि तव सदा चार की ॥ आरती
 हिरण्याक्ष जब घरा रसातल ।
 ले मल-कीच गया जब खल-बल ॥
 सुअर रूप घर भू-दशन स्थल ।
 नाश किया निज शक्ति नार की ॥ आरती
 हिरण्यकशिपु हरिनाम विरोधी ।
 अत्याचारी पापी त्रोधी ॥
 नर हरि रूप निजाड्डुऽवरोधि ।
 रक्खी टेक प्रह्लादकुमार की ॥ आरती
 वामन रूप लक्ष्मी सुर देकर ।
 छल बलि पृथ्वी तीन पग लेकर ॥
 डूबत सुर नर नैय्या खेकर ।
 पद रज पूजो विश्वाधार की ॥ आरती
 त्रोधी भृगुपति रूप अपारा ।
 बदा पाप क्षत्रिय कुल मारा ॥
 भव टु व मेट सुधम प्रचारा ।
 तेज पुज शोभा अपार की ॥ आरती

रघुपति रूप हरा नू मारा ।
 कु भ करण रावण को मारा ॥
 धम थाप सुर नर उद्वारा ।
 जय नित बोलो भय्या चार की ॥ भारती
 यन विधि वेदा की लख कर ।
 द्रवित हृदय पशुवध अ सुवनडर ॥
 बुद्ध रूप धर हिंसा हर कर ।
 जय हो बुद्ध श्री प्रभु उदार की ॥ भारती
 उपर भूमि म हल चालक ।
 अ नोपधि रस के सचालक ॥
 जग बलराम रूप सब पालक ।
 जय जय हो जीवन दातार की ॥ भारती
 बल्की रूप म म्लेच्छ सहारे ।
 सुर नर ऋषि मुनि जग रखवारे ॥
 अघम हर कर धम सकारे ।
 जय केशव दश विध साकार की ॥ भारती
 धूप दीप कपूर भारती ।
 शख वसन नैवेद्य सदा-रति ॥
 वैद्य हरि मन मुख सचारती ।
 मंगल सम्पत्ति सुखाकार की ॥ भारती
 भारती ब्रह्मा विष्णु महेश की

ॐ जयति ब्रह्मा विष्णु महेश ।

टारत जीव चराचर बलश ॥ टर

प्रथम श्री विष्णु क मन स ।

जगत सृष्टि रचने निकस ॥

नाभि क कमल माहि बिलस ।

विधाता चतुरानन वदेश ॥ जयति

विराजे हंस कमल आसन ।

बद रच बिया जगत शासन ॥

पिनारमह रक्तवण भव जन ।

मन्द-ऋषि रचना की, आदेश ॥ जयति

सुदशन चक्र गदा धारी ।
 चतुर्भुज पद्महाध चारी ॥
 सष्टिका पोषणकर भारी ।
 भरत सत्र लोकन नित लोकेश ॥ जयति

पियारी श्याम मेघसी देह ।
 करत सब प्राणी सदा सनह ॥
 वासते घट घट वासी गेह ।
 विनत नत मस्तक सतत सुरेश ॥ जयति

पति ह कमला क सुदर ।
 नयन मुख कमल सदा प्रियवर ॥
 ध्यान धरे योगी मन मंदिर ।
 तमाहर भव भय व्याधि दिनश ॥ जयति

मुकुट शिर कु डल मन मोहा ।
 कटि मृदु पीनाम्बर सोहा ॥
 विहग पति गरुडहि श्रवरोहा ।
 वक्ष धर कौस्तुभ हार सुदेश ॥ जयति

सदा है शेष शायी प्रभुवर ।
 नाथ सब लोकी के ईश्वर ॥
 विश्व के रक्षक जगदीश्वर ।
 शीश से अभिवादन है दिनण ॥ जयति

बढत जब पृथ्वी भार सारा ।
 करत है दुष्टन सहारा ॥
 महेश्वर गुण अपरम्पारा ।
 महा कालेश्वर है प्रलयेश ॥ जयति

है जटा नयन शिव शांत ।
 करत नित ध्यान प्रभु वेदांत ॥
 भस्म तन रमत गौरी कांत ।
 गले के भूषण फणी विशेष ॥ जयति

हाथ म डमरु और त्रिशूल ।
 नयन है तीन दु ख निमूल ॥
 बसन बाघबर-दिशा दुकूल ।
 नदीगण वाहन पूज्य महेश । जयति

करनिघर घूप दीप भाई ।
फलनि पटरस नंदध चढाई ॥
स्तुति 'हरि वंद्य' नह गाई ।
ले गुगमद मनथ त्रिवश ॥ जयति

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ॐ जय लक्ष्मी माता ।

दृग् दग्द्विता नाशक कलि म जो गाता ॥ टेरे
विष्णु प्रिया तुम सदा सयानी नाम तरा कमल ।
पद्मानया श्री र्दिरा हरि प्रिया चचला ॥ जय
नेरु भानु तुम सकट हारिणी देती मोक्ष सदा ।
मा कहने से आती रिद्धि सिद्धि सुगदा ॥ जय
मुत्तर कश सिंदर माग म शोभित मृगमद सग ।
सुर नर मुनिजन मन है चरणमल म शृङ्ग ॥ जय
शीश मुकुट कुडल कानन है नासा म हीरा ।
माननले कर ककण वाजू बंद चीरा ॥ जयति
पद्मासन स्थित पद्म हाथ म कमल नयन चौडे ।
दिव्य रूप मणि सोह दशन चिन दीडे ॥ जयति
स्नापित हम कु भ अरु वाहिनी सिंह पीठ साहे ।
रूप चतुभुज श्यामा सब नर मन माहे ॥ जय
कलि म देख प्रभाव आपका चरण शरण आया ।
निर कर घर मम आगण बठो कर दाया ॥ जय
सुर नर मुनि जन इस कलियुग म सब हैं वश तरे ।
मंगल दात्री धात्री नित तुम को टरे ॥ जय
सुख कचन की हो तुम राशि माया पति प्यारी ।
मोहिनी बन अमरो की सब विपदा टारी ॥ जय
घूप दीप कपूर भ्रगर स प्रेम हिये गाता ।
सकल मनोरथ सिद्धि सुख मम्पति पाता ॥ जय
सुंदर आरती मातु लक्ष्मी को प्रेम वाणी बोले ।
वन्द्य हरि घर कमला धन पट नित खोले ॥ जय

श्री लक्ष्मी स्तुति

विष्णु प्रिया जय लक्ष्मी माता-मंगल खानि सब सुखदाता ।
तव पद पङ्कज कुमुम खिले हैं-देख मधुप मन अग हिले है ॥

लक्ष्मी पद्मा कमला नामा-लेहि लोक पावहि विश्रामा ।
 लोक मातु इन्द्रिमा मा रानी-सब सुख शोभा तोहि बखानी ॥
 चित्त मराल की हो तुम मोती-कलियुग सबकी जीवन ज्योति ।
 शख चक्र गल माल विराजे-गदा प लख दारिद भाजे ॥
 धूप दीप नैवेद्य आरती-गुण गाती रह सदा भारती ।
 शोभित हार हिय मदहसनि-आदनि रेशम पट मृदु असनि ॥
 मुकुट शीश कुडल कानन मे-अरुण सुहाग बिन्दु भालन म ।
 कटि किफली कर ककण सोहा-कयूर नूपुर शिख नख मोहा ॥
 'बच हरि' तव ध्यान मगन है-चरण कमल म सदा लगन है ।

श्री महाकाली की आरती

जय जय जय अम्बे विश्वेश्वरी ।
 शारद लक्ष्मी काली रूप धरी ॥
 पाप पुज भयु कौटम घातिनी ।
 देव सुखी-महिपासुर शातिनी ॥

शुभनिभु भ शर्वरी हारिणी ।
 चनहि चन्द्रिका सुर दुख टारिणी ॥
 त्राघ रूप आगे सब देवा ।
 विधि हरि हर कर जेरे सेव ॥

काल जनित वाधा जब होती ।
 तदनु रूप अवतरहि खोती ॥
 रिद्धि सिद्धि कौमदी प्रकाशी ।
 हा रकश करहि सुखराशी ।

मन वाञ्छित पकज को पुणित ।
 करति दिवाकर हुयन सुस्मित ॥
 भव दुख मशक उडावन हारी ।
 हरि विरची हर की नित प्यारी ॥

मातु शरण पद मरोज दीजे ।
 'जननी कपा कुपुत्र हु कीजे ॥
 भाग आरती लिय उपस्थित ।
 खडा "बेद्य हरि" नम्र सुमस्थित ॥

श्री लक्ष्मी माता भवन पंचम विश्राम

मममन पवज विवसित भानु भृज त्रिभाल शोभित है जानु ।
 शीश जटा मुनि वेष वनाय-कोटि काम रति छवि लजाय ॥
 जय दशरथ के प्राण पियार-तव वियोग सुरताक सिधार ।
 मम मन मधुप चरण कमलनि म-नित मुद त्रिमि गुक मन पत्तननि म ।
 हाहु प्रेम मम पाद पदम म-वासनिरन्तर छवि छदम म ।
 मानस ले हरि वैद्य भारती-गाव नित भव व्याधि टारती ॥

भारती चारो भय्या राम लक्ष्मण, भरत शत्रुघ्न की
 राम लखन की प्रेम भारती-भरत शत्रुघ्न की सदा रति ।
 मजुल रूप सुधाकर सम है-पावन चरण सदा नत हम है ॥

राम जगत के सदाधार है ।
 करत सुरक्षा बल अपार है ॥
 लखन सुलक्षण जग रख बारे ।
 धीर वीर जति नित सुख कारे ॥

विश्वभरण से भरत राज है-करत पोषण सजग आज है ।
 सियराम पद प्रेम अपार-राज्य छोडकर सुयस्य प्रचार ॥

धम धुरधर नीति निपुन है ।
 रामचरण अरपन तन मन है ॥
 बुद्धि विवक ज्ञान के सागर ।
 प्रातु प्रेम के परम उजागर ॥

वन में गय मातु सब लेकर-कैंकयी अपयश कुछ धीकर ।
 थाप पादु का शील निबाहा-रामाना म नित भवगाहा ॥

पूज्य भरत के चरण कमल मे ।
 नत मस्तक हू नेह विमल म ॥
 नाम शत्रुघ्न अरिदल नाशा ।
 सदा होत घर मंगल आशा ॥

धूप दीप नर्वेद्य चढाऊ-करू भारती नितगुण गाऊ ।
 वैद्य हरि के राजत मन मे-सुत अवधेश हृदय मुग्धतन मे ॥

—श्री सीताराम भवन छठा विश्राम

आरती सिधाराम की

आरती कीज सिधाराम की ।
 मुनिमन रजन शोभा धामकी ॥ दर
 मणिमुकुट सिर तिलक लाय ।
 सीतापति सबके मन भाय ॥
 हीरक कुडल कानन छाव ।
 लाजे शोभा कोटि वाम की ॥ आरती-
 शीश जटनि ब्रू नयन विशाला ।
 समराड गए काल हू के काला ॥
 नक्षत्रय कौशल्या व लाला ।
 प्रम से माला जपे नाम की ॥ आरती-
 हास्य वदन मृदु घोठ कपोला
 तद्धित वार्ति पीताम्बर चाला ॥
 वरत भक्तजन मन बल्लोना ।
 गगन वण शोभा है श्याम की ॥ आरती-
 हाथ धनुष गलमाल विराजे ।
 सुन्दर कठ कटी हरि लाजे ॥
 देख नयन दुख दारिद भाजे ।
 घाय धरा है अजुषागाम की ॥ आरती-
 राम वाम मिथिलेश किशारी ।
 बिदुललाट सिद्धर व रारी ॥
 शीश मुकुट मुख हृष-भरारी ।
 वस्त्राभरण पूज्य माम की ॥ आरती-
 अखिल लोकहु आनन्द दाता ।
 धन सम्पत्ति के सदा प्रदाता ॥
 चरण कमल मे में बलि जाता ।
 लीलाधारी वपु लनाम की ॥ आरती-
 मृग मद केशर अंगर मुचन्दन ।
 धूप दीप कपूर व वन्दन ॥
 करा आरती दशरथ नदन ।
 सुशी 'शेख हरि आठा धाम की ॥ आरती
 सिधाराम के पाद पदम म ।
 ह योदावर

प्रेमभक्ति युत, नही छदम म ।
 वसो छवि हिय प्रात शाम की ॥ भारती
 भारती सिंहासनासीन राम की
 भारती सिंहासन स्थित राम की ।
 सुखदायक शोभा सलाम की ॥ टर
 गुरु वशिष्ठ मंगल पद गावे ।
 सादर बडे वद सुनावे ॥
 जनक सुता वामाङ्ग सुहाव ।
 मंगल शोभा पूरण काम की ॥ भारती
 चमर ढुलाव भरत शत्रुहन ।
 लखन मुनिप्रा सुत आनन्दमन ॥
 चरण दाव हनुमत है घन घन ।
 भारती गावे अजुषा गाम की ॥ भारती
 शीघ्र मुकुट सित छत्र घरे है ।
 कानन कु डल मणि निचर है ॥
 हीरक रत्नासन बिखरे है ।
 लज्जित शोभा इन्द्रधाम की ॥ भारती
 मंगल तिलक लिये यव अ कुर ।
 सुदरी गावे मधुर मनोहर ॥
 जय जय घोष भया सुर नर पुर ।
 त्रिभुवन टरत गिरा नाम की ॥ भारती
 दु दुभि नभ म देव बजाई ।
 सुर नर कुसुम चढावत भाई ॥
 चिर जीवो अविचल सुख दाई ।
 खुशी "हरि" हिय नभो याम की ॥ भारती
 धूप दीप कपूर भारती ।
 फल नवद्य चढाओ पा-रति ॥
 आधि व्याधि कलि कसुप जारती ।
 दाता सुख सम्पत्ति सकाम की ॥ भारती
 भारती मयादा पुरुपोत्तम राम की

ॐ जय पुरुपोत्तम राम ।

पालक घर मर्यादा सब क पूरण काम ॥ टेर

कौशल्या दशरथ गृह जन्मे शिशु लीला चारी ।
 विश्वा मित्र ऋषि सग की जग रख वारी ॥ जय
 राक्षसी ताडका भारग मारी एक बाण मारीच ।
 रावण के ढिगभेज्या जो था कपटी नीच ॥ जय
 जनकपुरी पगुधार सर्वाह के नयन सफल कीहे ।
 शकर चाप चढाके दो खण्ड कर दीन्ह ॥ जय
 वीरभूप रावण वाणासुर आदिक का अभिमान ।
 जनक सभा म चूरण कीन्हा गये मलान ॥ जय
 भेजी जनक पत्रिका दशरथ सीताराम विवाह ।
 मुद मिथिला पुर अजुघा छाया अधिक उछाह ॥ जय
 राज तिलक गुरु आना दशरथ करन राम चाथा ।
 विधि भुव कहा कैकेयी वन स्वराज्य पाया ॥ जय
 वष चतुदश वनमग चाले लक्ष्मण सीताराम ।
 गगातट ऋषि दर्शन पंचवटी म ठाम ॥ जय
 काटे कान नास शूषनखा रावण त्रिया हरी ।
 राम सग हनुमान के मित सुग्रीव करी ॥ जय
 महावीर लका को जारी सीता सुधिनाय ।
 चमुनल नील जलधिपुल बाध के हर्षाय ॥ जय-
 रावण कु भकरण आदिक को मारे प्रभुवर राम ।
 सीता लेकर अजुघा आये कल्या धाम ॥ जय
 राम राज्य सुख शांति जम भू खुशी धरणी छाई ।
 धूप दीप नैवेद्य से "हरि" आरती गई ॥ जय
 प्रेमपूर्ण प्रभुराम प्राथना जो जन नितगावे ।
 सुख सम्पति घर भगत यश नित लहरावे ॥ जय
 हृदय कौमुदी गावत विक्सी राम प्रभु राकेश ।
 जय लीलाधर राम की जो सबके प्राणेश ॥ जय

भारती राधाकृष्ण की

प्रतिभा राधाकृष्ण अपार, जगनायक जय जगदाधार । टर
 राधामस्तक सिन्दुर रोरी, केशर बन्दन कृष्ण भरारी ।
 स्वयं मुकुट शोभित धरि जोरी, केशनान्ति पर जग बलिहार ॥ प्रतिभा
 मपुरावृत्ति कु डल वानन म, चमकत नासा मणि धानन म
 गावत मूरली की तानन म, नद हान्य दोउ परन उगार

आरती राधाजी आदि पटराणियो की आरती

जय जय रुक्मिणी जय जय राधा हरहु जगत भय दु ख अरु बाधा,
 जय यदुनन्दन प्राण पियारी चरण कमल म बलिहारी ।
 मजुवेश सिर मुकुट छवि है चमकत कान्ति किरण ज्यो रवि है ।
 मस्तक रोरी सिद्धर विराजे दर्शन से दुख दरिद्र भाजे ।
 अलक भृकुटी मुस्कान अधर मे नासा मोती कमल सुकर मे,
 बचुकी उर गल हीरक हारा कर्ण भूपण तेज अपारा ।
 मजु नयन मुख प्रभा सुधाकर कर ककण कटि काची उजागर,
 बाह सुशोभित बाजू बन्द है कृष्ण रूप सख हसत मद हैं ।
 चरणकमल मे पी मन मधुकर दर्शन रस नित प्रेम पेट भर,
 धूप दीप कपूर धाल भर अरु नैवद्य कुपुम सज्जित कर ।
 करो वंद्य हरि प्रेम आरती जो कलिकल्मष नित्य जाहरी,
 आनद वधक सम्पत्ति दाता-भक्ति लक्ष्मी गाता जो पाता ।
 जय कालिंदी ज सतभामा जाबवती सह सबहि प्रणामा,
 करत कसोल कृष्ण नितसगा सदा बहती मुद मोद तरगा ।
 मानवी मानव मानस फूले ज्यो दुर्गा गंगा जल कूले,
 नमो रुक्मिणी राधा चरणे गहहु कमल पद जा नितशरणे ।

श्री मदभागवत रसायन की

श्री मदभागवत कृष्ण रसायन,
 भक्ति मुक्ति देती प्रतिपावन । डेर

ज्ञान विराग भक्ति की प्यारी, मृत जीवन नारद सचारी,
 भक्त गोकण से धु धकारी, पाई सदगति प्रिय मनभावन ।

वद व्यास शुक नारद गाई, निगम कल्पतरु का फल भाई ।
 गुक मुख अमृत द्रव सरसाई नित पीवो कलि अमर स दावन ।

भूप परिक्षित सुन शुक बानी मृत्यु भय की मन नहीं आनी
 नित्य अजर अमरारमा जानी आत्मज्ञान की ज्योति जगावन

धम ज्ञान आनद दान की, औपध भव भय हर दधान की ।
 ममता मृत्यु जम अज्ञान की, त्रिविध ताप कलिकलुष नशावन ।

धूप दीप कपूर सजाकर, फल नैवद्य सदादर लाकर
 हरि पूजा सुख की रनाकर, करो आगती धीर वधावन ।

(भारती श्री गीता जी की)

श्री भगवद्गीता की भारती, श्रेष्ठज्ञान की मधुर भारती । डेर प्रवृत्ति जान अजु न का दी हा, निवृत्ति जान ऋषि मुनि सुख की हा ॥
 अतदर्शी सुधारस ची हा, उभयलोक व्यवहार भारती ।
 देव असुर सम्पत्ति की वानी, कृष्णचन्द्र न सरस बखानी ॥
 व्यासदेव से सजय जानी, वही भूप धृतराष्ट्र पा-रति”
 कर्मयोग का द्विविध जान है, रागि विरागी का निधान है ।
 पालत जिनका सदामान है कलिकल्मष का नित्य टारती ॥
 विजय विभूति मुक्ति ज्ञानकी, त्याग सत्य भक्ति सोपान की ।
 देती दया कृपा निधान की, तम अघ क्लेश विश्व का जारती ॥
 धूपदीप कपूर अलाकृत, फल नेवद्य सभक्ति भकृत ।
 “वैद्य हरि” श्री कृष्ण सुमानित, नीराजन मनदोष गारती ॥

(प्राथना भारती वजरग बली की)

हनुमान बली मन मन्दिर म नित प्राय के ज्योति जगा देना ।
 तेरा ही एक सहारा है साकट को दूर भगा देना ॥ डेर ॥
 घर भभट की आधि व्याधि मे नित हम फसते जाते है ।
 सतिशिक्षा विद्या ब्रह्मचय देकर के घोर बधा देना ॥ हनु
 तेज ओज बल सुमति मुझे दो नेहराम म नित नूतन ॥
 सीय शक्ति समेत सदा नित हो यही ध्यान मे वीर बिठा देना ॥ हनु
 बलशाली आपका नाम बडा साकट शक्ति कलियुग की लगी ॥
 मृत्यु से पहले महावीर साजीवन राम पिला देना ॥ हनु
 किय दशन तुलसी साधु ने रामधनी के तेरी कृपा ।
 वैद्य हरि म ब्रह्मचय बल सुमति स्वस्थ बना देना ॥ हनु
 यह धूप दीप भारती मोदक सेवा मे अणु है स्वामी ।
 सजीवन पर्वत महागदा प्रिय वेप वीर दिखला देना ॥ हनु

(हनुमत् स्तुति)

जय जय अजनि सुत हनुमाना हरहु मो० मद मम अभिमाना ॥
 केशरी नन्दन वायुपियारे गिरिमैना कहि प्रेम प्रचारे ॥
 राम हृदय धीरज सीता के लखन शक्ति हरि, शेष निशाके ॥
 करनि गदा गिरी इठतर धारे यातु घन रणु भटहु मारे ॥

प्रतिबन्ध घाम स्वर्णवत देहा रामलघन सिय चरण सनहा ।
 जानी गुणी प्रिय दूतराम के दहन अगम अधनीच काम रु ॥
 साधक कपि सुग्रीव ईश क मित्र बना हर दुख भीषण ।
 अहिरावण त्रि रामलघन वी, वाली बनी तब दनुज भसन वी ॥
 रामनयन कधहु ले काली मारे दनज पठी पाताली ॥
 मोदक ले नत मस्तरु 'हरि' है अजनि सुत मम जन्म सुधरि है ॥

आरती श्री हनुमानजी की

ॐ अजनी सुत जय हनुमत वीर-दु ख दरिद्र और हरत पीरा । टर
 केशरी वीर रूपि की सेवा, सुत मागा सम भारत देवा ।
 रण सुग्रीव की मना खवा, अमुर पन्नारे महारण धीरा ॥
 राम लघन जब बन पगु धारा सीता हरण दु खित भू भारा ।
 वानर पति सह मैत्री चार, वाली पछारा एक ही तीरा ॥
 वदही खोजन में लागे गिरिपर पगु धर लका भागे ।
 मूदरी घर सीता के आगे लक दहन कर कूदे नीरा ॥
 सीता सुधि चूडामणि लाय-अगणित वानर प्राण प्रचाय ।
 राम सुग्रीवहु धीर बघाये-उपवन हृष भरित ज्यो कीरा ॥
 नक्षमण को जब अक्ति लागी, वाणी सुपेण सजीवन मागी ।
 लाये राम कृपा से सुभागी प्राण वचाय सुवन समीरा ॥
 भूत पिशाच रु दुष्ट दलन के हरने हारं पाप खलन क ।
 ब्रह्मचय गुण पात चलन के अोज तेज सुमति बल धीरा ॥
 राम सियासे परम पियारे, अहिरावण पाताल पछारे ।
 सुरमा लकिनी अक्षय मारे, रावण कु भकरण मन भीरा ॥
 जह राघव जय वानर पति की, बार बार कही लखण जती की ।
 कृपा पाई जय सीता पति की हृदय दिवस निशि प्रेम अधीरा ॥
 धूप दीप कपूर सराधा, मीठा मोदक सदा चढाया ।
 ध्वजा जनउ गल पहनाया, केशर लाल लगोट का धीरा ॥
 'वद्य हरि' हिय मानस फूले लख मारुत उर पीत दुकूल
 राम भक्ति हिय लता सुमूल चरण कमल म प्रेम गभारा ॥

पवन सुत मंदिर आठवा ि

आरती श्री घन्वन्तरि भगवान की

जय श्री घन्वन्तरि आयुपति ।
 दाता विश्व स्वास्थ्य अरु समति ॥ टर
 अमृत कुम्भ कर ले अवतरिहै, जन कल्याण मनुज तनुवरी हैं ।
 वद आयु पावन सुरसरि है, बही भारत धारा अविरल गति ॥
 ररना कर मथन से निकसे, जीवन बूटी कर मे विकसे ।
 श्री बत्साक मणि तन हुलसे सौम्यानन तव पद हो मम रति ॥
 शल्य शास्त्र अरु आयु प्रवतक, गति क्रियात्मक सदा विवधक ।
 फिर आआ जग वैद्य मुनतक, कभी न हो वैद्यक की अवनति ॥
 जिस ही देश का जो हो प्राणी, औषध हित कर वही बरवानी ।
 ऋषि चक्र सुश्रुत की वानी, सबको देवो प्रभु विमलमति ॥
 विघ्न हमारे ईश हटाओ, कायशल्य सब हम सिवाओ ।
 भारत जन मन हिय मे आओ, शीघ्र हरो भिषजों की विपति ॥
 भूत दयामन पर उपकारा, और रसायन सद आचारा ।
 सच्ची पूजा हो ससारा, दो बरदान कभी न करू क्षति ॥
 धूप दीप कपूर आरती, घर नैवेद्य सुगाई भारती ।
 भिषग् जगत के कलुष जारती, 'वद्य हरि जग जीव दु ख हति ॥

आरती श्री गोमाता की

जय जग पालक जय गोमाता संवा अमृत जीवन पाता ।
 तरुखा उपजाती पचामृत ईख मधु पय और दधि घृत ॥
 इह लोक परलोक स्वाथ सब, पाते है हम कलियुग मे अब ।
 यन विवाह रसायन सबही, गोरस से बनते है अब ही ॥
 धम धय अरु मोक्ष काम की सिद्धि श्री देती सब धाम की ।
 धुघातुरा भी पय मा देती रोगी की व्याधि हर लेती ॥
 भोली सीधी मातु हमारी, सब जीवो की प्राण पियारी ।
 बछड़े उसके खेती करने, धाय सुघन से जग को भरते ॥
 धेनु दह सब देव विराजे प्रात कग्हु दशन दु ख मात्रे ।
 उभय लोक गो तारन हारी कल्पतरु सम करत रखारी ॥
 धेनु दान री महिमा भारी, विष्णु लोक मे मुख सचारी ।
 गोपालक श्री कृष्ण बहाये, चतुर्विंशति कला धराये ॥
 मुक्ति परम पद देती माता भव सागर तारती ।

आयु सुमति भारोग्य प्रदाता सुर मानव मोभाग्य विधाता ॥
 अोज तेज सुख मंगलकारी, वासुदेव की प्रिय कपिला री ।
 दुःख दय दारिद्र्य नशावनी, प्रथिल लोकप्रिय तारनी पावनी ॥
 हिंदु यवन सभी सुत्र दाई दुग्ध मधुर सब प्यारती माई ।
 'वैद्य हरि पूजहु नित जननी प्राधि ध्याधि प्राणी वी हननी ॥
 धूप दीप नवेद्य सजामो, गोमाता की भारती गामो ।
 यदि जगत म चाहो जीवन, दो गुवार भर पट र सीवन ॥
 सुख आयु जग म तुम पाओ । गोवध रोका यश फैलाओ ।
 गो मेवा क फल स फूँतो एक गाय रखना ना भूना ॥
 गोलोक भवन नवा विश्राम

भारती श्री बद्रीनारायण भगवान की

जय बद्रीनारायण प्रभुवर शश्व चक्र शोभित सुन्दर कर ।
 गदा पद्म मणि मुकुट विराजे दशन से नित दारिद्र्य भागे ॥
 मृगमद केशर तिलक भाल है गल सोहे वजन्ती माल है ।
 कुडल कण भृकुटि सुन्दर है कमल नयन मुख छविपद कर है ॥
 ब्रह्मा शेष महेश र शारदा धरत ध्यान गणपति मुनि नारद ।
 वरुण चन्द्र अमरादिक दवा धूप दीप से करते सेवा ॥
 सिद्ध मुनि जय जयति उचारे कमलाराणी चमर प्रचारे ।
 किन्नर अप्सर अरु गधर्वा जयति ईश गावत है सर्वा ॥
 शीतल मारुत गगाधारा बहती हृषदा नित्य अपारा ।
 मंदिर शोभा वनक छवि है । राजत हिम काति अरु रवि है ॥
 धूप दीप नवेद्य अखडा पूजहु लोकाेश्वर ब्रह्माण्डा ।
 'वैद्य हरि' नित चरण कमल म धरत माय प्रिय रूप विमल म ॥
 सुख सम्पति आनन्द के दाता बद्रीनाथ प्रभु कीमल गाता ।
 विश्वम्भर रक्षक है जग के दीनदयालु दशक मग के ॥

सूय प्रार्थना

जय दिनेश तयी मूर्ति दिवाकर गहन निशापु अखिल प्रभाकर ।
 अघतम हारिणी रश्मि सोहती छवि सप्त ह्य रथ अचरोहति ॥

अण्डाकार सुतेज विराजे किरणोत्थित जल धन नभ गाजे ।
 तेरी कृपा सुवर्षा भवति वसुधा पुष्पित फलती रहती ॥
 विधि हरि हर के हो तुम रूपा अखिल लोक भूपति के भूपा ।
 ईश भक्ति हिय कमल प्रकाशा सुमतिकी की की पूरी आशा ॥
 विश्वारोग्य के हो घ वत्तिरि लोक नयन हर दरिद कृपा करि ।
 जग दु ख नाशक भवहि कल्पतरु मन मराल मम मान सरोवर ॥
 विश्वम्भर प्रत्यक्ष सुदेवा सब ब्रह्माण्ड करहि तव सेवा ।
 सध्या प्रात 'हरि' कर जोरे खडा एक पग दशन तोरे ॥

भगवती गंगा स्तुति

जय कलि कल्मष नाशिनी गंगा जग पावन तव बहती तरंगा ।
 मरुत बाहिनी पाप टारिणी जीव सजीवनी मृत उदारिणी ॥
 शान्तनु प्रिया जय जयतु सुरसरि हरहि अघज दु ख जेहि मनुज करि ।
 शकर जटा मध्य तव धारा, अखिल लोक यम नास उवारा ॥
 वागन चरण सुपावन सलिल त्रिविध ताप हर प्राणियु अखिन ।
 पाँष्ठ सहस्र सुत भूप सगर के तर भागीरथ कृपा डगर के ॥
 तव सलिले मज्जन जे करि है जम जम भव बाधा जरि ह ।
 विमल अनूपा तव महिमा है कलि गुण गौरव सुत गरिमा ह ॥
 मजु रूप राकेज उजारी कुमति निशा की रम्य प्रजागरी ।
 पावन पयसि 'वैद्य हरि' तोरे तारहु विनती करत कर जोरे ॥

आरता श्री भगवती गंगा जी की

ॐ जय गंगा माता ।

कनिमलकल्मषनाशिनी तू जग की आता ॥ १ ॥

मृत्यु लोक म भक्त भागीरथ माता भागी ।

पुत्र मार के तार तू माहिमा पायी ॥

मट्टहाम भावन पद सु निरुमी शार शार ।

भागीरथ नून प्रायना घागी श्री गिर ईश ॥

पावन तव त्रय पुत्र पुत्रा पावन जरे ।

जीवती तू मरति हाय जन पार ॥

यन श्री धाम निट त्रय का शिवाय टरे क डार ।

जन मरिना नर कान्ठ नन्दन इन नरार ॥

त्रिभुवन तारिणी पूज्य गुरेश्वरी महामोद कारी ।
शातनु की महाराणी भीष्म की महतारी ॥

गिरि तनया तू विश्व विनादिनी विश्वभरी माता ।
पालन पोषण जल स सुख मंगलदाता ॥

अमृत धारिणी सब दुःख टारिणी नाशिना मोहसदा ।
वासिनी अमर लोक की देती मोक्ष मुदा ॥

अन्तकाल जन भस्मीभूत हो गिरत तब धारा ।
जीवित मृत उद्धरती यथा अपरम्पारा ॥

ले धन सार गंध दीपक से अरु फूलन माला ।
भक्ति प्रेम नवद्य से गल भरण डाला ॥

मकर वाहिनी श्रीगंगा की विनय स्तुति माई ।
'वद्य हरि' कर बाधे नित हिय हर्षाई ॥

आरती भगवती यमुनाजी की

जय रवि तनया यमुना माता पाप नाशिनी श्यामल गाता ।
ब्रज मडल देहली निवामनी पावन रूप द्वारिका भासिनी ॥

कलिकल्प मज्जन से टारिणी ।
दुःख दय भव बाधा हारिणी ॥
मज्जुल निमल तब जल भाता ।
सुख समृद्धि आनन्द की दाता ॥

जय कालिंदी मोक्ष प्रदाता तब सवा प्रभु पद मन भाता ।
भस्मीभूत गिरे तब धारा बडभागी पर लोक सुधारा ॥

धूप दीप कपूर आरती ।
दान सुफल नवद्य भारती ॥
पुष्पाञ्जली तब पाद सरोवर ।
'हरि' नमत नित सुभग मनोहर ॥

वृष्ण जन्म थली भाग्यशालिनी जीवात्मा हस की मुक्तामनी ।

भोग आरती (मानस या प्रत्यक्ष)

राधा गोविन्द (नित)भोग लगायो । राम रमापति म चित लायो ।
माखन मिथ्री द्राक्षा मेवा । मोदक पट रस करो क्लेवा ॥
पचामृत प्रभु प्रेम से लायो । पीवो विश्वपति मम मन भायो ।

नित प्रसन प्रभु भोजन कीजे । शेष प्रसाद दाम को दीजे ।
 ले गगाजल रूप माधुरी । प्याई हरि रस सदा हृष भरी ॥
 भोग भारती विश्वम्बरी की । सहिन पूज्य श्री विश्वम्बर की ।
 मत्त बढ़ल प्रभु सदा हमारे । नर नारी क सब दुख टारे ॥
 मानस या प्रत्यक्ष भोग की । बापाठारिनी सभी रोग की ।
 धूप दीप कपूर भारती । पुष्प फलिनी नवैद्य पा-रति ।
 प्रेम सहित 'हरि जो नित गाव । तब घर सब मंगल छाव ॥

दोहा

राम-कृष्ण शिव नाम की महिमा हिय मन धार ।
 रमना तू याती रहो । यही जीव का सार ॥

कीर्तन

श्री विष्णु-शिव-रमा-पार्वती, राम-कृष्ण सीता राधा रति ।
 विष्णु-लक्ष्मी-श्री शिव-पार्वती, सीता राम राधा कृष्ण गति ॥
 राम ही एक सहारा है

सुतमित दारा वैद्य-इन्दिरा करते सदा भलाई है ।
 सब उपाय कर अफलित होत हिय मन काई छाई है ॥
 कर्म देह जनित जीवा की आधि व्याधि हुलसाई है ।
 निरा धार सब जग के प्राणी एक ही राम सहाई है ॥
 नख शिख श्याम मधुर दिखलात हैं ।

मधुर नयन मुख-नासा-मधुरा बाणी मधुरा श्याम किशोर ।
 मधुर कपोल मधुर गडस्यल चिबुक मधुर है नित चितचौर ॥
 मस्तक मुकुट सलाट मधुर है शृकुटि मोहिनी प्रिय हित मोर ।
 ग्रीवा कठ मधुर वक्षस्यल स्कन्ध माधुरी लख कर जोर ॥
 मधुर हार नाभि स्तन मुष्टु बनी उदर की मुन्दर रेख ।
 कटि पीताम्बर हसन मधुर है चाल माधुरी रम्य सुभेख ॥
 चणो मधुरा टढी ठहरनिबानी देखनि से रहे देख ।
 'हरि' याछावर श्याम माधुरी राधा कृष्ण सहित है लेख ॥

भारती भगवती तुलसी महाराणो की
 विष्णु प्रिया तुलसी की भारती-रोग दुःख दारिद्र्य
 कार्तिक मास पूजने वाली, हरि प्रिया सब मिलके

श्री परमात्मने नमः
पूज्य गणेशादि समस्त देवताओं की प्रार्थना आत्म
कल्याण के लिए

गणेश प्राथना

ॐ गजानन मृत गणादि सेवित ।

वपित्थ जम्बू फल चारु भक्षणम् ।

उमासुत शोक विनाश कारक ॥

नमामि विघ्नश्वर पाद पकजम् ।

श्री विष्णु भगवान की प्रार्थना भगवत् गीता

शान्ताकार भुजग शयन पद्मनाभ सुरेश

विश्वाधार गगन सदृश मेघ वर्ण गुभागम् ॥

लक्ष्मीकान्त कमल नयन योगिभिर्ध्यानमय्य ॥

वन्द विष्णु भवभयहर सब लोककनाथम् ॥

श्रीशंकर भगवान प्राथना तुलसी कृत रामायण

यस्याङ्गे च विभाति भूधर मुता देवापगा मस्तके ।

भाले बाल विधुगले च गरल यस्योरसि व्यालराट ।

सोऽथ भूति विभूषण सुरवर सर्वाधिप सवदा

शर्णा सवगत शिव शशिनिभ श्रीशंकर पातुमाम ॥

श्री जगदम्बा प्राथना दुर्गासप्तशती

सब मङ्गल माड लग्य शिवे सर्वाय साधिके ॥

शरण्ये त्रयम्बक गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥

शरणागत दीनात परिश्रान परायणे ॥

सवस्यात्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तुते ॥

श्री कृष्णप्राथना भगवद् गीता—श्रीमद्भागवत

वसुदेव सुत देव कस चाणूर मदनम् देवकी परमान द कृष्ण वन्दे जगद्गुरुम्
त्वमादिदेव पुरुषपुराण स्त्वमस्य विश्वस्य पर निधानम् ।

वेत्तासि वैद्य च पर च घाम त्वया तत विश्वमनत रूप ॥

यत्र योगेश्वर कृष्णो यत्र पार्थो धनुधर ॥

तत्र श्रीविजयो भूतिध्रुवा नीतिर्मतिमम् ।



नमो भगवते तुभ्य वासुदेवाय विष्णवे

पुरुषायादि बीजाय पूरा बोधाय ते नम ॥



श्री जगदम्बा करणी माता की जय

श्री वीकानेर राज्य के परम प्रतापी-यशस्वी महाराजा
श्री गगारिंह जी साहब बहादुर काल का वश प्रसशा
परिचयएव वणन

भारत वीकानेर राज्य म गगारिंह भूपति कहलाय ।
देवी के थे परम भक्त वे तेज शीघ्र प्रतिभा मुखछाये ॥
वष पचास राज्य कर उत्तम स्वण जयति उत्सव भाये ।
इसी राज्य म रत्न नगर के वँच हरि न हरि गुण गाय ॥
बहुत शताधिक विप्रशाभते जूनागड शिववाडी आये ।
गुद्ध वस्त्र भोजन र दक्षिणा लकर सदा हिय हर्पाय ॥
आशीर्वाद ईश दुर्गा का करणी माता भक्त कहाय ।
तुरत बुद्धि तेजस्वी प्रतिभा विप्र भक्त महामहिमा छाय ॥
अपने राज्य मे गगनहर ला सायक गगारिंह कहाय ।
मुखी राज्य सब प्रजाजनो स नितनित नमनन आदर पाय ॥
"याय करन मे प्रथम यशस्वी बडे बडे यामानय जाय ।
"याय घम रूढ शासन पट्टे थे गौर वर्ण आभा लपटाय ॥
आदू लमिह हूए तिनक मुत स्वतंत्र भारत न गुगुगाय ।
तिनके आत्मज करणी सिंह न शाय शक्ति व गुगुमनभाय ।
गगारिंह के शीघ्र तेज म अमर यशस्वा वश फनाय ॥
गग नहर की सदा अमरता जन गुण युग युग जानै आन ।
स्वतंत्र भारत वीकानेर क करणीसिंह भूपति मन पाय ॥
शासन पट्टता इश्यवधिता जन सेवा म चित्त वाच ।
सदा विजय की ध्वज फहराके निरय दम्बा जन 
"वीच हरि" यह प्रजा प्रेम का दृग्मन निग्म 

श्री शिवशरणम्
ललक परिचय

गोड वसिष्ठ के बग म ब्राह्मण चन्द्र किशोर चुलेट कहायो ।
डू गरराम हुए तिनके सुत सहिन जनक शिव प्रेम सुहायो ॥
उनक सुत सुधी रामलाल न शकर अच्युत पद चित लाया ।
वय हरिता क आत्मज हो विश्वपति का प्रिय गुण गायो ॥
द्वि सहस्र उत्तर एकादश सम्बत-दिनकर वासर आयो ।
चत गुद्धि हनुमान जनम दिन प्यारी पूरणिमा दिन भायो ॥
राम-कृष्ण-रति-दाता-आरती लिखक ह्य घणोमन भाया ।
हरि आनंद अमर नित वधक हिय म नव नव सदा सबाया ॥
वेद्य हरि के रामलाल पिनु प्रिय वादिनी भार्या-रति है ।
पुत्र सुशील श्री कृष्णदत्त है जिनकीपिनु आज्ञा मति है ॥
सुन रमेश सधु पुत्री शारदा प्रेम चरण पद कमलापति है ।
औरहु की नही जानत हरि तो हम सजकी प्रभु चरण गति है ॥
राम-कृष्ण-रति-दाता-आरती-पिता पुत्र पत्नी स्मृति है ।
अनुराग सदा चरणन निशिदिन हि ईश्वर मूरति हिय बिलसति है ॥
बडे भाग्य प्रभु कृपा घनेरी से ही मिलती परम प्रीति है ।
वेद्य हरि बलिहारी शिव पद रज घर हृग धय आकृति है ॥

भारत बीकानेर म गाव है रतन नगर ॥

शशव से हरि विप्रके पाद प्रेम हरि हर ॥

सर्वोपि सुखिन सतु सर्वोसतु निरामया ।

सर्वोभद्राणि पश्यतु मा कश्चित दुःख माप्नुयात् ॥

शांति शांति शुभ शांति भवतु

मिति फाल्गुन कृष्ण 12

शनिवार स 2038

प-हरिप्रसाद शर्मा आयुर्वेदाचार्य

रतन नगर बीकानेर वास्तव्य

अधुना श्री गगानगर (राजस्थान)

श्री विश्वेश्वरी भवन एकादश विधाम

श्री कृष्णापण मस्तु

सम्पूर्ण

9680

